विक्रम संवत् 2080 ▪ कार्तिक मास/अगहन मार्गशीर्ष(9) ▪ 01 नवम्बर 2023 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सभी पाठकों को
दीपावली की
शुभकामनाएँ

मोदी की गारंटी है
मध्य प्रदेश विकास में सबसे ऊपर आएगा

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वीरांगना रानी दुर्गावती को पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विजय घाट पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राजघाट पर महात्मा गांधी जी की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने गांधी जयंती पर खादी के कपड़े खरीदे।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

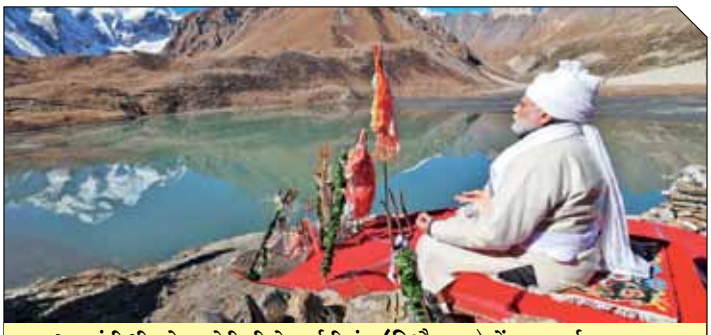

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पार्वती कुंड (पिथौरागढ़) में पूजा अर्चना और दर्शन किये।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विशेष स्वच्छता कार्यक्रम 'एक तारीख, एक घंटा, एक साथ' में भाग लिया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने महा सप्तमी के अवसर पर पूजा-अर्चना की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- डबल इंजन सरकार जरूरी है

कवर स्टोरी 05

- मोदी की गारंटी है- मध्य प्रदेश विकास में सबसे ऊपर आएगा

- **डबल इंजन सरकार :** 08
  - मध्यप्रदेश में डबल इंजन सरकार चाहिए...
- **विकास आगे बढ़ाना है :** 10
  - डबल इंजन को दिया आपका हर वोट, एमपी को टॉप-3 में पहुंचाएगा
- **विकसित म.प्र. - शक्तिशाली भारत :** 12
  - मोदी जी के नेतृत्व में शक्तिशाली भारत का निर्माण...
- **समृद्ध मध्य प्रदेश :** 13
  - केन-बेतवा लिंक परियोजना बुंदेलखंड की युगांतकारी...
- **एक भारत-श्रेष्ठ भारत :** 15
  - विजयादशमी बुराई पर राष्ट्र भक्ति की विजय का पर्व...
- **म.प्र. मोदी के साथ :** 17
  - आपका एक वोट लोकतंत्र को मजबूत करने वाला वोट है...
- **विकास और गरीब कल्याण :** 20
  - कमल का फूल ही हमारा परमानेंट उम्मीदवार...
- **राम मंदिर निर्माण, बहुत बड़ा सौभाग्य :** 21
  - जगद्गुरू रामभद्राचार्य जी की भूमिका बहुत बड़ी...
- **अमर राष्ट्र :** 23
  - भारत के विशिष्ट विचार व दृष्टि के कारण संपूर्ण विश्व के चिंतन...
- **संकल्प से सिद्धि :** 28
  - रोजगार मेले युवाओं के प्रति हमारे संकल्प का प्रमाण...
- **मन की बात :** 30
  - लोकल के लिए वोकल बनें...
- **आलेख :** 33
  - गांधी के उत्तराधिकारी नाम से नहीं कर्म से तय होंगे...
- **सपने व संकल्प :** 35
  - भारत सफलता की जिस ऊंचाई पर है, वो अभूतपूर्व है...
- **जयंती :** 37
  - बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक...
  - प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री रानी लक्ष्मीबाई...
- **पुण्यतिथि :** 39
  - लाला लाजपत राय, जिनका बलिदान, ब्रिटिश शासक के ताबूत...
  - सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले...
- **विचार प्रवाह :** 41
  - कांग्रेस बनाम जनसंघ...

मुख्य व्रत-त्यौहार

1. करवा, गणेश चतुर्थी व्रत 3. स्कंद षष्ठी व्रत 5. अहोई अष्टमी व्रत 9. रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी 10. प्रदोष व्रत, धनतेरस 11. रूप, शिव चतुर्दशी व्रत, दक्षिणी दीपावली 12. दीपावली, केदार गौरी व्रत 13. स्ना. दा. श्रा. सोमवती अमावस 14. अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, गौ क्रीड़ा, बलि पूजा, चंद्रदर्शन 15. भाई दोज, यम द्वितीया 17. विनायकी चतुर्थी व्रत 18. पांडव पंचमी 19. सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ 20. गोपाष्टमी 21. अक्षय (आंवला) नवमी 23. देवउठनी (प्रबोधिनी) ग्यारस 24. प्रदोष व्रत, चातुर्मास समाप्त 26. बैकुण्ठ चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा 27. स्नानदान कार्तिक पूर्णिमा 30. गणेश चतुर्थी व्रत

मुख्य जयंती-दिवस

1. म. प्र. छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस 12. स्वामी दयानंद निर्वाणोत्सव 13. हिंगोट युद्ध गौतमपुरा गाँव 14. बाल दिवस 17. लाला लाजपत राय बलिदान दिवस 19. संत जलाराम बापा, रानी लक्ष्मीबाई जयंती 22. वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि 23. सत्य साईं, कवि कालिदास जयंती, श्री खाटू श्याम अवतरण दिवस 26. डॉ. हरिसिंह गौर ज., संविधान दि. 27. नर्मदा परिक्रमा भेड़ाघाट जबलपुर

वर्ष-55, अंक : 09, भोपाल, नवम्बर 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

डबल इंजन सरकार जरूरी है

मोदी जी की मजबूती देश की मजबूती है। देश की सीमाओं पर शांति की गारंटी है। आतंकवाद पर नकेल की गारंटी है। युवाओं के उन्नत भविष्य की गारंटी है। महिला सम्मान, महिला सुरक्षा की गारंटी है। देश की तिजोरी की सुरक्षा की गारंटी है। पूरे विश्व में भारतीयों के मान-सम्मान की गारंटी है। भारतीय विरासत को सहेजने-सँवरने की गारंटी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विचार कि ''मध्य प्रदेश के लिए ये बहुत ही महत्वपूर्ण समय है'' बिल्कुल ही वर्तमान परिस्थिति पर अनुभव, दूरदृष्टि व परिपक्वता से भरे हुए विचार हैं। क्योंकि आजादी के बाद से अल्प समय को छोड़ कर लगातार एक ही दल का शासन म. प्र. में बना रहा। भाजपा के शासन के पूर्व का म. प्र. व वर्तमान के मध्य प्रदेश की स्थिती का आंकलन,वो ही कर सकता है जिसने दोनों सरकारों को व शासन व्यवस्था को देखा, परखा है। जैसे 2014 के बाद की भारत सरकार व 2014 से पहले की भारत सरकार। 2014 से पहले के समाचारों की हेड लाइन-सरकार के घोटालों, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, तुष्टीकरण व भारत की सीमाओं पर होने वाले आतंकवादी हमलों के सामने गणेश परिक्रमा करती असहाय व हाथ पर हाथ रखी सरकार के कारण उत्पन्न निराशा व अंधकार से होती थी।

बड़े-भारी वित्त विशेषज्ञ प्रधानमंत्री जी कहते थे ''पैसे पेड़ पर नहीं लगते''। पैसे पेड़ पर लगते हैं- यह बात तो कभी किसी ने कही नहीं। वित्त विशेषज्ञ प्रधानमंत्री जी से उम्मीद बेहतर वित्त प्रबंधन व देश की वित्तीय हालात को सुधारने की ही हो सकती है पर जब प्रधानमंत्री जी अपने आप को उत्तरदायित्व से मुक्त कर लें तो आम जनता की क्या स्थिती होगी, जनता के पास अंधकार के अलावा कुछ नहीं होगा। 2014 के बाद भी वही भारत है, वही जनता है पर सरकार बदली तो आज सब कुछ बदल गया। 10वें पायदान पर खड़ा भारत आज विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और मोदी जी की गारंटी है कि अगले कार्यकाल में भारत विश्व की 3री सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन कर रहेगा। पूरा विश्व भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है। विश्व के दरवाजों पर भारत अब सहायता मांगने नहीं, सहायता पहुँचाने में देर नहीं करता। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, तुष्टीकरण से मुक्त शासन व्यवस्था बनाने में कामयाब रहा।

म. प्र. में भाजपा की डबल इंजन सरकार के कारण केन्द्र सरकार के कार्यक्रमों, योजनाओं को लागू करवा पाना सम्भव हो पाता है। मोदी जी की विकास परियोजनाऐं धरातल पर मूर्तरूप ले पाती हैं। विकास को गति मिलती है। कानून का राज कायम रहता है। प्रदेश की सरकार का केन्द्र का सहयोगी होना उतना ही जरूरी है जितना केन्द्र की सरकार का प्रदेश की सरकार का सहयोगी होना।

विरोधाभास राजनैतिक लाभ के लिए उपयोगी रहता है पर इसका खामियाजा प्रदेश की जनता को भुगतना पड़ता है। किसानों को भुगतना पड़ता है, बेरोजगारों को भुगतना पड़ता है, गरीबों को भुगतना पड़ता है, दलित, गरीब, पिछड़ो को भुगतना पड़ता है। विकास की गति का पहिया रूक जाता है। प्रदेश के साथ-साथ देश भी पीछे चला जाता है।

आम जनता की भलाई के लिए, आम जनता के हक की रक्षा के लिए भाजपा सरकार ने जनधन, आधार व मोबाइल की त्रिशक्ति की मदद से भ्रष्ट व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है- तो कट मनी वालों का दर्द समझ में आता है। महिला सम्मान को पहली प्राथमिकता बनाया है, महिलाओं को- देश की आधी आबादी को लोकसभा, राज्य विधानसभाओं में आरक्षण दिया, मुस्लिम बहनों की गर्दन पर सदैव विराजमान रहने वाली तीन तलाक की तलवार को हटा कर हमेशा-हमेशा के लिए तोड़ कर दफन कर दिया,रसोई से धुऐं को मुक्त किया, जाति, धर्म, राज्य, लिंग के संकीर्ण भेदभाव से ऊपर उठ कर सभी गरीबों को बेहतर व फ्री इलाज, रहने के लिए पक्का आवास, घर पर शुद्ध पेयजल, इज्जत घर, बिजली, स्कूल की शानदार सुविधा देकर जीवन स्तर को उठाने का प्रयास किया है और 13.5 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने में शानदार सफलता पाई है। पर सरकार के इस प्रयास से कई लोगों की गरीबों, शोषितों की आपदा में अपना राजनैतिक अवसर समाप्त हो जाने के कारण दुखी होना समझ में आता है।

सोचिए, जिस तेज गति से देश- प्रदेश प्रगति कर रहा है, यह गति अगर बनी रहती है तो प्रदेश ही नहीं देश भी सफलता के नए पायदानों पर चढ़ता चला जायेगा। देश की उन्नति बिना प्रदेशों की उन्नति के सम्भव नहीं है। देश को आगे लाना है तो प्रदेश को विकसित बनाना पड़ेगा। व्यक्तिगत इच्छा-अनिच्छा हो सकती है पर जब मुद्दा देश की प्रगति से जुड़ा हो तो सभी को एक साथ-एक स्वर में देश को पहले चुनना होगा। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व प्रदेश को मजबूत करना है। प्रदेश को आगे बढ़ाना है। प्रदेश में विकास की गति कम नहीं होने देना है।

मोदी जी की मजबूती देश की मजबूती है। देश की सीमाओं पर शांति की गारंटी है। आतंकवाद पर नकेल की गारंटी है। युवाओं के उन्नत भविष्य की गारंटी है। महिला सम्मान, महिला सुरक्षा की गारंटी है। देश की तिजोरी की सुरक्षा की गारंटी है। पूरे विश्व में भारतीयों के मान-सम्मान की गारंटी है। भारतीय विरासत को सहेजने-सँवरने की गारंटी है। नभ-जल-थल के संरक्षण की गारंटी। स्वच्छ ईधन की गारंटी है। सभी प्रकार के प्रदूषणों से मुक्ति की गारंटी है। नवाचार की गारंटी है। भारत के विश्व गुरू बनने की गारंटी है। वैज्ञानिकों के मान सम्मान की गारंटी है। अभी तो चाँद जीता है बाकी दुनिया जीतने की गारंटी है। भ्रष्टाचार के रास्ते बंद होने की गारंटी है। देश का पैसा देश के लिए खर्च होने की गारंटी है। न्याय मिलने की गारंटी है। कानून व्यवस्था की, कानून के राज्य की गारंटी है। लोकतंत्र के मजबूत होने की गारंटी है। संविधान के रक्षा की गारंटी है। पराधीनता के भाव के मिटने की गारंटी है। भारत माता का परचम सर्वोच्च शिखर पर लहराने की गारंटी है। विकसित भारत की गारंटी है। चुनाव प्रत्याशी नहीं प्रधानमंत्री जी का कमल का फूल लड़ रहा है। प्रधानमंत्री जी के हाथ मजबूत करना सभी की जिम्मेवारी है, कमल का फूल हमारा अपना है।

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

मोदी की गारंटी है मध्य प्रदेश विकास में सबसे ऊपर आएगा

परिवारवाद और भ्रष्टाचार को पालने-पोसने वाले दलों ने आदिवासी समाज के संसाधनों को लूटा

- ''रानी दुर्गावती हमें दूसरों की भलाई के लिए जीना सिखाती हैं और मातृभूमि के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देती हैं''
- ''उज्ज्वला लाभार्थियों के लिए गैस सिलेंडर की कीमतों में 500 रुपये की कमी की गई है''
- ''जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिशक्ति ने भ्रष्ट व्यवस्था को खत्म करने में मदद की''
- ''25 वर्ष से कम आयु वाले युवाओं की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि उनके बच्चे बड़े होकर आने वाले 25 वर्षों में एक विकसित मध्य प्रदेश को देख सकें''
- ''आज भारत का आत्मविश्वास नई ऊंचाई पर है, खेल के मैदान से लेकर खेत-खलिहान तक भारत का झंडा लहरा रहा है''
- ''स्वदेशी की भावना, देश को आगे ले जाने की भावना आज हर जगह उभर रही है''
- ''डबल इंजन की सरकार वंचितों को प्राथमिकता देती है।''

भाजपा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है - अपनी बहनों को धुएं से मुक्त रसोई देना। कुछ लोगों ने research कर कहा है, जब एक मां खाना पकाती है...

...और धुएं वाला चूल्हा है, लकड़ी जलाती है या कोयला जलाती है तो 24 घंटे में खाना पकाने के कारण, उस धुएं में रहने के कारण उसके शरीर में 400 cigarettes का धुआं जाता है।

रानी दुर्गावती का जीवन हमें सर्वजन हिताय की सीख देता है, अपनी जन्मभूमि के लिए कुछ कर गुजरने का हौसला देता है।

दुनिया के किसी देश में रानी दुर्गावती जैसा कोई उनका नायक होता, नायिका होती तो वो देश पूरी दुनिया में उछल-कूद करता। आजादी के बाद हमारे देश में भी यहीं होना चाहिए था लेकिन हमारे महापुरूषों को भुला दिया गया। हमारे इन तेजस्वी, तपस्वी, त्याग और तपस्या की मूर्ति ऐसे महापुरूषों को, ऐसे वीरों को, वीरांगनाओं को भुला दिया गया।

भाजपा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है - अपनी बहनों को धुएं से मुक्त रसोई देना। कुछ लोगों ने research कर कहा है, जब एक मां खाना पकाती है और धुएं वाला चूल्हा है, लकड़ी जलाती है या कोयला जलाती है तो 24 घंटे में खाना पकाने के कारण, उस धुएं में रहने के कारण उसके शरीर में 400 cigarettes का धुआं जाता है। क्या माताओं-बहनों को इस मुसीबत से मुक्ति मिलनी चाहिए की नहीं मिलनी चाहिए? क्या ये काम Congress पहले नहीं कर सकती थी, नहीं किया, उनको माताओं-बहनों की, उनके स्वास्थ्य की, उनकी तबीयत की परवाह नहीं थी।

गरीब परिवार की करोड़ों बहनों को हमने इसीलिए बड़ा अभियान चलाकर उज्जवला का मुफ्त gas connection दिया, वरना पहले तो गैस का एक connection लेना है ना, तो MP के घर चक्कर काटने पड़ते थे। और आपको तो याद है रक्षाबंधन के पर्व पर भाई, बहन को कुछ भेंट देता है। तो रक्षाबंधन के पर्व पर हमारी सरकार ने सभी बहनों के gas cylinder सस्ते कर दिए हैं। उस समय उज्जवला की लाभार्थी बहनों के लिए cylinder 400 रुपए तक सस्ता किया गया। और अब कुछ ही दिनों के बाद दुर्गा पूजा, नवरात्री, दशहरा, दिवाली ये त्यौहार आने वाले हैं। तब ये मोदी सरकार ने उज्जवला का cylinder फिर एक बार 100 रुपए सस्ता कर दिया। यानि उज्जवला की लाभार्थी बहनों के लिए cylinder 500 रुपए सस्ता हुआ है। अब उज्जवला की लाभार्थी मेरी गरीब माताओं-बहनों-बेटियों को गैस का cylinder सिर्फ 600 रुपए में ही मिल जाएगा। सिलेंडरों के बजाय pipe से ही सस्ती गैस रसोई में आए, इसके लिए भी भाजपा सरकार तेज गति से काम कर रही है। इसलिए ही यहां gas pipeline भी बिछाई जा रही हैं। इसका लाभ मध्य प्रदेश के

लाखों परिवारों को होगा।

जो हमारे college में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं हैं, जो हमारे नौजवान साथी हैं, हमारे नौजवान बेटे-बेटियां हैं, उन्हें जरा पुरानी कुछ बातें याद कराना चाहता हूं, 2014 की बात याद करवाऊं, आप देखिए जो आज 20-22 साल के है ना उनको तो शायद पता ही नहीं होगा क्योंकि उस समय वो 8,10,12 साल के होंगे, उनको पता ही नहीं होगा कि मोदी आने से पहले क्या हाल था। तब आए दिन Congress सरकार के हजारों करोड़ रुपए के घोटाले headlines बना करते थे। जो पैसा गरीब पर खर्च होना था, वो पैसा Congress के नेताओं की तिजोरियों में जा रहा था। और मैं तो इन नौजवानों को कहूंगा, वो तो online वाली पीढ़ी है, जरा Google पर जाकर search करेंगे, 2013-14 के अखबारों की जरा headline पढ़ दीजिए, क्या हालत थी देश की।

2014 के बाद जब आपने हमें सेवा करने का मौका दिया तो Congress सरकार की बनाई उन भ्रष्ट व्यवस्थाओं को बदलने का हमने एक अभियान चलाया, उधर भी स्वच्छता अभियान चला दिया। हमने technology का इस्तेमाल करके करीब-करीब 11 करोड़, ये आंकड़ा याद रखोगे? 11 करोड़ फर्जी नामों को हमने सरकारी दफ्तरों से हटाया। कितने, 11 करोड़, ये 11 करोड़ नाम कौन से थे, ये वो नाम थे जिनका कभी जन्म ही नहीं हुआ था। लेकिन सरकारी दफ्तर से खजाना लूटने का रास्ता बन गया था। Congress ने इनका झूठे नाम, फर्जी नाम, कागजी दस्तावेज तैयार कर दिए।

ये मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की कुल आबादी है ना, उससे भी ज्यादा बड़ा आंकड़ा है 11 करोड़। ये 11 करोड़ फर्जी नाम, जो सच्चे गरीब लोग हैं, असली गरीब लोग हैं, उनका हक छीनकर के खजाना लूटने का काम हो रहा था। 2014 में आने के बाद ये मोदी ने सब कुछ साफ कर दिया। ये लोग गुस्सा करते है ना इसका कारण भी यहीं है कि उनकी कटकी बंद हो गई है, commission बंद हो गया है। मोदी ने आकर के सब साफ कर दिया। ना गरीबों का पैसा लुटने दूंगा, ना ही Congress का खजाना, Congress के नेताओं की तिजोरी भरने दूंगा। हमने जनधन-आधार और mobile की ऐसी त्रिशक्ति बनाई कि Congress का भ्रष्टतंत्र तहस-नहस हो गया। आज इस त्रिशक्ति की वजह से ढाई लाख करोड़ रुपए से ज्यादा, जो गलत हाथों में जाते थे, चोरी होते थे, उसको बचाने का काम मोदी ने किया है।

आज गरीबों का पैसा, गरीबों के हित में काम आ रहा है। उज्जवला का cylinder सिर्फ 500 रुपए में देने के लिए केंद्र सरकार आज करोड़ों रुपए खर्च कर रही है। करोड़ों परिवारों को मुफ्त राशन मिले, इस पर भी 3 लाख करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। ये 3 लाख करोड़ रूपए तिजोरी से इसलिए देते है कि कोई मेरी गरीब मां का बच्चा रात को भूखा नहीं सोना चाहिए, गरीब का चूल्हा जलते रहना चाहिए। आयुष्मान योजना के तहत देश के करीब 5 करोड़ परिवारों का मुफ्त इलाज हो चुका है। इसके लिए भी 70 हजार करोड़ रुपए सरकार ने आपके आयुष्मान कार्ड के लिए खर्च किए हैं। किसानों को सस्ता urea मिले, दुनिया में urea की थैली 3 हजार में बिकती है, मोदी 300 से भी कम में देता है और इसलिए खजाने से 8 लाख करोड़ रुपया केंद्र सरकार ने खर्च किया हैं, ताकि मेरे किसानों पर बोझ न पड़े। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत भी ढाई लाख करोड़ रुपए सीधा किसानों के बैंक खाते में जमा किए जा चुके हैं। गरीब परिवारों को पक्का घर देने के लिए भी हमारी सरकार ने 4 लाख करोड़ रुपए खर्च किए हैं, ताकि गरीब को पक्का घर मिले।

ये पूरा पैसा जोड़ेंगे तो आंकड़ा कितना होगा, कितने जीरो लगाने पड़ेंगे, आपको अंदाज आता है, ये Congress वाले इसका हिसाब भी नहीं कर सकते। 2014 से पहले ये जो zero, zero, zero है ना वो सिर्फ घोटालों का पैसा जोड़ने में लग जाता था। अब आप सोचिए Congress के एक प्रधानमंत्री कहते थे कि दिल्ली से एक रूपया भेजते है तो 15 पैसा पहुंचता है, 85 पैसा कोई पंजा घिस लेता था। मैंने जितने रूपये अभी गिनाए, अगर ये रूपये Congress के जमाने में गए होते तो कितनी बड़ी चोरी हुई होती, आप अंदाज लगाऐं। आज गरीबों के लिए इतना पैसा भाजपा सरकार दे रही है।

मध्य प्रदेश के लिए ये बहुत ही महत्वपूर्ण समय है। मध्य प्रदेश, आज एक ऐसे मुहाने पर है, जहां विकास में कोई भी रुकावट, उसके विकास की गति में कोई भी गिरावट 20-25 साल के बाद भी लौटेगी नहीं, सब कुछ तबाह हो जाएगा। और इसलिए विकास की इस गति को रूकने नहीं देना है, अटकने नहीं देना है। ये 25 साल आपके बहुत महत्वपूर्ण है। MP के 25 साल से कम उम्र के साथियों ने तो नया और प्रगति करता हुआ मध्य प्रदेश ही देखा है। अब ये उनकी जिम्मेदारी है कि आने वाले 25 सालों में जब उनके बच्चे युवा होंगे, तब उनके सामने विकसित मध्य प्रदेश हो, समृद्ध मध्य प्रदेश हो, आन-बान-शान वाला मध्य प्रदेश हो। इसके लिए आज ज्यादा मेहनत की जरूरत है। इसके लिए आज सही फैसले की जरूरत है। बीते वर्षों में भाजपा सरकार ने MP को कृषि निर्यात में top पर पहुंचाया है। अब ये भी जरूरी है कि औद्योगिक विकास में भी हमारा MP नंबर वन बनना चाहिए। बीते वर्षों में भारत का रक्षा उत्पादन और रक्षा निर्यात कई गुणा बढ़ा है। इसमें जबलपुर का भी बहुत बड़ा योगदान है। मध्य प्रदेश में defence से जुड़ा सामान बनाने वाली 4 फैक्ट्रियां तो ये हमारे जबलपुर में ही हैं। आज केंद्र सरकार अपनी सेना को Made in India हथियार दे रही है। दुनिया में भारत के रक्षा सामान की demand बढ़ रही है। इससे मध्य प्रदेश को भी बहुत लाभ होने वाला है, यहां रोजगार के हजारों नए मौके बनने वाले हैं।

आज भारत का आत्मविश्वास नई बुलंदी पर है। खेल के मैदान से लेकर खेत-खलिहान तक, भारत का परचम लहरा रहा है। आज भारत के हर युवा को लगता है कि ये समय भारत के युवा का समय है, ये कालखंड भारत के युवा का कालखंड है। युवाओं को जब ऐसे अवसर मिलते हैं, तब विकसित भारत के निर्माण का जज्बा भी बुलंद होता है। तभी भारत G20 जैसे भव्य विश्व आयोजन, इतने गौरव के साथ करा पाता है। तभी भारत का चंद्रयान वहां पहुंचता है, जहां कोई देश नहीं पहुंच पाया। तभी local के लिए vocal होने का मंत्र दूर-सुदूर तक गूंजने लगता है। आप सोच सकते हैं, एक तरफ ये देश चंद्रयान पहुंचता है तो दूसरी तरफ 2 अक्टूबर को गांधी जयंती पर दिल्ली के एक store पर, आप याद कीजिए 2 अक्टूबर को एक दिन में दिल्ली का जो एक खादी भंडार था, डेढ़ करोड़ रुपए से भी ज्यादा खादी बिकी है एक स्टोर में, ये ताकत है देश की। स्वदेशी की ये भावना, देश को आगे बढ़ाने की ये भावना आज चारों-तरफ बढ़ती जा रही है। और इसमें बागडोर संभाली है देश के नौजवानों ने, देश के बेटे-बेटियों ने। तभी भारत के युवा start-up की दुनिया में कमाल कर रहे हैं। तभी भारत स्वच्छ होने का इतना बड़ा संकल्प लेता है। अभी एक अक्टूबर को ही देश ने जो स्वच्छता अभियान चलाया, उसमें 9 लाख से ज्यादा जगहों पर सफाई कार्यक्रम हुए हैं, 9 लाख जगह पर। उस सफाई अभियान में हिस्सा लेने वाली संख्या 9 करोड़ से ज्यादा देशवासी घरों से निकले, और झाड़ू लेकर के देश में सफाई का काम किया, सड़कों की, पार्कों की सफाई कीं। मध्य प्रदेश के लोगों ने, मध्य प्रदेश के युवाओं ने तो और भी कमाल कर दिया है। स्वच्छता के मामले में मध्य प्रदेश को अव्वल नंबर मिले हैं, देश में नंबर एक रहता है मध्य प्रदेश। इसी जज्बे को हमें आगे ले जाना है। और आने वाले 5 सालों में ज्यादा से ज्यादा मामलों में हमें MP को नंबर एक पर रखना है।

जब किसी राजनीतिक दल पर सिर्फ और सिर्फ

अपना स्वार्थ हावी हो जाता है, तो उसकी स्थिति का हम अंदाजा लगा सकते हैं। आज एक तरफ भारत की उपलब्धियों की चर्चा पूरी दुनिया कर रही है। लेकिन ये वही राजनीतिक दल, जिनका सब लुट गया है, सिवाय कुर्सी उनको कुछ दिखता नहीं है, ये अब इस हद तक गए हैं, इस हद तक गए हैं कि भाजपा को गाली देते-देते भारत को ही गाली देना शुरू कर दिया है। आज Digital India अभियान की पूरी दुनिया प्रशंसा कर रही है। लेकिन आप याद करिए, कैसे ये लोग आए दिन Digital India के लिए हमारा मजाक उड़ाते हैं। भारत ने Corona में दुनिया की सबसे प्रभावी vaccine बनाईं। इन लोगों ने अपनी vaccine पर भी सवाल उठाए। और मुझे तो कोई बता रहा था एक नई फिल्म आई है, vaccine पर बनी हुई फिल्म, 'Vaccine War' और दुनिया के लोगों की आखें खुल जाए ऐसे फिल्म हमारे देश में बनी है। जो हमारे देश के वैज्ञानिकों ने कैसा कमाल कर दिया, देश के करोड़ों लोगों की जिंदगी कैसे बचाई, इस पर Vaccine War फिल्म बनी है।

भारत की सेना जो बात करती है, भारत की सेना जो पराक्रम करती है, तो वो लोग उस पर भी सवाल उठाते हैं। इन्हें देश के दुश्मनों की बात, आतंक के आकाओं की बात सही लगती है। देश के सेना के जवानों की बात सही नहीं लगती है। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर पूरे देश ने अमृत महोत्सव मनाया। ये भाजपा का कार्यक्रम तो था नहीं, ये देश का कार्यक्रम था। आजादी, हिन्दुस्तान के हर नागरिक का उत्सव था। लेकिन ये लोग आजादी के अमृतकाल का भी मजाक उड़ाते है। हम आने वाली पीढ़ियों के लिए देश के कोने-कोने में अमृत सरोवर बना रहे हैं, पानी संग्रह का बड़ा अभियान चला रहे है। लेकिन इस काम में भी इन लोगों को दिक्कत हो रही है।

जिस दल ने आजादी के इतने सालों तक देश में सरकारें चलाई, उसने आदिवासी समाज को भी सम्मान नहीं दिया। आजादी से लेकर सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि तक, हमारे आदिवासी समाज की भूमिका बहुत बड़ी रही है। गोंड समाज दुनिया के सबसे बड़े जनजातीय समाज में से एक है। ऐसे में, मैं आपसे एक सवाल करना चाहता हूं। लंबे समय तक जो सत्ता में रहे, उन्होंने आदिवासी समाज के योगदान को राष्ट्रीय पहचान क्यों नहीं दी? इसके लिए देश को भाजपा का ही इंतजार क्यों करना पड़ा? हमारे जो युवा आदिवासी, जब वो पैदा भी नहीं हुए थे, उन्हें ये जरूर जानना चाहिए। उनके पैदा होने से भी पहले श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार ने जनजातीय समाज के लिए अलग मंत्रालय बनाया, अलग बजट दिया। बीते 9 वर्षों

में इस बजट को कई गुणा बढ़ाने का काम ये मोदी की सरकार ने किया है। देश को पहली महिला आदिवासी राष्ट्रपति देने का सौभाग्य भी भाजपा को मिला। भगवान बिरसा मुंडा के जन्म दिवस को जनजातीय गौरव दिवस भी भाजपा सरकार ने घोषित किया। देश के आधुनिकतम रेलवे स्टेशनों में से एक स्टेशन का नाम रानी कमलापति के नाम पर किया गया। पातालपानी स्टेशन अब, जननायक टंट्याभील के नाम से जाना जाता है। और गोंड समाज की प्रेरणा, रानी दुर्गावती जी के नाम पर इतने भव्य, आधुनिक स्मारक का निर्माण हो रहा है। इस संग्रहालय में गोंड संस्कृति, गोंड इतिहास और कला का प्रदर्शन भी होगा। हमारा प्रयास यही है कि आने वाली पीढ़ियां समृद्ध गोंड परंपरा को जान सके। मैं जब दुनिया के नेताओं से मिलता हूं, तो उन्हें गोंड painting भी उपहार में देता हूं। जब वे इस शानदार गोंड कला की प्रशंसा करते हैं, तो मेरा माथा भी गर्व से ऊंचा हो जाता है।

आजादी के बाद दशकों तक जो दल देश में सरकार में बैठा रहा, उसने सिर्फ एक ही काम किया, एक ही परिवार की चरण-वंदना, एक परिवार की चरण-वंदना करने के सिवाय उनको देश की परवाह नहीं थी। देश को आजादी सिर्फ एक परिवार ने नहीं दिलाई थी। देश का विकास भी सिर्फ एक परिवार ने नहीं किया है। ये हमारी सरकार है, जिसने सभी का मान रखा, सम्मान रखा, आदर किया, सभी का ध्यान रखा। ये भाजपा सरकार है, जिसने महू सहित दुनिया भर में डॉक्टर बाबा साहेब आंबेडकर से जुड़े स्थानों को पंचतीर्थ बनाया है। मुझे सागर में संत रविदास जी की स्मारक स्थली के भूमि पूजन का भी अवसर मिला है। ये सामाजिक समरसता और विरासत के प्रति भाजपा सरकार की प्रतिबद्धता को दिखाता है।

परिवारवाद और भ्रष्टाचार को पालने-पोसने वाले दलों ने आदिवासी समाज के संसाधनों को लूटा है। 2014 से पहले सिर्फ 8-10 वन उपजों पर ही MSP दिया जाता था। बाकी वन उपजों को औने-पौने दाम पर कुछ लोग खरीदते थे और आदिवासियों को कुछ नहीं मिलता था। हमने इसको बदला और आज करीब 90 वन उपजों को MSP के दायरे में लाया जा चुका है।

अतीत में हमारे आदिवासी किसानों, हमारे छोटे किसानों की उपज कोदो-कुटकी जैसे मोटे अनाज को भी ज्यादा महत्व नहीं दिया गया। आपने देखा है कि दिल्ली में G20 के लिए दुनिया भर के बड़े-बड़े नेता आए थे, एक से बढ़कर एक बड़े नेता आए थे। उनको भी हमने आपके कोदो-कुटकी से बने पकवान खिलाए थे। भाजपा सरकार आपके कोदो-कुटकी को भी श्री अन्न के रूप में देश-विदेश के बाजारों तक पहुंचाना चाहती है। हमारी कोशिश यही है कि आदिवासी किसानों को, छोटे किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो।

भाजपा की double engine सरकार की प्राथमिकता, वंचितों को वरीयता है। Pipe से पीने का साफ पानी मिले, ये गरीब के स्वास्थ्य और महिलाओं की सुविधा के लिए बहुत जरूरी है। महिलाओं का स्वास्थ्य, हमेशा देश की प्राथमिकता होनी चाहिए थी। लेकिन इसे भी पहले लगातार नजर अंदाज कर दिया गया। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, के माध्यम से लोकसभा, विधानसभा में महिलाओं को उनका हक देने का काम भी भाजपा ने ही किया है। गांव के सामाजिक आर्थिक जीवन में हमारे विश्वकर्मा साथियों का बहुत बड़ा योगदान रहता है। इनको सशक्त करना प्राथमिकता होनी चाहिए थी। लेकिन 13 हजार करोड़ रुपए की पीएम विश्वकर्मा योजना, भाजपा सरकार बनने के बाद हमें उसको लाना पड़ा।

भाजपा सरकार, गरीबों की सरकार है। अपने भ्रष्टाचार और अपने परिवारवाद को आगे बढ़ाने के लिए कुछ लोग भांति-भांति के प्रपंच कर रहे है। लेकिन मोदी की गारंटी है कि- MP विकास में top पर आएगा। ▪

मध्यप्रदेश में डबल इंजन सरकार चाहिए

राम मंदिर निर्माण की बात हो, धारा 370 को हटाने की बात हो, तीन तलाक को समाप्त करने की बात हो, चाहे सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करनी हो, चाहे चंद्रमा पर चंद्रयान भेजना हो...

या नई संसद भवन का निर्माण करना हो या माताओं को एक-तिहाई आरक्षण देना हो, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश का गौरव बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

- मध्यप्रदेश में गांधी परिवार, कमलनाथ परिवार और दिग्विजय बंटाधार परिवार का बोलबाला है-ये तीन परिवार काँग्रेस पार्टी चलाते है और जहां तीन-तिगाड़ा होता है वहां काम बिगड़ जाता है। गांधी परिवार आदेश देती है, कमलनाथ निर्देश देते हैं लेकिन जब गलती होती है तो चांटा बेचारे दिग्विजय के गाल पर थोप देते हैं।
- परिवारवाद थोपने वाली पार्टी कभी देश का भला नहीं कर सकती। पहले सिर्फ दिग्विजय सिंह की सरकार लूट मचाती थी, लेकिन कमलनाथ सरकार में कमलनाथ जी और दिग्विजय सिंह दोनों ने मिलकर लूट मचाई और ढेर सारे भ्रष्टाचार किए।
- भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने बीमारू राज्य मध्यप्रदेश को विकसित राज्य बनाने का काम किया है।
- मोदी जी पूरी दुनिया में भारत का परचम लहरा रहें हैं, मगर कांग्रेस को कुछ नहीं दिखता। जिनके जड़ें भारत से जुड़ी हों, वही देश के विकास को समझ सकते हैं।
- 350 करोड़ का मोजेरबेयर घोटाला, 2400 करोड़ का ऑगस्टा वैस्ट्लैन्ड घोटाला, 600 करोड़- इपको फर्टिलाइजर घोटाला, 25 हजार करोड़-किसान कर्ज माफी का घोटाला, 1178 करोड़-गेहूं बोनस का घोटाला ये सारे घोटाले कमलनाथ से जुड़े हुए हैं, अब वो फिर से मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं।
- मोदी सरकार में आदिवासी समाज कल्याण के लिए कांग्रेस द्वारा आवंटित 29,000 करोड़ की राशि को बढ़ा कर 1 लाख 38 हजार करोड़ कर दिया गया है। मध्य प्रदेश को लगभग 7.5 लाख करोड़ सिर्फ डेवलूशन ग्रांट में और 12 लाख करोड़ के विभिन्न प्रोजेक्ट दिए गए हैं।
- आदिवासी कल्याण के लिए पहले जल, जंगल और जमीन की बात होती थी, लेकिन मोदी सरकार में इसके साथ-साथ उनकी सुरक्षा, उनके सम्मान और समावेशी विकास हो रहा है।
- मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार ने आदिवासी कल्याण के लिए कई कदम उठाये हैं। रानी दुर्गावती स्मारक का निर्माण हुआ, शंकर शाह रघुनाथ शाह की स्मारक स्मृति का काम निर्माणाधीन है और जन नायक टंट्या की स्मृति में खंडवा में विशाल स्मारक बनाने का काम भी हुआ है।
- अगर भाजपा की सरकार में किये गए विकास का 10 प्रतिशत कार्य भी कांग्रेस ने 50 साल में किया है तो कांग्रेस मध्यप्रदेश की जनता को बताए।
- देश की आजादी से लेकर अब तक कांग्रेस पार्टी राम मंदिर निर्माण के मुद्दे को लटकाती, भटकाती, और अटकाती आई है। राहुल बाबा ने कहा था 'मंदिर वहीं बनाएंगे पर तिथि नहीं बताएंगे' अब मंदिर भी बन गया और तिथि भी बता दी, उनको दर्शन करके संतोष मिलेगा।
- वैसे तो हर साल एक दिवाली होती है, लेकिन इस बार मध्य प्रदेश के लोगों को तीन दिवाली मनानी है, एक तो दीपावली के दिन, दूसरी उस दिन, जब मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकार बनेगी, और तीसरी तब, जब आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर में रामलला की स्थापना करेंगे।

मध्य प्रदेश में विकास की इस तेज रफ्तार को बनाये रखने के लिए राज्य की जनता से आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पुनः पूर्ण बहुमत से भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार बनाना चाहिए।

महर्षि वाल्मीकि ने प्रभु श्रीराम के चरित्र व उनकी महिमा को घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से रामायण की रचना की थी।

वैसे तो हर साल एक दिवाली होती है, लेकिन इस बार मध्य प्रदेश के लोगों को तीन दिवाली मनानी है, एक तो दीपावली के दिन, दूसरी उस दिन, जब मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार बनेगी, और तीसरी तब, जब आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर में रामलला की स्थापना करेंगे। जब से देश आजाद हुआ है तब से कांग्रेस पार्टी राम मंदिर के मुद्दे को लटका, भटका और अटका रही थी, लेकिन 2019 के आम चुनाव में मध्यप्रदेश की जनता ने ढेर सारी सीट जिताकर मोदी जी को दूसरी बार प्रधानमंत्री बनाया। परिणामस्वरूप, मोदी जी ने अयोध्या में राम मंदिर का भूमि पूजन किया और अब 22 जनवरी को वहां पर राम लला की स्थापना भी होने वाली है।

राहुल बाबा ताने मारते थे की 'मंदिर वहीं बनाएंगे पर तारीख नहीं बताएंगे।' मंदिर भी बन गया और तिथि भी बता दी, जरा दर्शन कर के आ जाना आपको भी संतोष हो जाएगा।

चाहे राम मंदिर निर्माण की बात हो, धारा 370 को हटाने की बात हो, तीन तलाक को समाप्त करने की बात हो, चाहे सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करनी हो, चाहे चंद्रमा पर चंद्रयान भेजना हो या नई संसद भवन का निर्माण करना हो या माताओं को एक-तिहाई आरक्षण देना हो, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश का गौरव बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज पूरी दुनिया में सभी जगह भारत के विकास की चर्चा है और भारत का गौरवगान हो रहा है, आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने बीते 9 साल में भारत के परचम को पूरी दुनिया में लहराने का पराक्रम किया है। इतनी सारी घटनाओ में कांग्रेस को कुछ सकारात्मक नहीं दिखाता है, ये दोनों भाई बहन (राहुल-प्रियंका) घूम-घूम कर चुनावी राज्यों में पूछते रहते हैं कि कितना विकास हुआ है। जिनके मूल भारत में लगे हैं सिर्फ वही देश के विकास को समझ सकते हैं, इटली से जुड़े वाले नहीं। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने पीएफआई जैसे देश के खिलाफ काम करने वाले दुर्दांत संगठन को एक ही रात में प्रतिबंधित कर भारत में आतंकवाद को जिंदा करने की सारी संभावनाओ को खत्म कर दिया।

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र, महादेवपुरी कोयला खदानें की अनुमति श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दी है और चुनाव समाप्त हो जाने दो बचा कुछ है उसको भी भाजपा अनुमति दे देगी। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आदिवासी क्षेत्र के विकास के लिए ढेर सारे काम किये है, पहले जल, जंगल और जमीन की बात होती थी, अब जल, जंगल, जमीन के साथ-साथ सुरक्षा, सम्मान और समावेशी विकास की भी बात होती है। आदिवासी समाज के कल्याण के हितों में लिए भारतीय जनता पार्टी के प्रयासों का एक ट्रैक रिकॉर्ड रहा है। श्रद्धेय अटल जी ने आजादी के बाद सबसे पहले आदिवासी कल्याण मंत्रालय और जनजाति आयोग का गठन किया और 23 से ज्यादा जनजातियों को आदिवासी सूची में जोड़ने का काम श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी चाहे रानी दुर्गावती हो, टांटिया भील या शंकर शाह, रघुनाथ शाह हो इन सबकी स्मृति में मोदी जी ने देशभर में 10 आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय बनवायें है। 70 साल तक कभी भी देश के राष्ट्रपति की कुर्सी पर कोई आदिवासी भाई या बहन नहीं बैठ पाए। मोदी जी ने ओडिशा के गरीब घर में जन्मी हुई आदिवासी बहन द्रौपदी मुर्मू को महामहिम द्रौपदी मुर्मू बना कर आदिवासी समाज को सम्मान देने का काम किया है। बिरसा मुंडा जयंती के दिन को गौरव दिवस मनाये जाने की शुरुआत मोदी सरकार ने की है। कांग्रेस और कमलनाथ द्वारा आदिवासी समाज के हितों पर उठाए गए कदमों का कोई हिसाब किताब नहीं है। आज देश में सबसे ज्यादा ट्राइबल नेता सिर्फ भाजपा में है क्योंकि इस देश के आदिवासी समाज ने मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को बार-बार आशीर्वाद दिया है और शिवराज सिंह चौहान ने आदिवासी कल्याण के लिए ढेर सारा काम किया है। शिवराज सिंह चौहान ने 100 करोड़ की लागत से रानी दुर्गावती का स्मारक बनाने का काम किया, शंकर शाह रघुनाथ शाह की स्मारक स्मृति का काम निर्माणधीन है और जन नायक टंट्या की स्मृति में खंडवा में विशाल स्मारक बनाने का काम शिवराज सिंह चौहान जी ने किया है। छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम बदलकर राजा शंकर शाह, हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदल कर रानी कमलापति रेलवे स्टेशन और पाताल पानी स्टेशन को टंट्या मामा रेलवे स्टेशन किया गया है।

कांग्रेस ने जिन कमलनाथ को दूल्हा बनाया है, जनता उनसे पूछ रही है कि उन्होंने आदिवासी समाज के उद्धार के लिए उन्होंने क्या किया है। 2013-14 में कांग्रेस की सोनिया-मनमोहन की सरकार थी और देश में आदिवासी कल्याण के लिए कांग्रेस सरकार 29,000 करोड़ खर्च करती थी। अब नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व में 29,000 करोड़ से बढ़ा कर 1 लाख 38 हजार करोड़ रुपए आदिवासी समाज के कल्याण में खर्च किये हैं। और इसके साथ-साथ कांग्रेस अपने 70 साल के शासनकाल में एकलव्य विद्यालय में 90 विद्यालय छोड़ कर गई थी जिसे भाजपा ने 9 साल में 90 से 740 विद्यालय बनाने का काम किया है। खदान क्षेत्र के विकास के लिए एक जिला खनिज फाउंडेशन का गठन किया गया है, जिसमें खनिज उपभोगकर्ता क्षेत्र के निचले हिस्से से निकलने वाले खनिजों के लिए बड़ी धनराशि जमा की जा रही है। इसके माध्यम से आने वाली 75,000 करोड़ की राशि का उपयोग देशभर के आदिवासी समाज कल्याण में योजनाओं के माध्यम से निवेश किया जा रहा है।

कांग्रेस में तीन परिवारों का बोलबाला है मध्य प्रदेश में गांधी परिवार, कमलनाथ परिवार और दिग्विजय बंटाधार परिवार ये तीन परिवार कॉंग्रेस पार्टी चलाते है और जहां तीन-तिगाड़ा होता है वह काम बिगड़ जाता है। गांधी परिवार आदेश देता है, कमलनाथ निर्देश देते हैं लेकिन जब गलती होती है तो चांटा बेचारे दिग्विजय के गाल पर ठोंक देते हैं। दिग्विजय और कमलनाथ प्रदेश के जिन जिलों में जाते हैं, एक-दूसरे के कपड़े फाड़ने पर उतारू रहते हैं। जिस पार्टी में एकता न हो वह मध्यप्रदेश की जनता का भला कैसे कर सकती है। कांग्रेस पार्टी सिर्फ परिवारवाद के लिए राजनीति में है, लेकिन नरेन्द्र मोदी जी गरीब कल्याण के लिए राजनीति करते हैं। पिछले 9 साल में मध्यप्रदेश के 93 लाख किसानों को मोदी जी और शिवराज जी 12,000 रूपये प्रति साल दे रहे हैं और 21,000 करोड़ सीधा किसानों के बैंक खातों मे जमा कर रहे हैं। लगभग 3 करोड़ 70 लाख लोगों को 5 लाख तक का स्वास्थ्य पर खर्च मिला, 80 लाख गरीब परिवारों में शौचालय बना कर माताओं और बहनों को सम्मानित किया गया है। 82 लाख बहनों को उज्जवला का कनेक्शन देने का काम मोदी जी ने किया है, 45 लाख गरीबों को घर देने का काम मोदी जी ने किया है।

अगर भाजपा की सरकार में किये गए विकास का 10 प्रतिशत कार्य भी कांग्रेस ने 50 साल में किया है तो कांग्रेस मध्यप्रदेश की जनता को बताए, भाजपा का मध्यप्रदेश युवा मोर्चा का अध्यक्ष आपके तय किये हुए चौराहे पर आपके साथ चर्चा करने को तैयार है कि गरीबों के लिए कांग्रेस ने क्या किया और भाजपा ने क्या किया। परिवारवाद थोपने वाली पार्टी कभी देश का भला नहीं कर सकती। पहले सिर्फ दिग्विजय सिंह की सरकार लूट मचाती थी, लेकिन कमलनाथ सरकार में कमलनाथ जी और दिग्विजय सिंह दोनों ने मिलकर लूट मचाई और ढेर सारे भ्रष्टाचार किए। 350 करोड़ का मोजेरबेयर घोटाला, 2400 करोड़ का ऑगस्टा वैस्ट्लैन्ड घोटाला, 600 करोड़- इपको फर्टिलाइजर घोटाला, 25 हजार करोड़ - किसान कर्ज माफी का घोटाला,1178 करोड़ - गेहूं बोनस का घोटाला ये सारे घोटाले कमलनाथ से जुड़े हुए हैं, अब वो फिर से मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने श्रीमान बंटाधार की सरकार की जगह मध्य प्रदेश को ब्यूटीफुल मध्य प्रदेश बनाने का काम किया है, बीमारू राज्य मध्य प्रदेश को विकसित राज्य बनाने का काम किया है। केंद्र सरकार ने मध्य प्रदेश को लगभग 7.5 लाख करोड़ सिर्फ डेवलूशन ग्रांट में दिया है। इसके साथ 12 लाख करोड़ के विभिन्न प्रोजेक्ट देने का काम किया है। मोदी जी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है और मध्यप्रदेश में डबल इंजन सरकार चाहिए। अगर गलती से भी कमलनाथ सरकार बनी तो मोदी जी की विकास योजनाएं बंद कर दी जाएंगी और अगर भाजपा की सरकार बनती है तो डबल इंजन की सरकार में मध्यप्रदेश के सारे बचे हुए विकास के कार्य पूरे होंगे। ▪

जिनको कोई नहीं पूछता, उनको मोदी पूछता है, मोदी पूजता है

डबल इंजन को दिया आपका हर वोट, एमपी को टॉप-3 में पहुंचाएगा

एमपी का विकास वो लोग नहीं कर सकते जिनके पास ना तो कोई नई सोच है, ना विकास का रोडमैप है। इन लोगों का सिर्फ एक ही काम है- देश की प्रगति से नफरत, भारत की योजनाओं से नफरत।

अपनी नफरत में ये देश की उपलब्धियों को भी भूल जाते हैं। पूरी दुनिया भारत का गौरव-गान कर रही है। दुनिया में भारत का डंका बज रहा है, आज दुनिया को भारत में अपना भविष्य दिखता है।

- **''डबल इंजन का मतलब है, मध्य प्रदेश का डबल विकास''**
- **''सरकार का लक्ष्य मध्य प्रदेश को भारत के शीर्ष 3 राज्यों में ले जाना है''**
- **''महिला सशक्तिकरण, वोट बैंक का मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय कल्याण का मिशन है''**
- **''मोदी गारंटी का मतलब है, सभी गारंटी को पूरा करने की गारंटी''**
- **''आधुनिक अवसंरचना और मजबूत कानून-व्यवस्था से किसानों और उद्योगों, दोनों को लाभ होता है''**
- **''हमारी सरकार हर वर्ग और हर क्षेत्र का विकास करने के लिए प्रतिबद्ध है''**

हम जैसे करोड़ों भारतीयों को देश की आजादी के लिए लड़ने का सौभाग्य नहीं मिला। लेकिन भारत को विकसित बनाने, भारत को समृद्ध बनाने का दायित्व हम सबके कंधों पर है।

ये जो इतने सारे काम हैं, ये डबल इंजन सरकार के साझा प्रयासों का परिणाम हैं। जब दिल्ली और भोपाल, दोनों जगह समान सोच वाली, जनता-जनार्दन को समर्पित सरकार होती है, तब ऐसे काम और तेज गति से होते हैं।

बीते वर्षों में हमारी सरकार मध्य प्रदेश को बीमारू राज्य से देश के टॉप-10 राज्यों में ले आई है। यहां से अब हमारा लक्ष्य मध्य प्रदेश को देश के टॉप-3 राज्यों में ले जाने का है। बड़े गर्व के साथ तीन तक पहुंचना है? ये काम कौन कर सकता है? ये गारंटी कौन दे सकता है? ये गारंटी एक जिम्मेदार नागरिक के नाते आपका एक वोट मध्य प्रदेश को नंबर तीन पर ले जा सकता है। डबल इंजन को दिया आपका हर वोट, एमपी को टॉप-3 में पहुंचाएगा।

एमपी का विकास वो लोग नहीं कर सकते जिनके पास ना तो कोई नई सोच है, ना विकास का रोडमैप है। इन लोगों का सिर्फ एक ही काम है- देश की प्रगति से नफरत, भारत की योजनाओं से नफरत। अपनी नफरत में ये देश की उपलब्धियों को भी भूल जाते हैं। पूरी दुनिया भारत का गौरव-गान कर रही है। दुनिया में भारत का डंका बज रहा है, आज दुनिया को भारत में अपना भविष्य दिखता है। लेकिन जो राजनीति में उलझे हुए हैं, कुर्सी के सिवा जिनको कुछ नजर नहीं आता है, उन्हें आज दुनिया में हिन्दुस्तान का डंका बजना भी अच्छा नहीं लगता है। भारत, 9 वर्षों में 10वें नंबर से 5वें नंबर की आर्थिक ताकत बन गया है। लेकिन ये विकास विरोधी लोग ये सिद्ध करने में जुटे हैं कि ऐसा हुआ ही नहीं है। मोदी ने गारंटी दी है कि अगले कार्यकाल में भारत दुनिया की टॉप तीन इकोनॉमी में एक नाम हमारे हिन्दुस्तान का होगा। इससे भी सत्ता के भूखे कुछ लोगों के पेट में दर्द हो रहा है।

विकास विरोधी इन लोगों को देश ने 6 दशक दिए थे। 60 साल कोई कम समय नहीं होता है। अगर 9 साल में इतना काम हो सकता है तो 60 साल में कितना हो सकता था। उनके पास भी मौका था। वो नहीं कर पाए, ये उनकी नाकामी है। वो तब भी गरीबों की भावनाओं से खेलते थे, आज भी वही खेल खेल रहे हैं। वो तब भी जात-पात के नाम पर समाज को बांटते थे, आज भी वही पाप कर रहे हैं। वो तब भी आतंक भ्रष्टाचार में डूबे रहते थे, और आज तो वो एक से बढ़कर एक घोर भ्रष्टाचारी हो गए हैं। वो तब भी सिर्फ और सिर्फ एक परिवार का गौरव गान करते थे, आज भी वो ही करने में वो अपना भविष्य देखते हैं। इसलिए उनको देश का गौरव गान पसंद नहीं आता।

मोदी ने गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी परिवारों को पक्के घर की गारंटी दी है। अभी तक इसके तहत देश में 4 करोड़ परिवारों को अपने पक्के घर मिले चुके हैं। यहां एमपी में भी अभी तक लाखों घर गरीब परिवारों को दिए जा चुके हैं। जब इन लोगों की सरकार दिल्ली में थी, तब गरीबों के घर के नाम पर भी सिर्फ लूट होती थी। ये लोग जो घर बनवाते थे, वो रहने लायक भी नहीं होते थे। देश भर में ऐसे लाखों लाभार्थी थे, जिन्होंने उन घरों में कभी पैर तक नहीं रखा। लेकिन आज जो घर बन रहे हैं, उनमें खुशी-खुशी गृह प्रवेश हो रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि ये घर हर लाभार्थी बहन-भाई खुद अपने हिसाब से बना रहे हैं। अपने सपनों के अनुरूप, अपनी जरूरत के हिसाब से अपना घर बना रहा है। हमारी सरकार जैसे-जैसे काम होता जाता है, टेक्नोलॉजी के माध्यम से मॉनिटर होता है, और सीधे उसके खाते में पैसे भेज देती है, कोई चोरी नहीं होती है, कोई कटकी कंपनी नहीं, कोई भ्रष्टाचार नहीं। और उसका घर बनना आगे बढ़ जाता है। पहले घर के नाम पर सिर्फ चार-दीवारें खड़ी होती थीं। आज जो घर मिल रहे हैं, इनमें टॉयलेट, बिजली, नल से जल, उज्ज्वला की गैस, सब कुछ एक साथ मिलता है।

इन घरों की लक्ष्मी यानी मेरी माताएं-बहनें, घर की मालिक हों, ये भी मोदी ने सुनिश्चित किया है। आपको पता है ना कि पीएम आवास योजना के घरों की रजिस्ट्री महिलाओं के नाम भी होती है? पीएम आवास योजना के घरों से करोड़ों बहनें लखपति हुई हैं। जिनके नाम कोई संपत्ति नहीं थी, उनके नाम पर लाखों के ये घर रजिस्टर हुए हैं।

मोदी ने अपनी गारंटी पूरी की है। मैं एक गारंटी बहनों से भी चाहता हूं। तो मुझे गारंटी चाहिए, घर मिलने के बाद अपने बच्चों को अच्छे से पढ़ाना है, कोई ना कोई कौशल सिखाना है, करोगे? आपकी ये गारंटी मुझे काम करने की ताकत देती है।

नारी सशक्तिकरण, भारत के लिए वोट बैंक का नहीं, बल्कि राष्ट्र कल्याण का, राष्ट्र निर्माण का एक समर्पित मिशन है। पहले अनेक सरकारें आई-गईं। हमारी बहनों को लोकसभा और संसद में 33 प्रतिशत आरक्षण के झूठे वादे करके बार-बार वोट मांगे गए। लेकिन संसद में साजिश करके कानून बनाने से रोका गया, बार-बार रोका गया। लेकिन मोदी ने बहनों को गारंटी दी थी। और मोदी की गारंटी यानी हर गारंटी के पूरा होने की गारंटी। आज नारी शक्ति वंदन अधिनियम, एक सच्चाई बन चुका है। ये विकास की गाथा में हमारी मातृशक्ति की भागीदारी और ज्यादा बढ़े और प्रगति का रास्ता खुले उसी दिशा में हमें आगे जाना है। आज विकास की जितनी परियोजनाएं हमने लागू की हैं, वो सारी हमें इस कानून के पास होने से ताकत मिलने वाली है।

जो हमारे युवा साथी हैं, जो फर्स्ट टाइम वोटर्स हैं, उन्होंने तो अपने पूरे जीवन में सिर्फ भाजपा सरकार ही देखी है। उन्होंने तो एक प्रगतिशील मध्य प्रदेश देखा है। विरोधी दलों के जो ये बड़बोले नेता हैं, इनको कई दशकों तक मध्य प्रदेश में शासन का मौका मिला था। उनके शासन-काल में अन्याय और अत्याचार ही फला-फूला। उनके शासन में सामाजिक न्याय हाशिए पर था। तब कमजोर की, दलित और पिछड़े की सुनवाई नहीं होती थी। लोग कानून अपने हाथ में लेते थे। सामान्य जन का सड़क पर आना-जाना मुश्किल हो गया था। बहुत परिश्रम करके हमारी सरकार इस क्षेत्र को आज की स्थिति तक पहुंचा पाई है। अब यहां से हमें पीछे नहीं देखना है।

मध्य प्रदेश के लिए अगले 5 साल बहुत अहम हैं। हमें पूरे मध्य प्रदेश की तस्वीर बदलनी है और इसलिए यहां डबल इंजन की सरकार जरूरी है।आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से जीवन सुगम तो होता ही है, ये समृद्धि का भी रास्ता है। पिछली शताब्दी का मध्य प्रदेश 2 लेन की अच्छी सड़कों के लिए भी तरसता था, अब आज MP में 8 लेन के एक्सप्रेस वे बन रहे हैं। कनेक्टिविटी के इन सभी कार्यों से इस क्षेत्र को बहुत लाभ होने वाला है।

आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और अच्छी कानून व्यवस्था से किसान हो या फिर उद्योग-व्यापार-कारोबार, सब फलते-फूलते हैं। जहां विकास विरोधियों की सरकार आती है, वहां ये दोनों सिस्टम चरमरा जाते हैं। आप राजस्थान में देखिए, सरेआम गले काटे जाते हैं और वहां की सरकार देखती रहती है। ये विकास विरोधी लोग जहां जाते हैं, वहां तुष्टिकरण भी आता है। इससे गुंडे, अपराधी, दंगाई और भ्रष्टाचारी बेलगाम हो जाते हैं। महिलाओं पर, दलित-पिछड़े-आदिवासियों पर अत्याचार बढ़ते हैं। बीते सालों में इन विकास विरोधियों के राज्यों में क्राइम और करप्शन सबसे अधिक बढ़ा है। मध्य प्रदेश को इसलिए इन लोगों से बहुत सावधान रहना है।

हमारी सरकार हर वर्ग, हर क्षेत्र तक विकास पहुंचाने के लिए समर्पित है। **जिनको किसी ने नहीं पूछा, उनको मोदी पूछता है, मोदी पूजता है**। क्या 2014 से पहले किसी ने दिव्यांग शब्द सुना था? जो शारीरिक रूप से किसी चुनौती से घिरे रहते थे, उन्हें पहले की सरकारों के द्वारा ऐसे ही बेसहारा छोड़ दिया गया था। ये हमारी सरकार है जिसने दिव्यांगजनों की चिंता की, उनके लिए आधुनिक उपकरण मुहैया कराए, उनके लिए कॉमन साइन लैंग्वेज विकसित करवाई।

और इसलिए मैं कहता हूं, जिनको किसी ने नहीं पूछा, उनको मोदी पूछता है, उनको मोदी पूजता है। इतने सालों तक देश के छोटे किसानों को किसी ने नहीं पूछा। इन छोटे किसानों को मोदी ने पूछा, उनकी चिंता की। पीएम किसान सम्मान निधि के माध्यम से देश के हर छोटे किसानों के खाते में अब तक 28 हजार रुपए हमारी सरकार ने भेजे हैं। हमारे देश में ढाई करोड़ छोटे किसान ऐसे हैं जो मोटा अनाज उगाते हैं। मोटा अनाज उगाने वाले छोटे किसानों की भी पहले किसी ने चिंता नहीं की। ये हमारी सरकार है जिसने मोटे अनाज को श्री-अन्न की पहचान दी है, उसे दुनिया भर के बाजारों में ले जा रही है।

हमारी सरकार की इसी भावना का एक और बड़ा प्रमाण, पीएम विश्वकर्मा योजना है। हमारे कुम्हार भाई-बहन, लोहार भाई-बहन, सुतार भाई-बहन, सुनार भाई-बहन, मालाकार भाई-बहन, दर्जी भाई-बहन, धोबी भाई-बहन, जूते बनाने वाले भाई-बहन, बाल काटने वाले भाई-बहन, ऐसे काम करने वाले लोगों के लिए अनेक साथी हमारे जीवन के महत्वपूर्ण स्तंभ रहे हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना भी असंभव है। इनकी सुध आजादी के इतने दशकों बाद हमारी सरकार ने ली है।

ये साथी समाज में पीछे रह गए थे, अब इनको आगे लाने का बहुत बड़ा अभियान मोदी ने चलाया है। इन साथियों को ट्रेनिंग देने के लिए हजारों रुपए सरकार देगी। आधुनिक उपकरणों के लिए 15 हजार रुपए भाजपा सरकार देगी। लाखों रुपए का सस्ता ऋण भी इन साथियों को दिया जा रहा है। विश्वकर्मा साथियों को ऋण की गारंटी मोदी ने ली है, केंद्र सरकार ने ली है।

देश के विकास विरोधी राजनीतिक दल, मध्य प्रदेश को पीछे ले जाने की इच्छा रखते हैं। जबकि हमारी डबल इंजन की सरकार, भविष्य की सोच रखती है। इसलिए विकास का भरोसा सिर्फ और सिर्फ डबल इंजन की सरकार पर कर सकते हैं। मध्य प्रदेश को विकास के पैमाने पर देश में टॉप के राज्यों में लाने की गारंटी सिर्फ हमारी सरकार दे सकती है।

एक भी कांग्रेसी को आपने स्वच्छता करते देखा क्या? स्वच्छता करने के लिए अपील करते देखा क्या? क्या मध्य प्रदेश का स्वच्छता में नाम नंबर एक हुआ है ये भी कांग्रेस वालों को पसंद नहीं है, वो मध्य प्रदेश का क्या भला करेंगे? ऐसे लोगों पर भरोसा कर सकते हैं क्या?

और इसलिए सबसे आग्रह करता हूं कि विकास की इस रफ्तार को आगे बढ़ाना है, बहुत तेजी से बढ़ाना है। ▪

मोदी जी के नेतृत्व में शक्तिशाली भारत का निर्माण

कांग्रेस की विकृत मानसिकता देखिए उन्हें कन्या पूजन नाटक-नौटंकी लगती है। बेटियों का पूजन दिग्विजय सिंह और कमलनाथ के लिए नाटक-नौटंकी होगी, लेकिन यह जीवित जागृत देवियां है। मैं हर कार्यक्रम से पहले कन्या पूजन करता हूं और करता रहूंगा।

सनातन धर्म का अपमान करने वाले प्रदेश का भला नहीं कर सकते

कांग्रेस की विकृत मानसिकता देखकर प्रसंग याद आता है जब सीता जी का हरण हुआ तो सीता जी ने हरण करते समय अपने गले से मोती की माला नीचे फेंक दी थी, ताकि पता चल जाए सीता जी को रावण किस दिशा में ले गया। जब भगवान राम पहुंचे तो मोती बिखरे हुए मिले। उन्होंने लक्ष्मण जी से पूछा, ये मोती सीता जी की माला के है..? तब लक्ष्मण जी ने उत्तर दिया, भैया मैंने तो सीता मैया का चेहरा, गला कभी देखा ही नहीं, मैंने तो केवल उनके चरण देखे इसलिए मुझे पता नहीं है। यह भाव भारत का है और यही भाव शिवराज सिंह चौहान का है, कि हमने तो अपनी बहनों के पांव देखे हैं। दिग्विजय सिंह और कमलनाथ ये माताओं-बहनों को आइटम और टंचमाल कहने वाले, इनकी हैसियत है कि हमसे आंखें मिलाकर बात कर सकें । भारत की संस्कृति, परंपराओं और सनातन धर्म का अपमान करने वाले लोग कभी देश और प्रदेश का भला नहीं कर सकते।

कांग्रेस अब कपड़ा फाड़ कांग्रेस में बदल गई

कांग्रेस की हालत अजब -गजब हो गई है। सोनिया कांग्रेस, खड़गे कांग्रेस बनी, फिर मध्यप्रदेश में कमलनाथ कांग्रेस हो गई। कमलनाथ जी ने तो क्या, उनके बेटे ने भी टिकट बांट दिए और जब टिकट को लेकर कोलाहल मचा, लोग कमलनाथ जी के पास पहुंचे तो कमलनाथ जी ने कहा, ''कपड़े फाड़ना है तो दिग्विजय सिंह और जयवर्धन सिंह के फाड़ो।'' तो वो कपड़ा फाड़ कांग्रेस हो गई, लेकिन अब कांग्रेस टिकट बदल कांग्रेस बन गई है। कांग्रेस ने घबराकर कई जगह टिकट बदल दिए हैं। कांग्रेस की हालत तो बड़ी अजब-गजब हो गई है। अब देखते हैं कांग्रेस में आगे और क्या होने वाला है।

बहनों की जिंदगी बदलने का महायज्ञ है, लाड़ली बहना योजना

यह लाड़ली बहना योजना बहनों की जिंदगी बदलने का महायज्ञ है। स्थानीय निकाय चुनाव में महिलाओं को हमने 50 प्रतिशत आरक्षण दिया। पुलिस में 30 प्रतिशत भर्तियां बेटियों की हो रही है। लोकसभा, विधानसभा में बहनों को 33 प्रतिशत आरक्षण मिला। ये योजनाएं नहीं है महिला सशक्तिकरण है, बहनों की जिंदगी बदलने का अभियान है। पैसा मान भी बढ़ाता है, सम्मान भी बढ़ाता है और आत्मसम्मान भी बढ़ाता है। हम बहनों को पैसा नहीं सम्मान दे रहें हैं।

कांग्रेस परेशान है और चुनाव आयोग में शिकायत कर रही है कि, शिवराज चुपके से बहनों के खातो में पैसा डालेगा, लेकिन मैं चुपके से नहीं ,बल्कि डंके की चोट पर बहनों के खातों में पैसा डालूंगा। अब रसोई गैस भी 450 रूपए में मिलेगा और पीएम आवास में जिन बहनों के नाम रह गए थे, चुनाव के बाद उन्हें भी मुख्यमंत्री लाड़ली बहना आवास योजना के तहत पक्के मकान दिए जाएंगे। मैं सरकार नहीं परिवार चलाता हूं, और परिवार की सेवा करना ही भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य है।

प्रदेश को पहले नंबर का राज्य बनाएंगे

मध्यप्रदेश की धरती पर अगर किसी ने विकास किया है तो केवल भाजपा सरकार ने किया है। भारत में जी-20 बैठक हो रही है, भारत चांद पर पहुंच गया और अनेकों उपलब्धियां हैं। शक्तिशाली भारत का निर्माण प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हो रहा है। मध्यप्रदेश अब पिछड़ा नहीं है, मध्यप्रदेश अब बीमारू भी नहीं है। मध्यप्रदेश को विकसित प्रांतों की कतार में ले जाकर खड़ा कर दिया है। हमारा संकल्प है कि, अब मध्यप्रदेश को हिंदुस्तान का नं-1 राज्य बनाकर रहेंगे।

मां नर्मदा और मां ताप्ती का आशीर्वाद भाजपा के साथ

ताप्ती मैया हमारी जीवन रेखा है, मां ताप्ती ऐसी है जिनके दर्शन मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है और मोक्ष मिल जाता है। इसलिए जैसे उज्जैन की धरती पर महाकाल महालोक बनाया गया है। वैसे ही मुलताई में मां ताप्ती लोक भी भाजपा सरकार बनाएगी। मुलताई को जिला बनाने की मांग भी काफी समय से उठ रही है। इस दिशा में भी सहमति बनाकर कदम आगे बढ़ाए जाएंगे। मां ताप्ती और मां नर्मदा का आशीर्वाद भाजपा के साथ है। जब कमलनाथ जी की सरकार थी तब रोते ही रहते थे, मैं क्या करूं मेरे पास पैसे ही नहीं है, मामा खजाना खाली कर गया। जब पैसे ही नहीं थे तो क्यों मुख्यमंत्री बन गए। आप बताओ मुझे कोई मुख्यमंत्री रोए कि मैं क्या करूं मेरे पास पैसे ही नहीं हैं तो ऐसा मुख्यमंत्री किसी काम का है क्या? मां ताप्ती के आशीर्वाद से मैं आज यह कहने का साहस कर रहा हूं कि मेरे पास पैसों की कोई कमी नहीं है।

भाजपा विकास का रिकॉर्ड बनाएगी

आप जीत का रिकॉर्ड बनाइए और भाजपा विकास का रिकॉर्ड बनाएगी। 17 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव में, कंधे से कंधा मिलाकर कमल के फूल पर वोट डालकर भारतीय जनता पार्टी की जीत सुनिश्चित करेंगे। हम संकल्प लेते हैं कि, भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने हमारी माताओं, बहनों, बेटियों, किसानों, युवाओं, गरीबों के कल्याण एवं प्रदेश के विकास के लिए जो काम किए हैं उन्हें जन-जन तक पहुंचाएंगे और भारतीय जनता पार्टी की सरकार फिर से बनाएंगे। साथ ही साल 2024 में लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी को जितायेंगे और मोदी जी को भारत का प्रधानमंत्री बनाएंगे। ▪

केन-बेतवा लिंक परियोजना बुंदेलखंड की युगांतकारी परिवर्तन-वाहिनी

मोदी सरकार द्वारा निर्मित बुंदेलखंड की जीवन रेखा केन-बेतवा लिंक परियोजना अब यहां युगांतकारी परिवर्तन लाएगी।

जल-संकट खत्म होने के साथ ही महिलाओं के जीवन में बड़ा बदलाव आएगा। उन्हें मीलों सिर पर पानी ढोने से निजात मिलेगी। पानी की उपलब्धता से स्वच्छता बढ़ेगी और उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

विष्णु दत्त शर्मा

बुंदेलखंड की दो दशक पुरानी आस अब पूरी हो रही है। 18 साल से लंबित केन-बेतवा लिंक परियोजना का शुभारंभ क्षेत्र की प्यास के बुझने के साथ ही जीवन बदलने का ऐतिहासिक पड़ाव भी है। चार दशक से बुंदेलखंड की जनता को जिस दिन का बेसब्री से इंतजार था। वह दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृढ़ संकल्प से आ गया है। जिस सपने को भाजपा सरकार में ही पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल जी ने देखा और देश में 37 नदियों को आपस में जोड़कर जल संकट को दूर करने का बीड़ा उठाया था, जिसमें केन-बेतवा लिंक परियोजना भी थी, उसे अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में मूर्त रूप मिल गया है। यह भारत की पहली नदी जोड़ो परियोजना है। इसको अंतर्राज्यीय नदी हस्तांतरण मिशन के लिये एक मॉडल योजना के रूप में माना जाता है। लेकिन दुर्भाग्य से अटल जी के बाद की यूपीए सरकार ने इसमें रुचि नहीं दिखायी। हालांकि उन्होंने बुन्देलखंड की दुर्दशा पर राजनीतिक रोटियाँ खूब सेकीं। स्मरण रहे कि जब अटल जी ने नदियों को जोड़ने की जो परिकल्पना की थी, उनमें से केन-बेतवा पहला लक्ष्य था। देश में जल के संकट से सर्वाधिक प्रभावित बुन्देलखंड का ही क्षेत्र था, जिसका निदान मानवता की माँग थी। भाजपा सरकार क्षेत्र के इस जीवन-संकट को समझ रही थी।

स्वाधीन भारत में सर्वाधिक राजनीतिक रोटियाँ बुंदेलखंड के पिछड़ेपन पर ही सेकी गईं। राजनीतिक पर्यटकों ने इसकी दुर्दशा की तस्वीरों को देश-विदेश में भी खूब प्रचारित किया, लेकिन जिनके हाथों में सात दशक तक इसके तकदीर की चाभी थी, उन्होंने उससे हर बार छल किया और बुंदेलखंड की दशा जस की तस बनी रही। जिस बुंदेलखंड के वीरता की गाथाएँ साहस देती हैं, वही बुंदेलखंड पानी के समर में कई दशकों से मात खाता रहा। उजड़ते गाँव और पलायन बुंदेलखंड की त्रासदी का वृतांत बताते हैं।

भयानक सूखे की मार से बेहाल हो चुके बुंदेलखंड को कॉंग्रेस सरकारों ने केवल नारे दिये और हर बार चुनाव बाद भुला दिया। बुंदेलखंड की जनता के जीवन में हर दिन अंधकार और अधिक घना होता गया और सपनों के सौदागर उन्हें सब्जबाग दिखाते रहे। कड़वा सच है कि विगत दशकों में बुन्देलखंड से करोड़ों लोग पलायन कर गये। पशुधन को बचाना, कृषि कार्य करना, जीवन के लिए जरूरी पानी जैसी समस्याएँ बुन्देलखंड की नसीब बन गयीं और जन-जीवन में और अँधेरा छाता चला गया। लेकिन जब सच्ची नीयत वाला नेतृत्व मिलता है तो लोकतंत्र में वह दिन आ ही जाता है, जब एक नया सवेरा अँधेरों को छांट देता है। बुंदेलखंड के इतिहास में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ऐसा सवेरा लाने वाले सूरज की तरह हैं।

मोदी जी के नेतृत्व का ही फल है कि जल, वन-भूमि साझाकरण और अधिग्रहण में आने वाली कठिनाईयों से जूझ रही केन-बेतवा लिंक परियोजना अब शुरू हो रही है। यह अकाट्य तथ्य है कि श्री मोदी जी के प्रयास से ही इस महान परियोजना की अनेक अड़चनें दूर हुईं और विश्व जल दिवस पर 8 मार्च को प्रधानमंत्री की उपस्थिति में यूपी और एमपी सरकारों ने इसके लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे।

सारी बाधाओं को पार कर अब मोदी सरकार ने 45 हजार करोड़ वाली केन-बेतवा लिंक जैसी बहुप्रतीक्षित परियोजना को जमीन पर उतार कर यहाँ समाज-जीवन की सरलता के सारे मार्ग प्रशस्त कर दिये हैं। इस परियोजना में 90 प्रतिशत राशि केंद्र सरकार देगी और शेष मध्यप्रदेश व उत्तर प्रदेश वहन करेंगे। इसके तहत केन नदी से बेतवा नदी में पानी भेजा जाएगा और 221 किलोमीटर लंबी संपर्क नहर निकाली जाएगी, जो झांसी के निकट बरुआ में बेतवा नदी को जल उपलब्ध कराएगी।

केन-बेतवा लिंक प्रोजेक्ट से नॉन मानसून सीजन (नवंबर से अप्रैल के बीच) में क्रमशः मध्यप्रदेश को 1834 तथा उत्तर प्रदेश को 750 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी मिल सकेगा। इसका लाभ मध्य प्रदेश में बुंदेलखंड के छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़, निवाड़ी, दमोह, सागर और दतिया के साथ-साथ शिवपुरी, विदिशा और रायसेन सहित अन्य जिलों को भी मिलेगा। केन-बेतवा लिंक कार्य के पूरा हो जाने से जहां 8 लाख 11 हजार हेक्टेयर में सिंचाई की सुविधा पहुंचाई जा सकेगी, वहीं 41 लाख लोगों को सहज तौर पर पीने का पानी मिल पाएगा। बुंदेलखंड में आने वाले उत्तर प्रदेश के 2 लाख 52 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई और पेय जल की सुविधा भी इससे मिल सकेगी। बाद में 103 मेगा वाट पनबिजली और 27 मेगावाट सौर ऊर्जा भी पैदा की जा सकेगी। भले ही देश में जल-संकट पर छिटपुट चर्चाएँ होती रहीं हों परन्तु यह एक अटल सत्य है कि 1999 में एनडीए सरकार बनने के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल जी ने ही पहली बार नदी जोड़ो परियोजना पर काम शुरू किया था। उस समय एक टॉस्क फोर्स का गठन करके आधारभूत कार्य किया गया। इस टॉस्क फोर्स ने देश की नदियों का वर्गीकरण

करके एक रूप-रेखा रखी कि किन नदियों को जोड़कर देश को पानी की समस्या से मुक्ति दिलाई जा सकती है। हालांकि 2004 में यूपीए सरकार बनते ही यह योजना ठंडे बस्ते में डाल दी गई। यूपीए की सरकार ने 10 साल नदी जोड़ो परियोजना की घोर अनदेखी की। यह रवैया कॉंग्रेस के झूठे विकास की बानगी भी है जो इतिहास के पन्नों में सदा दर्ज रहेगी। कॉंग्रेस की संवेदनहीनता का परिणाम बुंदेलखंड की जनता को भुगतना पड़ा है। लेकिन अब यहां की जनता का जीवन बदलने का रास्ता खुल गया है।

मोदी सरकार ने सक्रियता से केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिए शुरू में ही राष्ट्रीय जल विकास प्राधिकरण को इसकी कमान सौंपी तथा प्राधिकरण की मॉनिटरिंग का जिम्मा केंद्रीय जल संसाधन मंत्री को दिया ताकि यह कार्य तेज गति से पूरा हो सके। इसके लिए अप्रैल 2015 में एक स्वतंत्र कार्यबल भी गठित किया था। आज उसी सक्रियता, सुशासन और कार्य-संस्कृति का परिणाम है कि देश की पहली नदी जोड़ो परियोजना के रूप में केन-बेतवा लिंक प्रारंभ हो रही है और बुंदेलखंड की जनता का यह महान सपना पूरा हो रहा है।

मोदी सरकार द्वारा निर्मित बुंदेलखंड की जीवन रेखा केन-बेतवा लिंक परियोजना अब यहां युगांतकारी परिवर्तन लाएगी। जल-संकट खत्म होने के साथ ही महिलाओं के जीवन में बड़ा बदलाव आएगा। उन्हें मीलों सिर पर पानी ढोने से निजात मिलेगी। पानी की उपलब्धता से स्वच्छता बढ़ेगी और उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। इस परियोजना से बुंदेलखंड में सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक स्तर ऊँचा होगा।

नहरों का विकास होगा, पनबिजली से सस्ती बिजली मिलेगी तथा वनीकरण भी बढ़ेगा। आर्थिक समृद्धि आने से जीवन बदलेगा और बुंदेलखंड की सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति रुझान बढ़ेगा तो पर्यटन उद्योग भी निखरेगा। खाद्य सम्पन्नता और रोजगार के अवसर मिलेंगे तो पलायन पर विराम लगेगा। आज जिस बुंदेलखंड की पहचान अकाल और सूखा की है, वह बुंदेलखंड भविष्य में हरियाली से पहचाना जाएगा। जो बुंदेलखंड गरीबी से जाना जाता है, वह समृद्ध बुंदेलखंड बनेगा और भविष्य में अपने गौरवशाली अस्मिता के साथ सारी दुनिया को आकर्षित करेगा। ▪

(लेखक खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद व मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष हैं)

सनातन विरोधियों को जनता सबक सिखाएगी

मिस्टर बंटाढार एवं मिस्टर करप्टनाथ ने मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य बनाकर गरीब कल्याण की योजनाओं को बंद कर दिया था। कमलनाथ की सवा साल की सरकार में वल्लभ भवन दलाली का अड्डा बन गया था। आज देश विरोधी ताकतें सनातन पर हमला

कर उसे समाप्त करने की बात कर रही हैं, लेकिन उनका यह सपना साकार नहीं होगा। ऐसी देश विरोधी ताकतों को जवाब देने का समय आ गया है। जनता अपने वोट की ताकत से इन्हें बूथ पर जवाब देगी। भाजपा की डबल इंजन की सरकार द्वारा कराए गए गरीब कल्याण के कार्यों एवं बूथ पर देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं के कठिन परिश्रम व मेहनत से मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की प्रचंड बहुमत से सरकार बनेगी। 2018 में भी कांग्रेस झूठा वचन-पत्र लेकर आई थी। कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने प्रदेश की जनता से झूठ बोला था कि यदि घोषणाओं पर अमल नहीं हुआ तो 15 दिन में मुख्यमंत्री हटा दूंगा, लेकिन न तो घोषणाओं पर अमल हुआ और न ही मुख्यमंत्री बदले गए। अब फिर कांग्रेस झूठ का पुलंदा लेकर आई है और जनता से छल-कपट करने में जुटी हुई है। आज यही कांग्रेसी सनातन पर सवाल उठा रहे हैं, लेकिन प्रदेश की जनता इनके काले कारनामों को जानती है और इसका जवाब बूथ पर कमल का बटन दबाकर देगी।

मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य से बाहर निकाल कर विकसित प्रदेश बनाया

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार ने मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य से बाहर निकालकर विकसित प्रदेश बनाया है। भाजपा सरकारों ने गरीब कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से हर वर्ग के विकास के लिए कार्य किया है। 15 माह की कांग्रेस की सरकार ने भाजपा सरकार की गरीब कल्याणकारी योजनाओं को बंद कर दिया था, जैसे ही मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, पुन: योजनाओं को प्रारंभ कर प्रदेश के गरीबों को आत्मनिर्भर बनाया। ▪

भाजपा विकास और गरीब कल्याण को लेकर चुनाव में उतरी है

भाजपा गरीब कल्याण, विकास और सुशासन को लेकर विधानसभा चुनाव में उतरी है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य से देश के अग्रणी राज्यों में शामिल कराया है। मध्यप्रदेश में ही नहीं अन्य सभी चुनावी राज्यों में भी अनुभवी और युवा प्रत्याशियों के साथ हमारी पार्टी प्रचंड बहुमत से चुनाव जीतेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किए गए विकास और गरीब कल्याण के कार्य ही चुनाव का आधार हैं। 2003 का मध्यप्रदेश और आज का मध्यप्रदेश जनता के सामने है। हमारी सरकार से हर गरीब खुश है। 1 करोड़ 36 लाख लोग गरीब रेखा के ऊपर आए हैं। भाजपा मध्यप्रदेश का विधानसभा ऐतिहासिक बहुमत के साथ जीतेगी, यह निश्चित है। ▪

भारत को श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य तक पहुंचाएं

विजयादशमी बुराई पर राष्ट्र भक्ति की विजय का पर्व

हमारी शक्ति पूजा सिर्फ हमारे लिए नहीं, पूरी सृष्टि के सौभाग्य, आरोग्य, सुख, विजय और यश के लिए की जाती है। भारत का दर्शन और विचार यही है। हम गीता का ज्ञान भी जानते हैं और आईएनएस विक्रांत और तेजस का निर्माण भी जानते हैं।

हम श्री राम की मर्यादा भी जानते हैं और अपनी सीमाओं की रक्षा करना भी जानते हैं। हम शक्ति पूजा का संकल्प भी जानते हैं और कोरोना में "सर्वे संतु निरामया' का मंत्र भी मानते हैं।

विजयादशमी का पर्व, अन्याय पर न्याय की विजय, अहंकार पर विनम्रता की विजय और आवेश पर धैर्य की विजय का पर्व है। ये अत्याचारी रावण पर भगवान श्री राम की विजय का पर्व है। हम इसी भावना के साथ हर वर्ष रावण दहन करते हैं। लेकिन सिर्फ इतना ही काफी नहीं है। ये पर्व हमारे लिए संकल्पों का भी पर्व है, अपने संकल्पों को दोहराने का भी पर्व है।

इस बार विजयादशमी तब मना रहे हैं, जब चंद्रमा पर हमारी विजय को 2 महीने पूरे हुए हैं। विजयादशमी पर शस्त्र पूजा का भी विधान है। भारत की धरती पर शस्त्रों की पूजा किसी भूमि पर आधिपत्य नहीं, बल्कि उसकी रक्षा के लिए की जाती है। नवरात्र की शक्ति पूजा का संकल्प शुरू होते समय हम कहते हैं-

या देवी सर्वभूतेषू, शक्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।

जब पूजा पूर्ण होती है तो हम कहते हैं-

देहि सौभाग्य आरोग्यं, देहि मे परमं सुखम,
रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, द्विषोजहि!

हमारी शक्ति पूजा सिर्फ हमारे लिए नहीं, पूरी सृष्टि के सौभाग्य, आरोग्य, सुख, विजय और यश के लिए की जाती है। भारत का दर्शन और विचार यही है। हम गीता का ज्ञान भी जानते हैं और आईएनएस विक्रांत और तेजस का निर्माण भी जानते हैं। हम श्री राम की मर्यादा भी जानते हैं और अपनी सीमाओं की रक्षा करना भी जानते हैं। हम शक्तिपूजा का संकल्प भी जानते हैं और कोरोना में **'सर्वे संतु निरामया'** का मंत्र भी मानते हैं। भारत भूमि यही है। भारत की विजयादशमी भी यही विचार का प्रतीक है।

आज हमें सौभाग्य मिला है कि हम भगवान राम का भव्यतम मंदिर बनता देख पा रहे हैं। अयोध्या की अगली रामनवमी पर रामलला के मंदिर में गूंजा हर स्वर, पूरे विश्व को हर्षित करने वाला होगा। वो स्वर जो शताब्दियों से यहां कहा जाता है-

भय प्रगट कृपाला, दीनदयाला...
कौसल्या हितकारी।

भगवान राम की जन्मभूमि पर बन रहा मंदिर सदियों की प्रतीक्षा के बाद हम भारतीयों के धैर्य को मिली विजय का प्रतीक है। राम मंदिर में भगवान राम के विराजने को बस कुछ महीने बचे हैं। भगवान श्री राम बस, आने ही वाले हैं।

और, उस हर्ष की परिकल्पना कीजिए, जब शताब्दियों के बाद राम मंदिर में भगवान राम की प्रतिमा विराजेगी। राम के आने के उत्सव की शुरुआत तो विजयादशमी से ही हुई थी। तुलसी बाबा रामचरित मानस में लिखते हैं -

सगुन होहिं सुंदर सकल मन
प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगवन जनाव जनु नगर
रम्य चहुं फेर।

यानि जब भगवान राम का आगमन होने ही वाला था, तो पूरी अयोध्या में शगुन होने लगे। तब सभी का मन प्रसन्न होने लगा, पूरा

नगर रमणीक बन गया। ऐसे ही शगुन आज हो रहे हैं। आज भारत चंद्रमा पर विजयी हुआ है। हम दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं। हमने संसद की नई इमारत में प्रवेश किया है। नारी शक्ति को प्रतिनिधित्व देने के लिए संसद ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया है।

भारत आज विश्व की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी के साथ, सबसे विश्वस्त डेमोक्रेसी के रूप में उभर रहा है। और दुनिया देख रही है ये Mother of Democracy. इन सुखद क्षणों के बीच अयोध्या के राम मंदिर में प्रभु श्री राम विराजने जा रहे हैं। एक तरह से आजादी के 75 साल बाद, अब भारत के भाग्य का उदय होने जा रहा है। लेकिन यही वो समय भी है, जब भारत को बहुत सतर्क रहना है।

हमें ध्यान रखना है कि आज रावण का दहन बस एक पुतले का दहन ना हो, ये दहन हो हर उस विकृति का जिसके कारण समाज का आपसी सौहार्द बिगड़ता है। ये दहन हो उन शक्तियों का जो जातिवाद और क्षेत्रवाद के नाम पर मां भारती को बांटने का प्रयास करती हैं। ये दहन हो उस विचार का, जिसमें भारत का विकास नहीं स्वार्थ की सिद्धि निहित है। विजयादशमी का पर्व सिर्फ रावण पर राम की विजय का पर्व नहीं, राष्ट्र की हर बुराई पर राष्ट्र भक्ति की विजय का पर्व बनना चाहिए। हमें समाज में बुराइयों के, भेदभाव के अंत का संकल्प लेना चाहिए।

आने वाले 25 वर्ष भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। पूरा विश्व आज भारत की ओर नजर टिकाए हमारे सामर्थ्य को देख रहा है। हमें विश्राम नहीं करना है। रामचरित मानस में भी लिखा है-

राम काज कीन्हें बिनु, मोहिं कहां विश्राम।

हमें भगवान राम के विचारों का भारत बनाना है। विकसित भारत, जो आत्मनिर्भर हो, विकसित भारत, जो विश्व शांति का संदेश दे, विकसित भारत, जहां सबको अपने सपने पूरे करने का समान अधिकार हो, विकसित भारत, जहां लोगों को समृद्धि और संतुष्टि का भाव दिखे। राम राज की परिकल्पना यही है,

राम राज बैठे त्रैलोका,
हरषित भये गए सब सोका।

यानि जब राम अपने सिंहासन पर विराजें तो पूरे विश्व में इसका हर्ष हो और सभी के कष्टों का अंत हो। लेकिन, ये होगा कैसे? इसलिए मैं आज विजयादशमी पर प्रत्येक देशवासी से 10 संकल्प लेने का आग्रह करूंगा।

- **पहला संकल्प-** आने वाली पीढ़ियों का ध्यान रखते हुए हम ज्यादा से ज्यादा पानी बचाएंगे।
- **दूसरा संकल्प-** हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को डिजिटल लेन-देन के लिए प्रेरित करेंगे।
- **तीसरा संकल्प-** हम अपने गांव और शहर को स्वच्छता में सबसे आगे ले जाएंगे।
- **चौथा संकल्प-** हम ज्यादा से ज्यादा Vocal For Local के मंत्र को फॉलो करेंगे, मेड इन इंडिया प्रॉडक्ट्स का इस्तेमाल करेंगे।
- **पांचवा संकल्प-** हम क्वालिटी काम करेंगे और क्वालिटी प्रॉडक्ट बनाएंगे, खराब क्वालिटी की वजह से देश के सम्मान में कमी नहीं आने देंगे।
- **छठा संकल्प-** हम पहले अपना पूरा देश देखेंगे, यात्रा करेंगे, परिभ्रमण करेंगे और पूरा देश देखने के बाद समय मिले तो फिर विदेश की सोचेंगे।
- **सातवां संकल्प-** हम नैचुरल फार्मिंग के प्रति किसानों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक करेंगे।
- **आठवां संकल्प-** हम सुपरफूड मिलेट्स को-श्रीअन्न को अपने जीवन में शामिल करेंगे। इससे हमारे छोटे किसानों को और हमारी अपनी सेहत को बहुत फायदा होगा।
- **नवां संकल्प-** हम सब व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए योग हो, स्पोर्ट्स हो, फिटनेस को अपने जीवन में प्राथमिकता देंगे।
- और **दसवां संकल्प-** हम कम से कम एक गरीब परिवार के घर का सदस्य बनकर उसका सामाजिक स्तर बढ़ाएंगे।

जब तक देश में एक भी गरीब ऐसा है जिसके पास मूल सुविधाएं नहीं हैं, घर-बिजली-गैस-पानी नहीं है, इलाज की सुविधा नहीं है, हमें चैन से नहीं बैठना है। हमें हर लाभार्थी तक पहुंचना है, उसकी सहायता करनी है। तभी देश में गरीबी हटेगी, सबका विकास होगा। तभी भारत विकसित बनेगा। अपने इन संकल्पों को हम भगवान राम का नाम लेते हुए पूर्ण कर पाएं। राम चरित मानस में कहा गया है-

प्रबिसी नगर कीजै सब काजा,
हृदय राखि कोसलपुर राजा

यानि भगवान श्री राम के नाम को मन में रखकर हम जो संकल्प पूरा करना चाहेंगे, हमें उसमें सफलता अवश्य मिलेगी। हम सब भारत के संकल्पों के साथ उन्नति के पथ पर बढ़ें, हम सब भारत को श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य तक पहुंचाएं। ▪

जनता के समर्थन और आशीर्वाद से हम महाविजय सुनिश्चित करेंगे

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हम स्वर्णिम, समृद्ध और विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए काम करेंगे। मध्यप्रदेश को देश के तीन प्रमुख राज्यों की अर्थव्यवस्था में शामिल करने के लिए हम काम कर रहे हैं। जनता के समर्थन और आशीर्वाद से भारतीय जनता पार्टी की मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में महाविजय सुनिश्चित करेंगे। कांग्रेसी प्रतिदिन झूठे वादे करते हैं। कांग्रेस ने मोहब्बत की नहीं, बल्कि झूठ की दुकान खोल रखी है। ना इंडी गठबंधन का कोई भविष्य है और ना ही कांग्रेस का कोई भविष्य है। हम वादे नहीं, हम काम कर रहे हैं और जो काम कर रहे हैं, वह जनता को बता रहे हैं।

जनता कांग्रेस के महाझूठ पत्र पर भरोसा नहीं करेगी, कांग्रेस दो हिस्सों में बंट गई है।

कांग्रेस नेता यह दूसरा महाझूठ पत्र तो ले आए, पहले वचन-पत्र का क्या हुआ। कांग्रेसी महाझूठ पत्र निकाल रहे हैं, मध्यप्रदेश की जनता इन पर भरोसा नहीं करेगी। समझ में नहीं आता कि मध्यप्रदेश में किसकी कांग्रेस है, यह कांग्रेस सोनिया गांधी की है या मल्लिकार्जुन खड़गे की है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस (के) हो गई है यानी कमलनाथ की कांग्रेस। वहीं सर्वे कर रहे हैं, वही टिकट बांट रहे हैं, कार्यकर्ता प्रदर्शन कर कपड़े फाड़ रहे हैं, पुतले जला रहे हैं। जैसे शिवसेना महाराष्ट्र में दो हिस्सों में बट गई वैसे ही मध्यप्रदेश में कांग्रेस दो हिस्सों में बट गई। कमलनाथ ने तो इंडी गठबंधन का भी सत्यानाश कर दिया है।▪

आपका एक वोट लोकतंत्र को मजबूत करने वाला वोट है

- मध्य प्रदेश की जनता के सामने दो विकल्प हैं- एक है कांग्रेस जिसने मध्य प्रदेश को बंटाधार और बीमारू प्रदेश बनाकर छोड़ा था, दूसरी ओर है मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी, जिसने 18 साल में मध्य प्रदेश के कोने-कोने में विकास करने का काम किया है। आपका एक वोट लोकतंत्र को मजबूत करने वाला वोट है।
- कांग्रेस तो उज्जैन में महाकाल लोक के निर्माण का भी विरोध कर रही थी, लेकिन मोदी जी के शासनकाल में महाकाल लोक का निर्माण हुआ।
- सोनिया-मनमोहन के 10 और श्री नरेन्द्र मोदी सरकार के 9 साल... किसने प्रदेश का ज्यादा विकास किया, उसका हिसाब दें।
- मध्य प्रदेश की जनता से यह अपील करता हूँ कि देश को सुरक्षित, समृद्ध और विश्व में नंबर वन बनाने में मोदी जी का साथ देने वाली सरकार बनाइये।
- श्रीमान बंटाधार के शासन में यहां सिर्फ गड्ढे ही गड्ढे थे जबकि मुख्यमंत्री शिवराज जी ने मध्य प्रदेश में सड़कों का जाल बिछाकर मध्य प्रदेश को अग्रणी राज्य बनाने का काम किया है। यहां विकास भाजपा की सरकार में हुआ है।
- भाजपा कुछ भी करे कांग्रेस को सिर्फ विरोध ही करना है, उसे विरोध करने की आदत पड़ गयी है।
- विगत 18 सालों में सीएम शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व ने मध्यप्रदेश का जो विकास किया है, कलमनाथ और बंटाधार की टीम के पास इसका कोई जवाब नहीं है।
- ये तीन परिवार गांधी परिवार, कमल नाथ-नकुल नाथ परिवार और दिग्विजय सिंह और उनके बेटे का परिवार ने मध्यप्रदेश को बर्बाद करने के अलावा कोई काम नहीं किया है।

कमलनाथ जी को शर्म करना चाहिए, उन्हें किसानों की बात करने का कोई हक नहीं है... उनके समय में सिर्फ 4 लाख 40 हजार टन गेहूं खरीदा जाता था। जबकि भाजपा की सरकार ने किसानों का 71 लाख टन गेहूं एमएसपी पर खरीदने का काम किया है।

मध्यप्रदेश की जनता को अपना मत प्रकट करना है, किसी को विधायक, मंत्री और मुख्यमंत्री बनने के लिए वोट मत दीजिए, आप लोगों का वोट आने वाले मध्यप्रदेश और भारत का भविष्य तय करने वाला है।

आप के सामने 2 ही विकल्प है, एक कांग्रेस जिसने इस प्रदेश को बंटाधार और बीमारू राज्य बना कर छोड़ रखा था। और दूसरी ओर है मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा जिसने, 18 साल में मध्य प्रदेश के कोने-कोने में विकास कर, दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की दी।

मध्य प्रदेश में विकास की इस तेज रफ्तार को बनाये रखने के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पुनः पूर्ण बहुमत से भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार बनाना जरूरी है।

मध्यप्रदेश की जनता को अपना मत प्रकट करना है, किसी को विधायक, मंत्री और मुख्यमंत्री बनने के लिए वोट मत दीजिए, आप लोगों का वोट आने वाले मध्यप्रदेश और भारत का भविष्य तय करने वाला है। आप के सामने 2 ही विकल्प है, एक कांग्रेस जिसने इस प्रदेश को बंटाधार और बीमारू राज्य बना कर छोड़ रखा था। और दूसरी ओर है मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा जिसने, 18 साल में मध्य प्रदेश के कोने-कोने में विकास कर, दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की दी। मैं (मध्य-प्रदेश) के पड़ोसी राज्य गुजरात से आता हूँ, बचपन से ही महाकाल के दर्शन करने के लिए आता था। अहमदाबाद से दाहोद आते-आते हमें गाड़ी में नींद आ जाती थी मगर जैसे ही गाड़ी गड्ढे में धड़ाम से घुसती थी, नींद खुलते ही हमें समझ या जाता था कि बंटाधार के शासन वाले मध्य प्रदेश पहुँच चुके हैं। मगर आज भारतीय जनता पार्टी के शासन और शिवराज जी के नेतृत्व में पिछले 18 सालों में सड़कों का जाल बिछा कर मध्यप्रदेश को एक अग्रणी राज्य बनाने का काम किया है। मध्य प्रदेश, शहरों और उज्जैन का विकास और गांवों और गरीबों का कल्याण भारतीय जनता पार्टी के शासन में हुआ है।

2002 में जब कांग्रेस पार्टी ने सरकार छोड़ी तब मध्य प्रदेश का बजट सिर्फ 23000 करोड़ था, और जब भारतीय जनता पार्टी सत्ता मे आई तो 23000 करोड़ के बजट को 3,15,000 करोड़ तक पहुंचा दिया। शिक्षा के बजट को 2456 करोड़ से 38000 करोड़ तक पहुंचा दिया और प्रति व्यक्ति आय को जो विकास का मानदंड माना जाता है, उसे 11000 से बढ़ाकर 1,40,000 भारतीय जनता पार्टी ने करके दिखाया है। ये बंटाधार की सरकार 60,000 किलोमीटर की सड़क छोड़कर गई थी, लेकिन आज मध्य प्रदेश में 5,10,000 किलोमीटर रोड बनाने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया है।

कमलनाथ भाषण में किसानों के उद्धार की बात करते हैं, उन्हें शर्म कर अपने गिरेबान में झांकना चाहिए कि उनके समय में सिर्फ 440000 टन गेहूं खरीदा जाता था, लेकिन अब भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 71 लाख मैट्रिक टन गेहूं किसानों का एमएसपी पर खरीदने का काम किया है। कांग्रेस पार्टी युवाओं के लिए केवल 620 मेडिकल सीटें छोड़ कर गए थे, भारतीय जनता पार्टी ने उसे बढ़ाकर 4000 तक पहुंचा, आईटीआई की संख्या 159 से 1014 तक पहुंचाया, कमलनाथ के राज्य में कानून और व्यवस्था की धज्जियां उड़ रखी थी इसलिए मात्र 64 लाख पर्यटक आते थे, लेकिन भाजपा के शासन में पर्यटकों की संख्या 64 लाख से बढ़कर 9 करोड़ हो गई। यह तथ्य और आंकड़ें इस बात के साक्ष्य है कि भाजपा ने विकास को कितना महत्व दिया है और मोदी जी ने अनेक विकास के कार्य किए हैं। लेकिन जनता यह बात याद रखें कि आपका महत्वपूर्ण वोट मात्र एक एमएलए का चुनाव नहीं करेगा, आपका वोट मध्य प्रदेश और भारत का भविष्य तय करेगा।

9 साल में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस देश के अंदर भारी परिवर्तन करने का काम किया है, कांग्रेस पार्टी, कमलनाथ और बंटाधार की पार्टी 70-70 साल से धारा 370 को हटाती नहीं थी, 2019 में जनता ने मोदी जी की झोली कमल से भर दी और वे फिर से प्रधानमंत्री बने फिर 05 अगस्त 2019 की सुबह को धारा 370 को संसद में समाप्त करने का काम कर दिखाया। उस वक्त कांग्रेसी राहुल बाबा सरकार का विरोध कर कहते थे कि धारा 370 को हटाने से कश्मीर में खून की नदियां बह जाएंगी अब खून की नदियां छोड़ो, कंकड़ चलाने तक की किसी की भी हिम्मत नहीं हुई। श्री नरेंद्र मोदी जी ने आज हमारे कश्मीर को, भारत माता के मुकुटमणि को, हमेशा के लिए भारत के साथ जोड़ने का काम कर दिया है।

जब से देश आजाद हुआ है तब से कांग्रेस पार्टी राम मंदिर के मुद्दे को लटका, भटका और अटका रही थी, लेकिन 2019 के आम चुनाव में मध्यप्रदेश की जनता ने ढेर सारी सीट जिताकर मोदी जी को दूसरी बार प्रधानमंत्री बनाया। राहुल गांधी 2014 से 2019 पार्टी के अध्यक्ष रहकर हर चुनाव में कहते थे कि भाजपा वाले मंदिर वही बनाएंगे मगर तिथि नहीं बताएंगे, मगर अब राहुल गांधी जी को तिथि जान लेनी चाहिए, 22 जनवरी 2024 को श्री नरेंद्र मोदी जी प्राण प्रतिष्ठा में जाने वाले हैं उसी तारीख पर उसी अयोध्या में उसी जगह पर राम लला विराट मंदिर के अंदर प्रस्थापित होंगे। भाजपा शासन में महाकाल लोक बना, दुनिया भर से लोगों ने महाकाल लोक का दर्शन किया सब ही ने इसकी भरपूर प्रशंसा करी है, केवल कमलनाथ के अलावा। सिर्फ महाकाल लोक नहीं, श्री नरेंद्र मोदी जी के शासन में काशी विश्वनाथ कॉरीडोर बना, सोमनाथ का मंदिर सोने का बन रहा है, बद्रीनाथ और केदारनाथ का पुनरुद्धार हुआ और भारत चंद्रयान से चंद्रमा पर भी पहुंच गया। भाजपा कि सरकारें कितना भी विकास करे लेकिन कांग्रेस को विरोध करने की आदत पड़ चुकी है, ट्रिपल तलाक हटाने पर भी कांग्रेस ने कहा था मत हटाओ, हम धारा 370 हटाते हैं वो कहते हैं मत हटाइए, हम सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक कर पाकिस्तान को सीधा करने का काम करते हैं, उसमें भी उनको आपत्ति रही। कांग्रेस के शासनकाल में पाकिस्तान से आयें दिन आलिया, मालिया, जमालिया देश में प्रवेश कर जाते थे और बम धमाके कर पाकिस्तान चले जाते थे और कोई जवाब नहीं देता था। परंतु मोदी जी के समय में उरी और पुलवामा हमलें में पाकिस्तान से आए आतंकवादी भूल गए थे की सरकार बदल चुकी थी और मौनी बाबा मनमोहन सिंह की सरकार न होकर अब यहां भारतीय जनता पार्टी के श्री नरेंद्र मोदी की सरकार है। आपको ज्ञात हो कि 10 दिन के भीतर ही पाकिस्तान के घर में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक कर आतंकवादियों की धज्जियां उड़ाने का काम सेना के जवानों के किया है लेकिन इसका भी कांग्रेस ने विरोध किया है। देशभर के लोग और दुनियाभर के राष्ट्राध्यक्ष G-20 में आकर आनंद, हर्ष और गौरव की अनुभूति कर रहे थे, उसमे भी कांग्रेस ने विरोध कर दिया। महात्मा गांधी की समाधि पर दुनिया के सारे राष्ट्राध्यक्ष खड़े होकर जब उन्हें श्रद्धांजलि देते है, हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है मगर इसमें भी कांग्रेस का स्वभाव ही है विरोध करना।

10 साल में सोनिया गांधी और मनमोहन की कांग्रेस सरकार ने भारत के अर्थतंत्र को 11वें नंबर पर छोड़ कर गए थे लेकिन मोदी जी ने भारत के अर्थतंत्र को पांचवें नंबर पर लाकर खड़ा कर दिया है और वह भी मात्र 9 साल के भीतर यह करके दिखाया है। इसके साथ ही आगामी 2 साल में भारत का अर्थतंत्र दुनिया में तीसरे पायदान पर रहेगा। भाजपा सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश को सुरक्षित करने का, सीमाओं को चाक चौबंद, वामपंथी उग्रवाद पर लगाम, कश्मीर में शांति स्थापित और पीएफआई जैसे संगठन के 250 से ज्यादा एक्टिविस्ट को पकड़कर पीएफआई पर प्रतिबंध लगाने जैसे अनेकों कार्य किये है। कांग्रेस पार्टी पीएफआई पर लगे प्रतिबंध, राम मंदिर निर्माण का विरोध करती है और जब नर्मदा का जयकारा भी लगते हैं तब भी उनको पसंद नहीं आता। जब संत रविदास का मंदिर बनाते हैं तो वह भी पसंद नहीं आता है। मोदी जी के नेतृत्व में जो विकास हुआ है और मध्यप्रदेश में विगत 18 साल में श्री शिवराज जी के नेतृत्व में जो विकास हुआ है इसका जवाब कमलनाथ और बंटाधार की टीम के पास भी नहीं है। ये तीन परिवार, गांधी परिवार, कमलनाथ-नकुलनाथ और

दिग्विजय सिंह और उनके बेटे जयवर्धन ने मध्य प्रदेश को बर्बाद करने के अलावा कोई और काम नहीं किया है।

हर जगह सड़कों पर कहीं न कहीं फ्लाईओवर निर्माणधीन है और इंदौर में भी मेट्रो का कार्य प्रगति पर है। इंफ्रास्ट्रक्चर के 9 लाख करोड़ के काम श्री नरेंद्र मोदी सरकार ने एक ही बजट में करके दिखाए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने 9 साल में 31 लाख करोड़ मध्य प्रदेश के विकास के लिए खर्च किए हैं। सोनिया और मनमोहन के 10 साल और नरेंद्र मोदी जी के 9 साल में किसने मध्य प्रदेश का विकास किया इसकी चर्चा के लिए समय और जगह आप तय करके बता दीजिए हमारे युवा मोर्चा का एक कार्यकर्ता भी आपको जवाब दे देगा। भारतीय जनता पार्टी ने अपने 18 साल के शासन में विकास करने का काम किया है और मध्य प्रदेश में उद्योग को लाने का काम किया है, मध्य प्रदेश की बच्चियों को पढ़ाई-लिखाई कराने का काम किया है, लाड़ली बहना योजना देने का काम किया है। मोदी जी ने 130 करोड़ भारतवासियों को कोरोना के दोनों टीके लगाकर भारत को कोरोना से सुरक्षित करने का काम किया है। हर गरीब के घर में 5 किलो अनाज पहुंचाने का काम किया, लगभग 65 लाख गरीबों के घर में नल से जल पहुंचा, मध्य प्रदेश के 93 लाख किसानों को भाजपा की दोनों (केंद्र-राज्य) सरकार 12000 प्रति साल दे रही है, 70 करोड़ लोगों को 5 लाख तक के पूरे स्वास्थ्य का खर्चा आज भारतीय जनता पार्टी की सरकार उठा रही है, 80 लाख से ज्यादा शौचालय बनवाकर महिलाओं को सम्मानित करने का काम किया और 82 लाख से ज्यादा माताओं को उज्जवला गैस का कनेक्शन देने का काम किया, और 45 लाख गरीबों को घर देने का काम मोदी जी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया।

कमलनाथ को मध्यप्रदेश की जनता को बताना चाहिए यदि उन्होंने इतने सालों तक राज्य में कांग्रेस के राज्य में विकास किया होता तो भाजपा कि सरकार यहां कि जनता कि भलाई का काम कैसे कर पाती। सच तो ये है कि कमलनाथ जी ने प्रदेश की जनता के हितों के लिए कुछ किया ही नहीं, मध्यप्रदेश के 5 करोड़ लोगों को जीवन की सभी सुविधायें देने का काम भी श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया है। जनता को राज्य में ऐसी सरकार चुननी चाहिए जो देश को सुरक्षित, समृद्ध और गरीब कल्याण करने मे श्री नरेंद्र मोदी जी का समर्थन करें। मध्यप्रदेश में ऐसी सरकार चुनी जानी चाहिए जो पूरी दुनिया में भारत को नंबर 1 बनाने में श्री नरेंद्र मोदी जी का हाथ बटायें। ▪

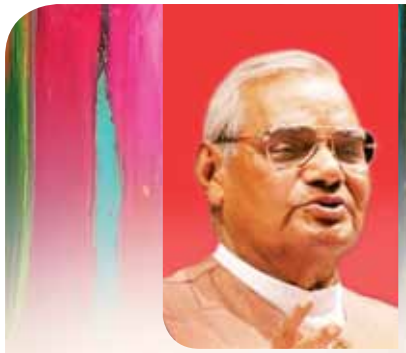

जम्मू की पुकार

अटल बिहारी वाजपेयी

अत्याचारी ने आज पुन: ललकारा,
अन्यायी का चलता है, दमन-दुधारा।

आँखों के आगे सत्य मिटा जाता है,
भारतमाता का शीश कटा जाता है।

क्या पुन: देश टुकड़ों में बँट जाएगा?
क्या सबका शोणित पानी बन जाएगा?

कब तक दानव की माया चलने देंगे?
कब तक भस्मासुर को हम छलने देंगे?

कब तक जम्मू को यों ही जलने देंगे?
कब तक जुल्मों की मदिरा ढलने देंगे?

चुपचाप सहेंगे कब तक लाठी गोली?
कब तक खेलेंगे दुश्मन खूं से होली?

प्रहलाद परीक्षा की बेला अब आई,
होलिका बनी देखो अब्दुल्लाशाही।

माँ-बहनों का अपमान सहेंगे कब तक?
भोले पांडव चुपचाप रहेंगे कब तक?

आखिर सहने की भी सीमा होती है,
सागर के उर में भी ज्वाला सोती है।

मलयानिल कभी बवंडर बन ही जाता,
भोले शिव का तीसरा नेत्र खुल जाता।

जिनको जन-धन से मोह, प्राण से ममता,
वे दूर रहें अब "पांचजन्य' है बजता।

जो विमुख युद्ध से, हठी क्रूर, कादर हैं,
रणभेरी सुन कम्पित जिन के अंतर हैं।

वे दूर रहें, चूड़ियाँ पहन घर बैठें,
बहनें थूकें, माताएँ कान उमेठें

जो मानसिंह के वंशज सम्मुख आएँ,
फिर एक बार घर में ही आग लगाएँ।

पर अन्यायी की लंका अब न रहेगी,
आने वाली संतानें यूँ न कहेंगी।

पुत्रों के रहते कटा जननि का माथा,
चुप रहे देखते अन्यायों की गाथा।

अब शोणित से इतिहास नया लिखना है,
बलि-पथ पर निर्भय पाँव आज रखना है।

आओ खण्डित भारत के वासी आओ,
काश्मीर बुलाता, त्याग उदासी आओ॥

शंकर का मठ, कल्हण का काव्य जगाता,
जम्मू का कण-कण त्राहि-त्राहि चिल्लाता।

लो सुनो, शहीदों की पुकार आती है,
अत्याचारी की सत्ता थर्राती है॥

उजड़े सुहाग की लाली तुम्हें बुलाती,
अधजली चिता मतवाली तुम्हें जगाती।

अस्थियाँ शहीदों की देतीं आमन्त्रण,
बलिवेदी पर कर दो सर्वस्व समर्पण।

कारागारों की दीवारों का न्यौता,
कैसी दुर्बलता अब कैसा समझौता?

हाथों में लेकर प्राण चलो मतवालो,
सीने में लेकर आग चलो प्रणवालो।

जो कदम बढ़ा अब पीछे नहीं हटेगा,
बच्चा-बच्चा हँस-हँस कर मरे मिटेगा।

वर्षों के बाद आज बलि का दिन आया,
अन्याय-न्याय का चिर-संघर्षण आया।

फिर एक बार भारत की किस्मत जागी,
जनता जागी, अपमानित अस्मत जागी।

देखो स्वदेश की कीर्ति न कम हो जाये,
कण-कण पर फिर बलि की छाया छा जाए।

कमल का फूल ही हमारा परमानेंट उम्मीदवार

मैं या से यही प्रार्थना की है कि मध्यप्रदेश की जनता की जिंदगी में सुख-शांति और रिद्धि-सिद्धि आए। प्रदेश की जनता सुखी रहे, सब निरोग रहें, सबका मंगल व कल्याण हो, मध्यप्रदेश और अपना देश तेजी से आगे बढ़े।

कांग्रेस ने गरीब-आदिवासियों का शोषण किया

मैं सरकार नहीं परिवार चलाता हूं, ये मेरा बहुत बड़ा परिवार है, लेकिन कांग्रेस ने हमेशा से ही गरीब और आदिवासियों के साथ अन्याय और शोषण किया है। अगर आदिवासियों के साथ किसी ने अन्याय किया और आदिवासियों का सबसे बड़ा दुश्मन कोई है तो वह कांग्रेस है। कभी सम्मान नहीं किया, समस्या का समाधान नहीं किया। कांग्रेस और कमलनाथ ने संबल योजना बंद कर दी। मैं बेटियों की शादी करवा रहा था वो भी बंद कर दी, तीर्थ दर्शन योजना भी बंद कर दी, मेधावी छात्र-छात्राओं के लैपटॉप बंद कर दिए। प्रियंका गांधी कह रही थी कि, शिवराज मामा आदिवासियों के पैरों में चप्पल-जूते पहनाता है, हां पहनाऊंगा क्योंकि गरीब के पैर में कांटा चुभता है तो मेरे सीने में चुभता है, इसलिए मैं चप्पल-जूते पहनाता हूं। कांग्रेस ने कभी भी पेसा कानून लागू नहीं किया। पेसा भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने लागू किया।

हम काम बता रहे हैं कांग्रेसी श्मशान में तंत्र क्रिया कराते हैं

हम जनता को अपने काम बता रहे हैं और कुछ लोग श्मशान घाट पर तांत्रिक क्रियाएं करा रहे हैं। लोकतंत्र में साधना और उपासना अगर किसी की होती है तो जनता की होती है। लोकतंत्र, जनता के विश्वास को जीतने का माध्यम है। जनता की सेवा करो, प्रदेश का विकास करो, लोगों का कल्याण करो। हमने विकास और कल्याण किया है। इसलिए जनता से वोट मांगने जा रहे हैं। श्मशान घाट में पूजा करने वालों कैसे भला होगा देश का, प्रदेश का और प्रदेश की जनता का। पूजा करना है तो सात्विक पूजा करो, महाकाल महाराज के दरबार में। तकलीफ और आश्चर्य होता है कि तांत्रिक क्रियाएं करा रहे है। इसका मतलब आपको अपने ऊपर भरोसा ही नहीं है।

कांग्रेस से सवाल

कांग्रेस ने अपने सवा साल के कार्यकाल के दौरान गरीबों को पीएम आवास योजना के मकान क्यों नहीं दिए। कांग्रेस बताए उन्होंने संबल योजना क्यों बंद कर दी थी। बैगा, भारिया, सहरिया बहनों के 1 हजार रुपए देना क्यों बंद किए। कांग्रेस ने जनता को बचाने के लिए कोविड की तैयारी क्यों नहीं की? क्या ये पैसा आईफा में लगा रहे थे। मध्यप्रदेश को तबाह और बर्बाद करने वाले अब श्मशान घाटों में जाकर बैठ रहे हैं। कांग्रेस को इन सवालों का जवाब देना होगा।

भाजपा मतलब विकास और गरीब कल्याण

कांग्रेस के शासनकाल में बीमारू कहे जाने वाला मध्यप्रदेश, भाजपा सरकार में विकसित होकर स्वर्णिम प्रदेश बनने की ओर अग्रसर है। पिछले 20 सालों में भाजपा शासनकाल के दौरान मध्यप्रदेश सशक्त, समृद्ध और स्वावलंबी बना है. पिछले 20 वर्षों में जनता ने भाजपा पर भरोसा दिखाया है, जिसके परिणाम स्वरूप आज मध्यप्रदेश देश की टॉप 10 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है।

आज मध्यप्रदेश गरीब कल्याण, महिला उत्थान एवं सम्पूर्ण विकास का मॉडल बन गया है। भाजपा सरकार ने नागरिकों के लिए जनकल्याण की योजनाएं लाई, जिसके चलते आज मध्यप्रदेश में 1.36 करोड़ से भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं।

बहनों का लाड़ला कैसे बन गया

लाड़ली बहना योजना के बाद बहनों की जिंदगी बदल गई है। काम करता हूं तो कांग्रेस को तकलीफ होती है। कहते हैं दुबला-पतला मामा कहां से आ गया, बहनों का लाड़ला कैसे बन गया। कांग्रेस ने मेरा श्राद्ध तक करवा दिया, लेकिन बहनों का प्यार मुझे राख के ढेर से भी जिंदा कर देगा। कांग्रेस ने कभी भी बहनों के साथ न्याय नहीं किया है। लाड़ली बहनों की राशि बढ़ाकर 3000 रूपए की जाएगी। इस धरती पर जो संसाधन है उन संसाधनों पर जिनका हक है उन्हें उनका हक मिलेगा। ये धरती सबकी है, जल, जमीन, जंगल सबका है। कई लोग इसका उपयोग करते हैं और उपयोग करके धन कमाते हैं। ऐसे लोगों से टैक्स लूंगा और गरीबों में बाटूंगा।

कमल ही हमारा उम्मीदवार

कमल का फूल ही हमारा परमानेंट उम्मीदवार है। घर-घर और बूथ स्तर पर भाजपा की राज्य व केंद्र सरकार के कामों को लेकर जाना है और इस बार फिर से मध्यप्रदेश में कमल खिलाना है, भाजपा की सरकार बनाना है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार ही मध्यप्रदेश को विकास की ओर अग्रसर कर सकेगी। ▪

जगद्गुरू रामभद्राचार्य जी की भूमिका बहुत बड़ी

अष्टाध्यायी भारत के भाषा विज्ञान का, भारत की बौद्धिकता का और हमारी शोध संस्कृति का हजारों साल पुराना ग्रंथ है। कैसे एक-एक सूत्र में व्यापक व्याकरण को समेटा जा सकता है, कैसे भाषा को 'संस्कृत विज्ञान' में बदला जा सकता है, महर्षि पाणिनी की ये हजारों वर्ष पुरानी रचना इसका प्रमाण है। दुनिया में इन हजारों वर्षों में कितनी ही भाषाएँ आईं, और चली गईं। नई भाषाओं ने पुरानी भाषाओं की जगह ले ली। लेकिन, हमारी संस्कृत आज भी उतनी ही अक्षुण्ण, उतनी ही अटल है। संस्कृत समय के साथ परिष्कृत तो हुई, लेकिन प्रदूषित नहीं हुई। इसका कारण संस्कृत का परिपक्व व्याकरण विज्ञान है। केवल 14 माहेश्वर सूत्रों पर टिकी ये भाषा हजारों वर्षों से शस्त्र और शास्त्र, दोनों ही विधाओं की जननी रही है। संस्कृत भाषा में ही ऋषियों के द्वारा वेद की ऋचाएँ प्रकट हुई हैं। इसी भाषा में पतंजलि के द्वारा योग का विज्ञान प्रकट हुआ है। इसी भाषा में धन्वंतरि और चरक जैसे मनीषियों ने आयुर्वेद का सार लिखा है। इसी भाषा में ऋषि पाराशर ने कृषि को श्रम के साथ-साथ शोध से जोड़ने का काम किया। इसी भाषा में हमें भरतमुनि के द्वारा नाट्यशास्त्र और संगीतशास्त्र का उपहार मिला है। इसी भाषा में कालिदास जैसे विद्वानों ने साहित्य के सामर्थ्य से विश्व को हैरान किया है। और, इसी भाषा में अंतरिक्ष विज्ञान, धनुर्वेद और युद्ध-कला के ग्रंथ भी लिखे गए हैं। और ये तो केवल कुछ ही उदाहरण दिये हैं। ये लिस्ट इतनी लंबी है कि आप एक राष्ट्र के तौर पर भारत के विकास का जो भी पक्ष देखेंगे, उसमें आपको संस्कृत के योगदान के दर्शन होंगे। आज भी दुनिया की बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटीज में संस्कृत पर रिसर्च होती है। अभी हमने ये भी देखा है कि कैसे भारत को जानने के लिए लिथुआनिया देश की राजदूत ने भी संस्कृत भाषा सीखी है। यानि संस्कृत का प्रसार पूरी दुनिया में बढ़ रहा है।

गुलामी के एक हजार साल के कालखंड में भारत को तरह-तरह से जड़ों से उखाड़ने का प्रयास हुआ। इन्हीं में से एक था- संस्कृत भाषा का पूरा विनाश। हम आजाद हुए लेकिन जिन लोगों में गुलामी की मानसिकता नहीं गई, वो संस्कृत के

रामभद्राचार्य जी हमारे देश के ऐसे संत है, जिनके अकेले ज्ञान पर दुनिया की कई यूनिवर्सिटीज स्टडी कर सकती हैं। बचपन से ही भौतिक नेत्र न होने के बावजूद आपके प्रज्ञा चक्षु इतने विकसित हैं, कि आपको पूरे वेद-वेदांग कंठस्थ हैं।

आप सैकड़ों ग्रन्थों की रचना कर चुके है। भारतीय ज्ञान और दर्शन में "प्रस्थानत्रयी' को बड़े-बड़े विद्वानों के लिए भी कठिन माना जाता है। जगद्गुरू जी उनका भी भाष्य आधुनिक भाषा में लिख चुके है।

प्रति बैर भाव पालते रहे। कहीं कोई लुप्त भाषा का कोई शिलालेख मिलने पर ऐसे लोग उसका महिमा-मंडन करते हैं लेकिन हजारों वर्षों से मौजूद संस्कृत का सम्मान नहीं करते। दूसरे देश के लोग मातृभाषा जानें तो ये लोग प्रशंसा करेंगे लेकिन संस्कृत भाषा जानने को ये पिछड़ेपन की निशानी मानते हैं। इस मानसिकता के लोग पिछले एक हजार साल से हारते आ रहे हैं और आगे भी कामयाब नहीं होंगे।

संस्कृत केवल परम्पराओं की भाषा नहीं है, ये हमारी प्रगति और पहचान की भाषा भी है। बीते 9 वर्षों में हमने संस्कृत के प्रसार के लिए व्यापक प्रयास किए हैं। आधुनिक संदर्भ में अष्टाध्यायी भाष्य जैसे ग्रंथ इन प्रयासों को सफल बनाने में बड़ी भूमिका निभाएंगे।

रामभद्राचार्य जी हमारे देश के ऐसे संत है, जिनके अकेले ज्ञान पर दुनिया की कई यूनिवर्सिटीज स्टडी कर सकती हैं। बचपन से ही भौतिक नेत्र न होने के बावजूद आपके प्रज्ञा चक्षु इतने विकसित हैं, कि आपको पूरे वेद-वेदांग कंठस्थ हैं। आप सैकड़ों ग्रन्थों की रचना कर चुके है। भारतीय ज्ञान और दर्शन में 'प्रस्थानत्रयी' को बड़े-बड़े विद्वानों के लिए भी कठिन माना जाता है। जगद्गुरू जी उनका भी भाष्य आधुनिक भाषा में लिख चुके है।

इस स्तर का ज्ञान, ऐसी मेधा व्यक्तिगत नहीं होती। ये मेधा पूरे राष्ट्र की धरोहर होती है। और इसीलिए, हमारी सरकार ने 2015 में स्वामी जी को पद्मविभूषण से सम्मानित किया था। स्वामी जी जितना धर्म और आध्यात्म के क्षेत्र में सक्रिय रहते है, उतना ही समाज और राष्ट्र के लिए भी मुखर रहते है। मैंने जब स्वच्छ भारत अभियान के 9 रत्नों में आपको नामित किया था, तो वो जिम्मेदारी भी आपने उतनी ही निष्ठा से उठाई थी। मुझे खुशी है कि स्वामी जी ने देश के गौरव के लिए जो संकल्प किए थे, वो अब पूरे हो रहे हैं। हमारा भारत अब स्वच्छ भी बन रहा है, और स्वस्थ भी बन रहा है।

माँ गंगा की धारा भी निर्मल हो रही है। हर देशवासी का एक और सपना पूरा करने में जगद्गुरू रामभद्राचार्य जी की बहुत बड़ी भूमिका रही है। अदालत से लेकर अदालत के बाहर तक जिस राम-मंदिर के लिए आपने इतना योगदान दिया, वो भी बनकर तैयार होने जा रहा है। और मुझे अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा, प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने का निमंत्रण मिला है। इसे भी मैं अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मानता हूं।

सभी संतगण, आजादी के 75 वर्ष से आजादी के 100 वर्ष के सबसे अहम कालखंड को यानि 25 साल, देश जो अब से अमृतकाल के रूप में देख रहा है। इस अमृतकाल में देश, विकास और अपनी विरासत को साथ लेकर चल रहा है। हम अपने तीर्थों के विकास को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। चित्रकूट तो वो स्थान है जहां आध्यात्मिक आभा भी है, और प्राकृतिक सौन्दर्य भी है। 45 हजार करोड़ रुपए की केन बेतवा लिंक परियोजना हो, बुंदेलखंड एक्स्प्रेस वे हो, डिफेंस कॉरिडॉर हो, ऐसे प्रयास इस क्षेत्र में नई संभावनाएं बनाएंगे। कामना और प्रयास है, चित्रकूट, विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचे। ▪

यह चुनाव सामान्य चुनाव नहीं

भाजपा भारतीय सनातन की रक्षा, संस्कार और देश को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी निभा रही है। जो पार्टियां एक-दूसरे के कार्यकर्ताओं की हत्या करती है।

एक-दूसरे को गाली देते हैं, लेकिन भाजपा को हराने के लिए एकजुट होने का दिखावा करते हैं। इनकी कथनी और करनी में इनके संस्कार साफ जाहिर हो रहे हैं। ये सत्ता पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। भाजपा गरीबों के हितों का, उनकी जरूरतों का, ध्यान रखती है।

मोदी राज में देश की संस्कृति और सभ्यता का दीदार

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री कन्यादान, लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना जैसी कई योजनाएं लेकर आएं हैं। यह ऐसी योजनाएं है जो लाखों लोगों की जिंदगी संवारने का काम कर रही हैं।

पहले की सरकारों के समय विदेशी मेहमानों को ताजमहल दिखाने ले जाते थे, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के राज में देश की संस्कृति और सभ्यता के दीदार करने अब विदेशी मेहमान गंगा आरती और गुजरात रिवर फ्रंट जैसे स्थान देखना चाहते हैं। महाकाल लोक घूमना चाहते हैं यही हैं भाजपा के कार्य है।

भारत के टुकड़े करने वालों के साथ कांग्रेस

भारत के टुकड़े करने वालों के साथ कांग्रेस और उसके साथी खड़े हैं। हम बाहरी दुश्मन से तो लड़ सकते हैं, लेकिन देश के अंदर बैठे दुश्मनों से केवल आपके वोट की ताकत से ही निपट सकते हैं।

यह चुनाव सामान्य चुनाव नहीं

यह सामान्य चुनाव नहीं बहुत महत्वपूर्ण चुनाव है, यह ऐसे वक्त में हो रहा है जब कांग्रेस पार्टी गठबंधन बनाकर श्री मोदी जी और भाजपा को समाप्त करना चाहती है। ▪

प. पू. सरसंघचालक डॉ. श्री मोहन जी भागवत द्वारा विजयादशमी उत्सव के अवसर पर दिये उद्‌बोधन का सारांश

भारत के विशिष्ट विचार व दृष्टि के कारण संपूर्ण विश्व के चिंतन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दिशा जुड़ गई

उभरते भारत की शक्ति, बुद्धि तथा युक्ति की झलक चंद्रयान के प्रसंग में भी विश्व ने देखी। हमारे वैज्ञानिकों के शास्त्र ज्ञान व तन्त्र कुशलता के साथ नेतृत्व की इच्छा शक्ति जुड़ गई।

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंतरिक्ष युग के इतिहास में पहली बार भारत का विक्रम लैंडर उतरा। समस्त भारतीयों का गौरव व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला यह कार्य सम्पन्न करने वाले वैज्ञानिक तथा उनको बल देने वाला नेतृत्व संपूर्ण देश में अभिनंदित हो रहा है।

दानवता पर मानवता की पूर्ण विजय के शक्ति पर्व के नाते प्रतिवर्ष हम विजयादशमी का उत्सव मनाते हैं। इस वर्ष यह पर्व हमारे लिए गौरव, हर्षोल्लास तथा उत्साह बढ़ाने वाली घटनाएँ लेकर आया है

बीते वर्ष भर हमारा देश जी-20 नामक प्रमुख राष्ट्रों की परिषद का यजमान रहा। वर्ष भर सदस्य राष्ट्रों के राष्ट्र प्रमुख, मंत्रीगण, प्रशासक तथा मनीषियों के अनेक कार्यक्रम भारत में अनेक स्थानों पर सम्पन्न हुए। भारतीयों के आत्मीय आतिथ्य का अनुभव, भारत का गौरवशाली अतीत तथा वर्तमान की उमंग भरी उड़ान सभी देशों के सहभागियों को प्रभावित कर गई। अफ्रीकी यूनियन को सदस्य के नाते स्वीकृत कराने में तथा पहले ही दिन परिषद का घोषणा प्रस्ताव सर्व सहमति से पारित करने में भारत की प्रामाणिक सद्‌भावना तथा राजनयिक कुशलता का अनुभव सबने पाया। भारत के विशिष्ट विचार व दृष्टि के कारण संपूर्ण विश्व के चिंतन में **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की दिशा जुड़ गई। जी-20 का अर्थ केन्द्रित विचार अब मानव केन्द्रित हो गया। भारत को विश्व के मंच पर एक प्रमुख राष्ट्र के नाते दृढ़ता पूर्वक स्थापित करने का अभिनंदनीय कार्य इस प्रसंग के माध्यम से हमारे नेतृत्व ने किया है।

इस बार हमारे देश के खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों में पहली बार 100 से अधिक 107 पदक (28 सुवर्ण, 38 रजत तथा 41 कांस्य) जीतकर हम सब का उत्साह वर्धन किया है। उनका हम अभिनन्दन करते है। उभरते भारत की शक्ति, बुद्धि तथा युक्ति की झलक चंद्रयान के प्रसंग में भी विश्व ने देखी। हमारे वैज्ञानिकों के शास्त्रज्ञान व तन्त्र कुशलता के साथ नेतृत्व की इच्छा शक्ति जुड़ गई। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंतरिक्ष युग के इतिहास में पहली बार भारत का विक्रम लैंडर उतरा। समस्त भारतीयों का गौरव व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला यह कार्य सम्पन्न करने वाले वैज्ञानिक तथा उनको बल देने वाला नेतृत्व संपूर्ण देश में अभिनंदित हो रहा है।

संपूर्ण राष्ट्र के पुरुषार्थ का उद्‌गम उस राष्ट्र का वैश्विक प्रयोजन सिद्ध करने वाले राष्ट्रीय आदर्श होते हैं। इसलिए हमारे संविधान की मूल प्रति के एक पृष्ठ पर जिनका चित्र अंकित है ऐसे धर्म के मूर्तिमान प्रतीक श्रीराम के बालक रूप का मंदिर अयोध्याजी में बन रहा है। आने वाली 22 जनवरी को मंदिर के गर्भगृह में श्रीरामलला

की प्राण प्रतिष्ठा होगी यह घोषणा हो चुकी है। व्यवस्थागत कठिनाइयों के तथा सुरक्षाओं की सावधानियों के चलते उस पावन अवसर पर अयोध्या में बहुत मर्यादित संख्या ही उपस्थित रह सकेगी । श्रीराम अपने देश के आचरण की मर्यादा के प्रतीक है, कर्तव्य पालन के प्रतीक है, स्नेह व करुणा के प्रतीक है। अपने-अपने स्थान पर ही ऐसा वातावरण बने। राम मंदिर में श्रीरामलला के प्रवेश से प्रत्येक हृदय में अपने मन के राम को जागृत करते हुए मन की अयोध्या सजे व सर्वत्र स्नेह, पुरुषार्थ तथा सद्भावना का वातावरण उत्पन्न हो ऐसे, अनेक स्थानों पर परन्तु छोटे छोटे आयोजन करने चाहिए।

शताब्दियों की संकट परंपरा से जूझकर यशस्वी होकर अब हमारा भारत भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर निश्चित रूप से आगे बढ़ रहा है, इसका संकेत देने वाली इन घटनाओं के हम सब सौभाग्यशाली साक्षी हैं ।

सम्पूर्ण विश्व को अपने जीवन से अहिंसा, जीवदया व सदाचार सिखाने वाला सत्पथ देने वाले श्री महावीर स्वामी का 2550 वाँ निर्वाण वर्ष, विदेशियों के 350 साल के थोपे हुए पारतंत्र्य में से मुक्ति का मार्ग हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना तथा न्यायपूर्ण जनहितकारी संचालन के द्वारा दिखाने वाले छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का 350 वाँ वर्ष तथा अंग्रेजों के पारतंत्र्य से मुक्ति पाने के लिए सम्पूर्ण देश के जनमानस को अपने 'स्व' के स्वरूप का स्पष्ट व यथातथ्य दर्शन 'सत्यार्थ प्रकाश' द्वारा कराने वाले महर्षी दयानंद सरस्वती का 200 वाँ जन्म जयन्ती वर्ष हम संपन्न कर रहे है। आगामी वर्ष इस प्रकार के राष्ट्रीय पुरुषार्थ की शाश्वत प्रेरणा बनी दो विभूतियों का स्मरण वर्ष भी है। अस्मिता व स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वाली, उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति व पराक्रम के साथ साथ अपनी प्रशासन कुशलता व प्रजाहित दक्षता के लिए आदर्शभूत महारानी दुर्गावती का यह 500 वाँ जयंती वर्ष हैं। भारतीय महिलाओं के सर्वंगामी कर्तृत्व, नेतृत्व क्षमता, उज्ज्वल शील तथा जाज्वल्य देशभक्ति की वे देदीप्यमान आदर्श थीं।

ऐसे ही अपनी प्रजाहित दक्षता तथा प्रशासन पटुता के साथ, सामाजिक विषमता के जड़मूल से निर्मूलन के लिए जीवनभर अपनी संपूर्ण शक्ति लगाने वाले कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के शासक छत्रपति शाहूजी महाराज का यह 150 वाँ जयंती वर्ष है ।

देश की स्वतंत्रता की अलख जिन्होंने अपने जीवन के यौवनकाल से ही जगाना प्रारंभ किया, गरीबों के अन्नदान कार्यक्रम हेतु जिनका सुलगाया हुआ पहला चूल्हा आज भी तमिलनाडु में प्रदीप्त है और अपना काम कर रहा है, ऐसे तमिल संत श्रीमद् रामलिंग वल्ललार का 200 वाँ वर्ष अभी इसी महीने सम्पन्न हो गया । स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज की आध्यात्मिक सांस्कृतिक जागृति तथा सामाजिक विषमता के सम्पूर्ण निर्मूलन के लिए वे जीवन भर कार्य करते रहे। इन प्रेरणास्पद विभूतियों के जीवन के स्मरण से हम सभी को अपनी स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के सम्पन्न होने के दिनों में सामाजिक समता, एकात्मता तथा अपने स्व की रक्षा का संदेश प्राप्त होता है।

अपने स्व को, अपनी पहचान को सुरक्षित रखना यह मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा व सहज प्रयास है। द्रुतगति से परस्पर निकट आने वाले विश्व में आजकल सभी राष्ट्रों में यह चिंता करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। संपूर्ण विश्व को एक ही रंग में रंगने का, एकरूपता का कोई भी प्रयास अब तक सफल नहीं रहा, न आगे सफल हो सकेगा। भारत की पहचान को, हिंदू समाज की अस्मिता को बनाए रखने का विचार स्वाभाविक तो है ही। आज के विश्व की वर्तमान कालीन समय की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए, अपने स्वयं के मूल्यों पर आधारित, काल सुसंगत, नया रूपरंग लेकर भारत खड़ा हो, यह विश्व की भी अपेक्षा है। मत संप्रदायों को लेकर उत्पन्न हुए कट्टरपन, अहंकार व उन्माद को विश्व झेल रहा है।

स्वार्थों के टकराव तथा अतिवादिता के कारण उत्पन्न होने वाले यूक्रेन के अथवा गाझा पट्टी के युद्ध जैसे कलहों का कोई निदान दिख नहीं रहा है। प्रकृति विरुद्ध जीवनशैली, स्वैरता तथा अनिर्बंध उपभोगों के कारण नई-नई शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। विकृतियाँ व अपराध बढ़ रहे हैं। आत्यंतिक व्यक्तिवाद के कारण परिवार टूट रहे है। प्रकृति के अमर्याद शोषण से प्रदूषण, वैश्विक तापमानवृद्धि, ऋतुक्रम में असंतुलन व तज्जन्य प्राकृतिक हादसे प्रतिवर्ष बढ़ रहे हैं। आतंकवाद, शोषण और अधिसत्तावाद को खुला मैदान मिल रहा है। अपनी अधूरी दृष्टि को लेकर विश्व इन समस्याओं का सामना नहीं कर सकता यह स्पष्ट हुआ है। इसलिए अपने सनातन मूल्यों व संस्कारों के आधार पर, भारत अपने उदाहरण से वास्तविक सुख शांति का नवपथ विश्व को दिखाए यह अपेक्षा जगी है।

इन परिस्थितियों की एक छोटी आवृत्ति भारत वर्ष में भी हमारे सम्मुख विद्यमान है। उदाहरणार्थ, हाल ही में हिमालय के क्षेत्र में हिमाचल और उत्तराखंड से लेकर सिक्किम तक लगातार प्राकृतिक आपदाओं का प्राणांतिक खेल हम देख रहे हैं। भविष्य में किसी गंभीर व व्यापक संकट का पूर्वाभास इन घटनाओं के द्वारा हो रहा हो ऐसी शंकाओं की चर्चा भी है।

देश की सीमा सुरक्षा, जल सुरक्षा तथा पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिए भारत की उत्तर सीमा को निश्चित करने वाला यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है, किसी भी कीमत पर सर्वथा रक्षणीय है। सुरक्षा, पर्यावरण, जन सांख्यिकी व विकास की दृष्टि से इस पूरे क्षेत्र को एक इकाई मानकर हिमालय क्षेत्र का विचार करना होगा। यह प्रकृतिरम्य क्षेत्र भूगर्भ शास्त्रीय दृष्टि से नया, अभी भी बनता जा रहा और इसलिए अस्थिर भी है। उसके भूपृष्ठ, भूगर्भ, जैव विविधता व जल संपदा की विशेषता को जाने बिना विकास की मनमानी योजनाएँ क्रियान्वित की गईं। इस खिलवाड़ के फलस्वरूप ही यह क्षेत्र व उसके चलते पूरा देश, संकट के कगार पर आने लगा है। हम सब जानते हैं कि भारत सहित पूर्व व दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों को जलापूर्ति करने वाला यही क्षेत्र है । इसी क्षेत्र में भारत की उत्तर सीमा पर चीन की दस्तक कई वर्षों से सुनाई दे रही है। इसलिए इस क्षेत्र का विशिष्ट भूगर्भशास्त्रीय, सामरिक व भूराजकीय महत्व है। उसको ध्यान में रखकर ही इस क्षेत्र का अलग दृष्टि से विचार करना होगा।

यद्यपि यह घटनाएँ हिमालय क्षेत्र में अधिक घट रही हैं, पूरे देश के लिए उनका एक स्पष्ट संकेत ध्यान में आता है। अधूरी, निपट जड़वादी तथा पराकोटि की उपभोगवादी दृष्टि पर आधारित विकास पथों के कारण, मानवता व प्रकृति धीरे-धीरे परंतु निश्चित रूप से विनाश की ओर अग्रसर हो रही हैं। संपूर्ण विश्व में यह चिंता बढ़ी है। उन असफल पथों को त्याग कर अथवा धीरे-धीरे वापिस मोड़कर भारतीय मूल्यों पर तथा भारत की समग्र एकात्म दृष्टि पर आधारित, काल सुसंगत व अद्यतन, अपना अलग विकास पथ भारत को बनाना ही पड़ेगा। यह भारत के लिए सर्वथा उपयुक्त तथा विश्व के लिए भी अनुकरणीय प्रतिमानक बन सकेगा। घिसीपिटी असफल राह पर बने रहने की, अंधानुकरण, जड़ता व पोथी निष्ठता की प्रवृत्ति छोड़नी पड़ेगी। उपनिवेशी मानसिकता से मुक्त होकर, विश्व से जो देशानुकूल है वही लेना पड़ेगा। अपने देश में जो है उसको युगानुकूल बनाते हुए, हम अपना स्व आधारित स्वदेशी विकासपथ अपनाएँ, यह समय की आवश्यकता

है । इस दृष्टि से कुछ नीतिगत परिवर्तन पिछले दिनों हुए है यह ध्यान में आता है। समाज में भी कृषि, उद्योग और व्यापार के, तत्संबंधित सेवाओं के क्षेत्र में, सहकारिता व स्वरोजगार के क्षेत्रों में, नए सफल प्रयोगों की संख्या वृद्धि भी निरंतर हो रही है। परंतु प्रशासन के क्षेत्र में, सभी क्षेत्रों में चिंतन करने वाले व दिशा देने वाले बुद्धिधर्मियों में, इस प्रकार की जागृति की और अधिक आवश्यकता है। शासन की 'स्व' आधारित युगानुकूल नीति, प्रशासन की तत्पर, सुसंगत व लोकाभिमुख कृति तथा समाज का मन, वचन, कर्म से सहयोग व समर्थन ही देश को परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ाएगा।

परंतु यह संभव न हो पाए, समाज की सामूहिकता छिन्न-भिन्न हो कर अलगाव व टकराव बढ़े, यह प्रयास भी बढ़ रहे हैं। अपने अज्ञान, अविवेक, परस्पर अविश्वास अथवा असावधानी के कारण समाज में कहीं-कहीं ऐसे अप्रत्याशित उपद्रव व फूट बढ़ती ही जाती दिखाई दे भी रही है। भारत के उत्थान का प्रयोजन विश्व-कल्याण ही रहा है। परन्तु इस उत्थान के स्वाभाविक परिणाम के नाते स्वार्थी, विभेदकारी तथा छल कपट के आधार पर अपने स्वार्थ का साधन करने वाली शक्तियाँ मर्यादित व नियंत्रित होती हैं, इसलिए उनके द्वारा निरंतर विरोध भी चलता है। यद्यपि यह शक्तियाँ किसी न किसी विचारधारा का आवरण ओढ़ लिया करती हैं, किसी मनलुभावन घोषणा अथवा लक्ष्य के लिए कार्यरत होने का छद्म रचती हैं, उनके वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होते हैं । प्रामाणिकता व निःस्वार्थ बुद्धि से काम करने वाले लोग किसी भी विचारधारा के हों, किसी भी तरह का कार्य करते हों, उनके लिए बाधा ही होते हैं।

आजकल इन सर्वभक्षी ताकतों के लोग अपने आपको सांस्कृतिक मार्क्सवादी या वोक (Woke) यानी जगे हुए कहते हैं । परंतु मार्क्स को भी उन्होंने 1920 दशक से ही भुला रखा है। विश्व की सभी सुव्यवस्था, मांगल्य, संस्कार, तथा संयम से उनका विरोध है। मुठ्ठी भर लोगों का नियंत्रण सम्पूर्ण मानवजाति पर हो इसलिए अराजकता व स्वैराचरण का पुरस्कार, प्रचार व प्रसार वे करते हैं। माध्यमों तथा अकादमियों को हाथ में लेकर देशों की शिक्षा, संस्कार, राजनीति व सामाजिक वातावरण को भ्रम व भ्रष्टता का शिकार बनाना उनकी कार्यशैली है। ऐसे वातावरण में असत्य, विपर्यस्त तथा अतिरंजित वृत्त के द्वारा भय, भ्रम तथा द्वेष आसानी से फैलता है। आपसी झगड़ों में उलझकर असमंजस व दुर्बलता मे फंसा व टूटा हुआ समाज, अनायास ही इन सर्वत्र अपनी ही अधिसत्ता चाहने वाली विध्वंसकारी ताकतों का भक्ष्य बनता है। अपनी परम्परा में इस प्रकार किसी राष्ट्र की जनता में अनास्था, दिग्भ्रम व परस्पर द्वेष उत्पन्न करने वाली कार्यप्रणाली को मंत्र विप्लव कहा जाता है।

देश में राजनीतिक स्वार्थों के कारण राजनीतिक प्रतिस्पर्धी को पराजित करने के लिए ऐसी अवांछित शक्तियों के साथ गठबंधन करने का अविवेक है। समाज पहले से ही आत्मविस्मृत होकर अनेक प्रकार के भेदों से जर्जर होकर, स्वार्थों की घातक प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या व द्वेष में उलझा है। इसलिये इन आसुरी शक्तियों को समाज या राष्ट्र को तोड़ना चाहने वाली अंदरूनी या बाहरी ताकतों का साथ भी मिलता है।

मणिपुर की वर्तमान स्थिति को देखते हैं तो यह बात ध्यान में आती है। लगभग एक दशक से शांत मणिपुर में अचानक यह आपसी फूट की आग कैसे लग गई? क्या हिंसा करने वाले लोगों में सीमापार के अतिवादी भी थे? अपने अस्तित्व के भविष्य के प्रति आशंकित मणिपुरी मैतेयी समाज और कुकी समाज के इस आपसी संघर्ष को सांप्रदायिक रूप देने का प्रयास क्यों और किसके द्वारा हुआ? वर्षों से वहाँ पर सबकी समदृष्टि से सेवा करने में लगे संघ जैसे संगठन को बिना कारण इसमें घसीटने का प्रयास करने में किसका निहित स्वार्थ है? इस सीमा क्षेत्र में नागा भूमि व मिजोरम के बीच स्थित मणिपुर में ऐसी अशांति व अस्थिरता का लाभ प्राप्त करने में किन विदेशी सत्ताओं को रुचि हो सकती है?

क्या इन घटनाओं की कारण परंपराओं में दक्षिण पूर्व एशिया की भू- राजनीति की भी कोई भूमिका है? देश में मजबूत सरकार के होते हुए भी यह हिंसा किनके बलबूते इतने दिन बेरोकटोक चलती रही है? गत 9 वर्षों से चल रही शान्ति की स्थिति को बरकरार रखना चाहने वाली राज्य सरकार होकर भी यह हिंसा क्यों भड़की और चलती रही?

आज की स्थिति में जब संघर्षरत दोनों पक्षों के लोग शांति चाह रहे हैं, उस दिशा में कोई सकारात्मक कदम उठता हुआ दिखते ही कोई हादसा करवा कर, फिर से विद्वेष व हिंसा भड़काने वाली ताकतें कौन सी हैं? इस समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता रहेगी। इस हेतु जहां राजनैतिक इच्छाशक्ति, तदनुरूप सक्रियता एवं कुशलता समय की मांग है, वहीं इसके साथ-साथ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति के कारण उत्पन्न परस्पर अविश्वास की खाई को पाटने में समाज के प्रबुद्ध नेतृत्व को भी एक विशेष भूमिका निभानी होगी। संघ के स्वयंसेवक तो समाज के स्तर पर निरंतर सबकी सेवा व राहत कार्य करते हुए समाज की सज्जन शक्ति का शांति के लिए आवाहन कर रहे हैं। सबको अपना मानकर, सब प्रकार की कीमत देते हुए समझाकर, सुरक्षित, व्यवस्थित, सद्भाव से परिपूर्ण और शान्त रखने के लिए ही संघ का प्रयास रहता है। इस भयंकर व उद्विग्न करने वाली परिस्थिति में भी ठंडे दिमाग से हमारे कार्यकर्ताओं ने जिस प्रकार वहाँ सबकी संभाल के प्रयास किए उस पर तथा उन स्वयंसेवकों पर हमें गर्व है।

इस मंत्र विप्लव का सही उत्तर तो समाज की एकता से ही प्राप्त होना है। हर परिस्थिति में यह एकता का भान ही समाज के विवेक को जागृत रखने वाली वस्तु है। संविधान में भी इस भावनिक एकता की प्राप्ति एक मार्गदर्शक तत्व के नाते उल्लेखित है। हर देश में इस एकता के भाव को पैदा करने वाला अपना-अपना धरातल अलग-अलग रहता। कहीं पर उस देश की भाषा, कहीं पर उस देश के निवासियों का समान पूजा या विश्वास, कहीं पर सबका समान व्यापारिक स्वार्थ, कहीं पर एक प्रबल केंद्रीय सत्ता बंधन देश के लोगों को एक सूत्र में बाँधकर रखता है। परंतु मानव निर्मित कृत्रिम आधारों पर अथवा समान स्वार्थ के आधार पर बनी हुई एकता की डोर टिकाऊ नहीं होती। हमारे देश में तो इतनी विविधता है कि इस देश का एक देश के नाते अस्तित्व समझने के लिए भी लोगों को समय लगता है। परंतु हमारा यह देश एक राष्ट्र के नाते, एक समाज के नाते, विश्व के इतिहास के सारे उतार चढ़ाव पार कर आज भी अपने भूतकाल के सूत्र से अविछिन्न सम्पर्क बनाए रखकर जीवित खड़ा है।

'यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकी नामो निशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा'

भारत के बाहर के लोगों की बुद्धि चकित हो जाए, परंतु मन आकर्षित हो जाए ऐसी एकता की परंपरा हमारी विरासत में हमको मिली है। उसका रहस्य क्या है? निःसंशय वह हमारी सर्व समावेशक संस्कृति है। पूजा, परंपरा, भाषा, प्रान्त, जातिपाती इत्यादि भेदों से ऊपर उठकर, अपने कुटुंब से संपूर्ण विश्व कुटुंब तक आत्मीयता को विस्तार देनेवाली हमारी आचरण की व जीवन जीने की रीति है।

हमारे पूर्वजों ने अस्तित्व की एकता के सत्य का साक्षात्कार किया। उसके फलस्वरूप शरीर, मन, बुद्धि की एक साथ उन्नति करते हुए तीनों को सुख देनेवाला, अर्थ, काम को साथ चलाकर मोक्ष की तरफ अग्रेसर करने वाला धर्मतत्व उनको अवगत हुआ। उस प्रतीति के आधार पर उन्होंने धर्मतत्व के चार शाश्वत मूल्यों (सत्य, करुणा, शुचिता व तपस) को आचरण में उतारने वाली संस्कृति का विकास किया। चारों ओर से सुरक्षित तथा समृद्ध हमारी मातृभूमि के अन्न, जल, वायु के कारण ही यह संभव हुआ। इसलिए हमारी भारतभूमि को हमारे संस्कारों की अधिष्ठात्री माता मानकर उसकी हम भक्ति करते हैं। हाल ही में स्वतन्त्रता संग्राम के महापुरुषों का स्मरण अपनी स्वतंत्रता के 75 वे वर्ष के निमित्त हमने किया। हमारे धर्म, संस्कृति, समाज व देश की रक्षा, समय समय पर उनमें आवश्यक सुधार तथा उनके वैभव का संवर्धन जिन महापुरुषों के कारण हुआ, वे हमारे कर्तृत्व सम्पन्न पूर्वज हम सभी के गौरवनिधान हैं तथा अनुकरणीय हैं। हमारे देश में विद्यमान सभी भाषा, प्रान्त, पंथ, संप्रदाय, जाति, उपजाति इत्यादि विविधताओं को एक सूत्र में बाँधकर एक राष्ट्र के रूप में खड़ा करने वाले यही तीन तत्व (मातृभूमि की भक्ति, पूर्वज गौरव, व सबकी समान संस्कृति) हमारी एकता का अक्षुण्ण सूत्र है।

समाज की स्थाई एकता अपनेपन से निकलती है, स्वार्थ के सौदों से नहीं। हमारा समाज बहुत बड़ा है। बहुत विविधताओं से भरा है। कालक्रम में कुछ विदेश की कुछ आक्रामक परंपराएँ भी हमारे देश में प्रवेश कर गईं, फिर भी हमारा समाज इन्हीं तीन बातों के आधार पर एक समाज बनकर रहा। इसलिए हम जब एकता की चर्चा करते हैं, तब हमें यह ध्यान रखना होगा कि यह एकता किसी लेन-देन के कारण नहीं बनेगी। जबरदस्ती बनाई तो बार बार बिगड़ेगी। आज के वातावरण में समाज में कलह फैलाने के चले हुए प्रयासों को देखकर बहुत लोग स्वाभाविक रूप से चिंतित हैं, मिलते रहते हैं। अपने आपको हिंदू कहलाने वाले सज्जन भी मिलते हैं, जिनको उनकी पूजा के कारण मुसलमान, ईसाई कहा जाता है, ऐसे भी लोग मिलते हैं । उनकी मान्यता है कि फितना, फसाद व कितान को छोड़कर सुलह, सलामती व अमन पर चलना ही श्रेष्ठता है। इन चर्चाओं में ध्यान रखने की पहली बात यही है कि, संयोग से एक भूमि में एकत्र आए विभिन्न समुदायों के एक होने की बात नहीं है। हम समान पूर्वजों के वंशज, एक मातृभूमि की संताने, एक संस्कृति के विरासतदार, परस्पर एकता को भूल गए। हमारे उस मूल एकत्व को समझकर उसी के आधार पर हमें फिर जुड़ जाना है।

क्या हमारी आपस में कोई समस्या नहीं है? क्या हमारी अपने विकास के लिए कोई आवश्यकता, अपेक्षा नहीं है? क्या पाने विकास के लिए हमारी आपस में स्पर्धा नहीं चलती है? क्या हममें से सब लोग मन, वचन, कर्म से इन एकात्मता के सूत्रों को मानकर व्यवहार करते हैं? सब जानते हैं कि सबका ऐसा नहीं है। परंतु ऐसा हो यह इच्छा रखने वालों को यह कहकर नहीं चलेगा, कि पहले समस्याएँ समाप्त हो, पहले प्रश्नों के समाधान हों, फिर हम एकता की बातों का ध्यान करेंगे। हम सभी को यह समझना पड़ेगा कि हम अपनेपन की दृष्टि अपनाकर व्यवहार प्रारंभ करें तो उसी में से समस्याओं के समाधान भी निकलेंगे। इधर उधर घटने वाली घटनाओं से विचलित न होते हुए, शांति व संयम से काम लेना पड़ेगा। समस्याएं वास्तविक है परन्तु वह केवल एक जाति, वर्ग के लिए ही नहीं है। उनको सुलझाने के प्रयासों के साथ-साथ आत्मीयता व एकता की मानसिकता भी बनानी पड़ेगी। विक्टिमहुड की मानसिकता, एक दूसरे को अविश्वास के दृष्टि से ही देखना अथवा राजनीतिक वर्चस्व के दांवपेचों से अलग होकर चलना पडेगा। ऐसे कार्यों में राजनीति बाधक ही बनती है। यह कोई शरणागति या मजबूरी नहीं है।

युद्धरत दो पक्षों का सीज फायर भी नहीं है। भारत की सभी विविधताओं में परस्पर एकता के जो सूत्र विद्यमान है, उन सूत्रों के अपनेपन की यह पुकार है। अपने स्वतन्त्र भारत के संविधान का भी 75 वां वर्ष चल रहा हैं। वह संविधान हमको यही दिशा दिखाता हैं। पूज्य डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के द्वारा संविधान प्रदत्त करते समय संविधान सभा में जो दो भाषण दिए गए उनका ध्यान करेंगे तो यही सार समझ में आता हैं।

यह यकायक होने वाला काम नहीं है। पुराने संघर्षों की कटु स्मृतियाँ अभी भी सामूहिक मन में हैं। विभाजन की दारुण विभीषिका का घाव बहुत गहरा है। उसकी क्रिया प्रतिक्रिया के चलते जो क्षोभ मन में पैदा होता है उसकी रंजिश वाणी व व्यवहार में प्रकट होती है। एक दूसरे की बस्तियों में घर न मिल पाने से लेकर तो एक दूसरे के बारे में ऊँच नीच का, तिरस्कार का व्यवहार होने तक के कटु अनुभव हैं। हिंसा, दंगे, प्रताड़ना आदि की घटनाओं का दोष एक दूसरे पर मढ़ा जाने के प्रसंग भी घटते हैं। कुछ लोगों का करना पूरे समाज का करना है, ऐसे मानकर वाणी और विचार स्वैर छोड़े जाते हैं। आह्वान, प्रति आह्वान दिए जाते हैं, जो उकसावे का काम करते हैं।

हमको लड़ाकर देश को तोड़ना चाहने वाली ताकतें भी इसका पूरा लाभ उठाती हैं। देखते-देखते छोटी सी घटना को बड़ा रूप देकर प्रचारित किया जाता है। देश विदेश से चिंता व्यक्त करने वाले और चेतावनी देने वाले वक्तव्य करवाए जाते हैं। हिंसा भड़काने वाली 'टूल किट्स' सक्रिय हो जाती है और परस्पर अविश्वास और द्वेष को और बढ़ाया जाता है।

समाज में सामरस्य चाहने वाले सभी को इन घातक खेलों की माया से बचना पड़ेगा। इन सभी समस्याओं का निदान धीरे धीरे ही निकलेगा। उसके लिए देश में विश्वास का तथा सौहार्द का वातावरण बनना यह पूर्व शर्त है। अपने मन को स्थिर रखकर विश्वास रखते हुए परस्पर संवाद बढ़े, परस्पर समझदारी बढ़े, परस्पर श्रद्धाओं का सम्मान उत्पन्न हो, और सबका मेलजोल बढ़ता चले, इस प्रकार अपने मन, वचन, कर्म रखकर चलना पड़ेगा। प्रचार अथवा धारणाओं से नहीं, वस्तु स्थिति से काम लेना पड़ेगा।

धैर्यपूर्वक, संयम और सहनशीलता के साथ, अपने वाणी की तथा कृति की अतिवादिता, क्रोध तथा भय को छोड़कर दृढ़ता पूर्वक, संकल्पबद्ध होकर, लंबे समय तक सतत प्रयास करते रहने की अनिवार्यता है। शुद्ध मन से किए हुए सत् संकल्प तभी पूर्ण होते हैं।

हर हालत में, कितना भी उकसावा हो, कानून सुव्यवस्था, नागरिक अनुशासन तथा संविधान का पालन करके ही चलना अनिवार्य है। स्वतंत्र देश में यही व्यवहार देशभक्ति की अभिव्यक्ति माना जाता है। माध्यमों का उपयोग करके किए जानेवाले भड़काऊ अप- प्रचार में तथा उसके फलस्वरूप पैदा होने वाली आरोप प्रत्यारोप की प्रतिस्पर्धा में न फसें, माध्यमों का उपयोग समाज में, सत्य व आत्मीयता का प्रसार करने के लिए हो।

हिंसा व गुंडागर्दी का सही उपाय संगठित बल सम्पन्न समाज का कानून व सुव्यवस्था की रक्षा में पहल करते हुए शासन-प्रशासन को उचित सहयोग देना यही है।

आने वाले वर्ष 2024 के प्रारंभिक दिनों में लोकसभा के चुनाव हैं। चुनावी दाँव पेचों में भावनाओं को भड़काकर मतों की फसल काटने के प्रयास अपेक्षित नहीं हैं, परंतु होते रहते हैं। समाज को विभाजित करने वाली इन

बातों से हम बचें। मतदान करना हर नागरिक का कर्तव्य है। उसका अवश्य पालन करें। देश की एकात्मता, अखंडता, अस्मिता तथा विकास के मुद्दों पर विचार करते हुए अपना मत दें।

वर्ष 2025 से 2026 का वर्ष संघ के 100 वर्ष पूरे होने के बाद का वर्ष है। ऊपर निर्दिष्ट सभी बातों में संघ के स्वयंसेवक तब अपना कदम बढ़ायेंगे, इसकी सिद्धता कर रहे हैं। समाज के आचरण में, उच्चारण में संपूर्ण समाज और देश के प्रति अपनत्व की भावना प्रकट हो।

मंदिर, पानी, श्मशान में कहीं भेदभाव बाकी है, तो वह समाप्त हो। परिवार के सभी सदस्यों में नित्य मंगल संवाद, संस्कारित व्यवहार व संवेदनशीलता बनी रहे, बढ़ती रहे व उनके द्वारा समाज की सेवा होती रहे। सृष्टि के साथ संबंधों का आचरण अपने घर से पानी बचाकर, प्लास्टिक हटाकर व घर आँगन में तथा आसपास हरियाली बढ़ाकर हो । स्वदेशी के आचरण से स्व-निर्भरता व स्वावलंबन बढ़े। फिजूलखर्ची बंद हो।

देश का रोजगार बढ़े व देश का पैसा देश में ही काम आए। इसीलिए स्वदेशी का भी आचरण घर से ही प्रारंभ होना चाहिए। कानून व्यवस्था व नागरिकता के नियमों का पालन हो तथा समाज में परस्पर सद्भाव और सहयोग की प्रवृत्ति सर्वत्र व्याप्त हो।

इन पाँचों आचरणात्मक बातों का होना सभी चाहते हैं। परंतु छोटी-छोटी बातों से प्रारंभ कर उनके अभ्यास के द्वारा इस आचरण को अपने स्वभाव में लाने का सतत प्रयास आवश्यक है। संघ के स्वयंसेवक आनेवाले दिनों में समाज के अभावग्रस्त बंधुओं की सेवा करने के साथ-साथ, इन पाँच प्रकार की सामाजिक पहलों का आचरण स्वयं करते हुए समाज को भी उसमें सहभागी व सहयोगी बनाने का प्रयास करेंगे।

समाज हित में शासन, प्रशासन तथा समाज की सज्जन शक्ति जो कुछ कर रही है, अथवा करना चाहेगी, उसमें संघ के स्वयंसेवकों का योगदान नित्यानुसार चलता रहेगा ही।

समाज की एकता, सजगता व सभी दिशा में निस्वार्थ उद्यम, जनहितकारी शासन व जनोन्मुख प्रशासन स्व के अधिष्ठान पर खड़े होकर परस्पर सहयोग पूर्वक प्रयासरत रहते है, तभी राष्ट्र बल वैभव सम्पन्न बनता है।

बल और वैभव से सम्पन्न राष्ट्र के पास जब हमारी सनातन संस्कृति जैसी सबको अपना कुटुंब मानने वाली, तमस से प्रकाश की ओर ले जानेवाली, असत् से सत् की ओर बढ़ाने वाली तथा मर्त्य जीवन से सार्थकता के अमृत जीवन की ओर ले जानेवाली संस्कृति होती है, तब वह राष्ट्र, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाते हुए विश्व को सुख शांतिमय नवजीवन का वरदान प्रदान करता है। सद्य काल में हमारे अमर राष्ट्र के नवोत्थान का यही प्रयोजन है।

'चक्रवर्तियों की संतान,
लेकर जगद्गुरु का ज्ञान,
बढ़े चले तो अरुण विहान, करने को आए
अभिषेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक'
'भारत माता की जय' ▪

कमल खिलाकर इतिहास रचना है

ग्वालियर अब पहले जैसा ग्वालियर नहीं रहा है। अब ग्वालियर बदल रहा है, ये विकास के नित नये आयाम खड़े कर रहा है। आज ग्वालियर में सड़क, बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाएं पर्याप्त हैं। ग्वालियर के विकास के पहिए को आगे बढ़ाने के लिए भाजपा की प्रचंड बहुमत से सरकार बनाना है। इसके लिए एक-एक कार्यकर्ता को बूथ पर प्रहरी की तरह खड़ा रहना होगा। हर बूथ पर कमल खिलाकर इतिहास रचना है।

साल 2003 में कांग्रेस की दिग्विजय सिंह के नेतृत्व वाली बंटाढार सरकार ने इस मध्यप्रदेश को गड्ढे में लाकर छोड़ दिया था। 20 साल पहले मध्यप्रदेश में एक सड़क अच्छी नहीं थी। सड़क कहां और गड्ढा कहां ढूंढ़ना पड़ता था। घरों में बिजली नहीं मिलती थी। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लट्टू को ज्योति के प्रकाश से जोड़ दिया है, आज मध्यप्रदेश के आखिरी गांव में भी लट्टू में ज्योति का प्रकाश जल रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के मार्गदर्शन में मध्य प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर आकर सक्षम और विकसित राज्य की श्रेणी में खड़ा हुआ है।

इसका श्रेय भाजपा के देवतुल्य कार्यकताओं को जाता है। अगर हमारे प्रधानमंत्री जी 18 घंटे काम कर रहे हैं तो हम भी चुनाव तक 18-18 घंटे काम कर सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत के तिरंगे को केवल विश्व पटल पर ही मान-सम्मान नहीं दिलाया है, बल्कि चांद पर भी भारत के तिरंगे को फहराकर गौरवशाली इतिहास लिख दिया है। हम सभी को मिलकर कमल के फूल को हर बूथ पर इसी तरह का इतिहास रचना होगा।

हर घर में कमल खिलाकर बनाएं भाजपा की सरकार

भाजपा की पहचान विश्व के सबसे विशाल राजनीतिक दल के रूप में होती है तो इसके पीछे पार्टी के एक-एक कार्यकर्ता की लगन और मेहनत का श्रेय है। भाजपा के कार्यकर्ता रूपी सेनापतियों की फौज दिन-रात एक कर जिस तरह काम कर रही है, इससे यह तय है कि आपके समर्पण और परिश्रम से भाजपा को फिर मध्यप्रदेश में जीत मिलेगी। ग्वालियर विधानसभा के साथ ही मध्यप्रदेश के एक-एक घर में कमल खिलाएं, जिससे मध्य प्रदेश में प्रचंड बहुमत से पार्टी की सरकार बन सके। ▪

रोजगार मेले युवाओं के प्रति हमारे संकल्प का प्रमाण

आज भारत जिस दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है, उससे हर sector में रोजगार के नए अवसर तैयार हो रहे हैं।

धोरडो गांव, कच्छ जिले में पाकिस्तान की सीमा पर का गांव है। इस धोरडो गांव को United Nations ने Best Tourism Village के रूप में सम्मानित किया है।

रोजगार मेले की ये यात्रा इस महीने एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंची है। पिछले वर्ष अक्टूबर महीने में ही रोजगार मेले की शुरुआत हुई थी। तब से निरंतर केंद्र और एनडीए शासित, भाजपा शासित राज्यों में रोजगार मेले का आयोजन लगातार किया जा रहा है, बार-बार किया जा रहा है। अब तक लाखों युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र दिए जा चुके हैं। नियुक्ति पत्र पाने वाले 50 हजार युवाओं के परिवार के लिए ये मौका दीवाली से जरा भी कम नहीं है। सभी ने कड़ी मेहनत से ये मुकाम हासिल किया है।

देश के अलग-अलग राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आयोजित होने वाले रोजगार मेले युवाओं के प्रति हमारे commitment का प्रमाण है। हमारी सरकार युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखकर mission mode में काम कर रही है। हम ना सिर्फ रोजगार दे रहे हैं, बल्कि पूरे system को पारदर्शी भी बनाए हुए हैं, जिससे नियुक्ति प्रक्रिया पर युवाओं का भरोसा बना हुआ है। हमने भर्ती प्रक्रिया को ना सिर्फ streamline किया है, बल्कि कुछ परीक्षाओं को restructure भी किया है। Staff Selection Commission (SSC) की recruitment cycle में जो समय लगता था वो लगने वाला समय अब करीब-करीब आधा हो गया है। यानि circular पत्र जारी होने से लेकर नियुक्ति पत्र देने तक के समय को काफी कम कर दिया है। इससे युवाओं के समय की बड़ी बचत हुई है। युवाओं के हित में सरकार ने एक और महत्वपूर्ण बदलाव किया है। SSC ने कुछ परीक्षाओं को हिंदी, इंग्लिश और 13 क्षेत्रीय भाषाओं में लेना शुरू कर दिया है। इससे बड़ी संख्या में उन युवाओं को नौकरी के लिए आवेदन करने का अवसर मिल रहा है, जिनके रास्ते में भाषा की दीवार खड़ी थी।

आज भारत जिस दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है, उससे हर sector में रोजगार के नए अवसर तैयार हो रहे हैं। धोरडो गांव, कच्छ जिले में पाकिस्तान की सीमा पर का गांव है। इस धोरडो गांव को United Nations ने Best Tourism Village के रूप में सम्मानित किया है। इससे पहले कर्नाटका के होयसला मंदिरों और पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन को World Heritage Site की पहचान मिली है। इससे यहां पर्यटन की संभावना और अर्थव्यवस्था के विस्तार की संभावना कितनी बढ़ गई है। पहले, पर्यटन बढ़ने का सीधा मतलब है कि वहां रोजगार के नए अवसर तेजी से बढ़ेंगे, जिसका फायदा, ये tourism का ही तो परिणाम है, जिसका फायदा आसपास के होटल, छोटे-छोटे दुकानदार, बस चलाने वाले, टैक्सी चलाने वाले, ऑटो रिक्शा चलाने वाले, even टूरिस्ट गाइड का काम करने वाले, हर किसी को लाभ होता है। ऐसे ही sports क्षेत्र ये ऐसे sector भी हैं जो रोजगार के नए अवसर तैयार कर रहे हैं। नेशनल- इंटरनेशनल खेलों में हमारे खिलाड़ी ऐतिहासिक प्रदर्शन कर रहे हैं। ये उपलब्धियां हमारे देश के sports landscape में भी बड़े बदलाव और विकास का संकेत है। और जब sports sector का विकास होता है, तो सिर्फ बेहतर खिलाड़ी ही तैयार होते हैं, ऐसा नहीं है बल्कि इससे trainers, physios, referees और sports nutritionists जैसे अनेक नए अवसर तैयार होते हैं।

हम रोजगार देने वाले traditional sectors को मजबूत कर रहे हैं। और इसके साथ ही, हम renewable energy, space, automation और defense exports जैसे नए sectors को promote कर रहे हैं। Drone technology में संभावनाओं के नए द्वार खुल गए हैं। आज किसान ड्रोन्स का crop assessment और nutrients के छिड़काव में उपयोग धीरे-धीरे बहुत बढ़ रहा

है। स्वामित्व योजना के तहत ड्रोन्स का land mapping में उपयोग हो रहा है। आपने कुछ दिन पहले एक वीडियो देखा होगा। हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पिति में ICMR ने ड्रोन की मदद से एक जगह से दूसरी जगह दवा पहुंचाई। इस काम में पहले दो घंटे का समय लगता था लेकिन ड्रोन की मदद से ये 20, 25, 30 मिनट में ही, उससे भी कम समय में काम हो गया। ड्रोन्स ने बड़ी संख्या में startups को भी बढ़ावा दिया है। इस क्षेत्र में हो रहे निवेश से युवाओं को नए तरह के ड्रोन्स की designing में मदद मिल रही है।

गांधी जी ने चरखे को स्वदेशी और कर्मयोग के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया। जो खादी अपनी चमक खो चुकी थी, उसकी चमक भी अब वापस लौट आई है। 10 साल पहले खादी की बिक्री 30 हजार करोड़ रुपए के आस-पास थी। अब ये सवा लाख करोड़ रुपए को भी पार कर गई है। इससे खादी और ग्राम उद्योग सेक्टर में अनेक रोजगार के नए अवसर बने हैं। विशेषकर महिलाओं को इससे बहुत मदद मिली है।

हर देश के पास अलग तरह का सामर्थ्य होता है। किसी के पास प्राकृतिक संसाधन होते हैं, कोई खनिज से संपन्न होता है, तो किसी के पास लंबे समुद्र तट की ताकत होती है। लेकिन इस सामर्थ्य का उपयोग करने के लिए, जिस सबसे बड़ी ताकत की आवश्यकता होती है, वो होती है हमारी युवा शक्ति। युवा शक्ति जितनी ज्यादा मजबूत होगी, देश उतना ज्यादा विकास करेगा। आज भारत अपने युवाओं को skilling और education के द्वारा नए अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार कर रहा है। भविष्य की आधुनिक जरूरतों को देखते हुए देश में आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की जा रही है। देश में बड़ी संख्या में नए medical college, IIT, IIM या triple IT जैसे कौशल विकास संस्थान खोले गए हैं। करोड़ों युवाओं को प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत training दी गई है। हमारे देश में करोड़ों कारीगर अपने पारंपरिक व्यवसायों के माध्यम से आजीविका चलाते हैं। ऐसे विश्वकर्मा कारीगरों उनके लिए पीएम विश्वकर्मा योजना भी शुरू की गई है। आज तकनीक के दौर में सब कुछ तेजी से बदल रहा है, इसलिए हर किसी को अपने हुनर और ज्ञान को update करते रहना होगा। कोई भी नई skill सीखने के बाद ये बहुत जरूरी है कि उसे निरंतर upskill और re-skill किया जाए। पीएम विश्वकर्मा योजना के तहत कारीगरों के traditional skills को modern technology और tools से जोड़ा जा रहा है।

युवाओं के लिए रोजगार के अवसर तैयार करना, राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में एक जरूरी कदम है। सरकारी कर्मचारी के तौर पर आपको ऐसी सारी योजनाओं को आगे बढ़ाना है, उन्हें जमीन पर लागू करना है। आप सभी राष्ट्र निर्माण की हमारी यात्रा में महत्वपूर्ण सहयोगी बनकर हमसे जुड़ रहे हैं। आप अपने सपनों को आज पूरा कर रहे हैं लेकिन आप देशवासियों के सपनों की ownership ले रहे हैं। इस यात्रा को लक्ष्य तक पहुंचाने में पूरी तत्परता से आपका सक्रिय, proactive योगदान बहुत जरूरी है। I-Got portal पर आप अपना ज्ञान भी बढ़ाते चलें। आपका हर कदम देश को विकास के रास्ते पर तेजी से आगे ले जाने में मदद करेगा। ▪

कमल खिलाएं-देव दुर्लभ कार्यकर्ता

मध्यप्रदेश के विधानसभा का चुनाव भारत के भविष्य का चुनाव है। भाजपा के देव दुर्लभ कार्यकर्ता कमल खिलाने के लिए हर बूथ पर 51 प्रतिशत से अधिक वोट भाजपा को दिलाने के लिए जनता के बीच जाऐंगे। देश में जितने भी राजनीतिक दल हैं, वह परिवारवाद, वंशवाद, क्षेत्रवाद और जातिवाद को लेकर कार्य करते हैं, सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ही देश की एकमात्र पार्टी है जो राष्ट्रवाद की विचारधारा को लेकर कार्य करती है।

बूथ की ताकत की वजह देव दुर्लभ कार्यकर्ता कहा जाता है

देश में जितने भी राजनीतिक दल हैं उन सब का विभाजन हुआ। भारतीय जनता पार्टी देव दुर्लभ कार्यकर्ताओं की है, उसमें कोई भी विभाजन नहीं हुआ। पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बट वृक्ष को कार्यकर्ताओं ने आगे बढ़ाते हुए संगठन को बढ़ाने का काम किया है। कार्यकर्ताओं को हमारी बूथ की ताकत की वजह से देव दुर्लभ कहा जाता है। बूथ कार्यकर्ताओं की ताकत और उनके परिश्रम, निष्ठा और ईमानदारी से पार्टी चुनाव जीतती है, वही हमारा बूथ का देवता है। इसीलिए भारतीय जनता पार्टी अपने कार्यकर्ताओं को देव दुर्लभ कहती है। बूथों पर चुनाव कार्यकर्ता लड़ता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहा करते थे कि सत्ता हमारे लिए व्यवसाय नहीं है वह सेवा, समर्पण और गरीब कल्याणकारी का साधन है। इसी भाव और अंत्योदय की विचारधारा को लेकर भारतीय जनता पार्टी की सरकार काम कर रही है।

गरीब कल्याण योजनाओं से भारत बना आत्मनिर्भर

2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार बनते ही उनकी नजर सबसे पहले गरीबों पर आई। जिन्होंने अपनी विकास की नीतियों को आगे बढ़ाते हुए घर-घर शौचालय, महिलाओं के लिए नि:शुल्क गैस कनेक्शन, आयुष्मान भारत कार्ड योजना, जनधन खाता योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मध्य प्रदेश में लाड़ली बहना योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना ऐसी अनेकों योजनाएं जिससे आज गरीब आत्मनिर्भर विकास की मुख्य धारा से जुड़ा हुआ है।

सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, दिग्विजय सिंह और कमलनाथ जैसे लोग भारत माता को वैभव शिखर पर नहीं पहुंचते देखना चाहते। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में 9 वर्षों में भारत दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक स्थिति के रूप में उभरकर हम सभी के सामने आया है। ▪

लोकल के लिए वोकल बनें

त्योहारों की इस उमंग के बीच, दिल्ली की एक खबर से ही मैं 'मन की बात' की शुरुआत करना चाहता हूँ। गांधी जयन्ती के अवसर पर दिल्ली में खादी की रिकॉर्ड बिक्री हुई। कनॉट प्लेस में, एक ही खादी स्टोर में, एक ही दिन में, डेढ़ करोड़ रुपये से ज्यादा का सामान लोगों ने खरीदा। खादी महोत्सव ने एक बार फिर बिक्री के अपने सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। दस साल पहले देश में जहां खादी प्रोडक्ट्स की बिक्री बड़ी मुश्किल से 30 हजार करोड़ रुपये से भी कम की थी, अब ये बढ़कर सवा लाख करोड़ रूपए के आसपास पहुँच रही है। खादी की बिक्री बढ़ने का मतलब है इसका फायदा शहर से लेकर गाँव तक में अलग-अलग वर्गों तक पहुंचता है। इस बिक्री का लाभ हमारे बुनकर, हस्तशिल्प के कारीगर, हमारे किसान, आयुर्वेदिक पौधे लगाने वाले कुटीर उद्योग सबको लाभ मिल रहा है, और, यही तो, 'वोकल फॉर लोकल' अभियान की ताकत है और धीरे-धीरे आप सब देशवासियों का समर्थन भी बढ़ता जा रहा है।

जब भी आप पर्यटन पर जाएं, तीर्थाटन पर जाएं, तो वहां के स्थानीय कलाकारों के द्वारा बनाए गए उत्पादों को जरुर खरीदें। यात्रा के कुल बजट में स्थानीय उत्पादों की खरीदी को एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में जरुर रखें। 10 परसेंट हो, 20 परसेंट हो, जितना आपका बजट बैठता हो, लोकल पर जरुर खर्च करिएगा और वहीं पर खर्च कीजिएगा।

हमारे त्योहारों में, हमारी प्राथमिकता हो 'वोकल फॉर लोकल' और हम मिलकर उस सपने को पूरा करें, हमारा सपना है 'आत्मनिर्भर भारत'। इस बार ऐसे प्रोडक्ट से ही घर को रोशन करें जिसमें किसी देशवासी के पसीने की महक हो, देश के किसी युवा का talent हो, उसके बनने में देशवासियों को रोजगार मिला हो, रोजमर्रा की जिन्दगी की कोई भी आवश्यकता हो - लोकल ही लेंगे। 'वोकल फॉर लोकल' की ये भावना सिर्फ त्योहारों की खरीदारी तक के लिए ही सीमित नहीं है और कहीं तो दीवाली का दीया लेते हैं और फिर सोशल मीडिया पर डालते हैं 'वोकल फॉर लोकल'- नहीं जी, वो तो शुरुआत है। हमें बहुत आगे बढ़ना है, जीवन की हर आवश्यकता-हमारे देश में, अब, सब कुछ उपलब्ध है। ये vision केवल छोटे दुकानदारों और रेहड़ी-पटरी से सामान लेने तक सीमित नहीं है। भारत, दुनिया का बड़ा manufacturing HUB बन रहा है। कई बड़े brand यहीं पर अपने product को तैयार कर रहे हैं। अगर हम उन प्रोडक्ट को अपनाते हैं, तो, Make in India को बढ़ावा मिलता है, और, ये भी, 'लोकल के लिए वोकल' ही होना होता है, और हाँ, ऐसे प्रोडक्ट को खरीदते समय हमारे देश की शान UPI digital payment system से payment करने के आग्रही बनें, जीवन में आदत डालें, और उस प्रोडक्ट के साथ, या, उस कारीगर के साथ selfie NamoApp पर मेरे साथ share करें और वो भी Made in India smart phone से। मैं उनमें से कुछ post को सोशल मीडिया पर share करूँगा ताकि दूसरे लोगों को भी 'वोकल फॉर लोकल' की प्रेरणा मिले।

हमारे त्योहारों में, हमारी प्राथमिकता हो "वोकल फॉर लोकल' और हम मिलकर उस सपने को पूरा करें, हमारा सपना है "आत्मनिर्भर भारत"।

इस बार ऐसे प्रोडक्ट से ही घर को रोशन करें जिसमें किसी देशवासी के पसीने की महक हो, देश के किसी युवा का talent हो, उसके बनने में देशवासियों को रोजगार मिला हो, रोजमर्रा की जिन्दगी की कोई भी आवश्यकता हो - लोकल ही लेंगे।

जब आप, भारत में बने, भारतीयों द्वारा बनाए गए उत्पादों से अपनी दीवाली रौशन करेंगे, अपने परिवार की हर छोटी-मोटी आवश्यकता लोकल से पूरी करेंगे तो दीवाली की जगमगाहट और ज्यादा बढ़ेगी ही बढ़ेगी, लेकिन, उन कारीगरों की जिंदगी में, एक, नयी दीवाली आयेगी, जीवन की एक सुबह आयेगी, उनका जीवन शानदार बनेगा। भारत को आत्मनिर्भर बनाइए, 'Make in India' ही चुनते जाइए, जिससे आपके साथ-साथ और भी करोड़ों देशवासियों की दीवाली शानदार बने, जानदार बने, रौशन बने, दिलचस्प बने।

31 अक्टूबर का दिन हम सभी के लिए बहुत विशेष होता है। इस दिन हमारे लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म-जयंती मनाते हैं। हम भारतवासी, उन्हें, कई वजहों से याद करते हैं, और श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। सबसे बड़ी वजह है - देश की 580 से ज्यादा रियासतों को जोड़ने में उनकी अतुलनीय भूमिका। हम जानते हैं हर साल 31 अक्टूबर को गुजरात में

Statue of Unity पर एकता दिवस से जुड़ा मुख्य समारोह होता है। इस बार इसके अलावा दिल्ली में कर्तव्य पथ पर एक बहुत ही विशेष कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। मैंने पिछले दिनों देश के हर गाँव से, हर घर से मिट्टी संग्रह करने का आग्रह किया गया था। हर घर से मिट्टी संग्रह करने के बाद उसे कलश में रखा गया और फिर अमृत कलश यात्राएं निकाली गईं। देश के कोने-कोने से एकत्रित की गयी ये माटी, ये हजारों अमृत कलश यात्राएं अब दिल्ली पहुँच रही हैं। यहाँ दिल्ली में उस मिट्टी को एक विशाल भारत कलश में डाला जाएगा और इसी पवित्र मिट्टी से दिल्ली में 'अमृत वाटिका' का निर्माण होगा। यह देश की राजधानी के हृदय में अमृत महोत्सव की भव्य विरासत के रूप में मौजूद रहेगी। 31 अक्टूबर को ही देशभर में पिछले ढाई साल से चल रहे आजादी के अमृत महोत्सव का समापन होगा। आप सभी ने मिलकर इसे दुनिया में सबसे लंबे समय तक चलने वाले महोत्सव में से एक बना दिया। अपने सेनानियों का सम्मान हो या फिर हर घर तिरंगा, आजादी के अमृत महोत्सव में, लोगों ने अपने स्थानीय इतिहास को, एक नई पहचान दी है। इस दौरान सामुदायिक सेवा की भी अद्भुत मिसाल देखने को मिली है।

31 अक्टूबर को एक बहुत बड़े राष्ट्रव्यापी संगठन की नींव रखी जा रही है और वो भी सरदार साहब की जन्म जयन्ती के दिन। इस संगठन का नाम है - मेरा युवा भारत, यानी MYBharat. MYBharat संगठन, भारत के युवाओं को राष्ट्र निर्माण के विभिन्न आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देगा। ये, विकसित भारत के निर्माण में भारत की युवा शक्ति को एकजुट करने का एक अनोखा प्रयास है। युवा भारत की वेबसाइट MYBharat भी शुरू होने वाली है। युवाओं से आग्रह करूँगा MYBharat.Gov.in पर register करें और विभिन्न कार्यक्रम के लिए Sign Up करें।

साहित्य, literature, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रगाढ़ करने के सबसे बेहतरीन माध्यमों में से एक है। तमिलनाडु की गौरवशाली विरासत से जुड़े दो बहुत ही प्रेरक प्रयासों को साझा करना चाहता हूँ। मुझे तमिल की प्रसिद्ध लेखिका बहन शिवशंकरी जी के बारे में जानने का अवसर मिला है। उन्होंने एक Project किया है – Knit India, Through Literature इसका मतलब है - साहित्य से देश को एक धागे में पिरोना और जोड़ना। वे इस Project पर बीते 16 सालों से काम कर रही है। इस Project के जरिए उन्होंने 18 भारतीय भाषाओं में लिखे साहित्य का अनुवाद किया है। उन्होंने कई बार कन्याकुमारी से कश्मीर तक और इंफाल से जैसलमेर तक देशभर में यात्राएँ की, ताकि अलग-अलग राज्यों के लेखकों और कवियों के Interview कर सकें । शिवशंकरी जी ने अलग -अलग जगहों पर अपनी यात्रा की, travel commentary के साथ उन्हें Publish किया है। यह तमिल और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है। इस Project में चार बड़े volumes हैं और हर volume भारत के अलग-अलग हिस्से को समर्पित है।

कन्याकुमारी के थिरु ए. के. पेरूमल जी का काम भी बहुत प्रेरित करने वाला है। उन्होंने तमिलनाडु के ये जो storytelling tradition है उसको संरक्षित करने का सराहनीय काम किया है। वे अपने इस मिशन में पिछले 40 सालों से जुटे हैं। इसके लिए वे तमिलनाडु के अलग-अलग हिस्सों में Travel करते हैं और Folk Art Forms को खोज कर उसे अपनी Book का हिस्सा बनाते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि उन्होंने अब तक ऐसी करीब 100 किताबें लिख डाली हैं। इसके अलावा पेरूमल जी का एक और भी Passion है। तमिलनाडु के Temple Culture के बारे में Research करना उन्हें बहुत पसंद है। उन्होंने Leather Puppets पर भी काफी Research की है, जिसका लाभ वहाँ के स्थानीय लोक कलाकारों को हो रहा है। शिवशंकरी जी और ए. के. पेरूमल जी के प्रयास हर किसी के लिए एक मिसाल हैं। भारत को अपनी संस्कृति को सुरक्षित करने वाले ऐसे हर प्रयास पर गर्व है, जो हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के साथ ही देश का नाम, देश का मान, सब कुछ बढ़ाये।

15 नवंबर को पूरा देश जनजातीय गौरव दिवस मनाएगा। यह विशेष दिन भगवान बिरसा मुंडा की जन्म-जयंती से जुड़ा है। भगवान बिरसा मुंडा हम सब के हृदय में बसे हैं। सच्चा साहस क्या है और अपनी संकल्प शक्ति पर अडिग रहना किसे कहते हैं, ये हम उनके जीवन से सीख सकते हैं। उन्होंने विदेशी शासन को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने ऐसे समाज की परिकल्पना की थी, जहाँ अन्याय के लिए कोई जगह नहीं थी। वे चाहते थे कि हर व्यक्ति को सम्मान और समानता का जीवन मिले। भगवान बिरसा मुंडा ने प्रकृति के साथ सद्भाव से रहना इस पर भी हमेशा जोर दिया। आज भी हम देख सकते हैं कि हमारे आदिवासी भाई-बहन प्रकृति की देखभाल और उसके संरक्षण के लिए हर तरह से समर्पित हैं। हम सब के लिए, हमारे आदिवासी भाई-बहनों का ये काम बहुत बड़ी प्रेरणा है।

30 अक्टूबर, गोविन्द गुरु जी की पुण्यतिथि भी है। गुजरात और राजस्थान के आदिवासी और वंचित समुदायों के जीवन में गोविन्द गुरु जी का बहुत विशेष महत्व रहा है। नवंबर महीने में हम मानगढ़ नरसंहार की बरसी भी मनाते हैं।

भारतवर्ष में आदिवासी योद्धाओं का समृद्ध इतिहास रहा है। इसी भारत भूमि पर महान तिलका मांझी ने अन्याय के खिलाफ बिगुल फूंका था। इसी धरती से सिद्धो-कान्हू ने समानता की आवाज उठाई। हमें गर्व है कि जिन योद्धा टंट्या भील ने हमारी धरती पर जन्म लिया। हम शहीद वीर नारायण सिंह को पूरी श्रद्धा के साथ याद करते हैं, जो कठिन परिस्थितियों में अपने लोगों के साथ खड़े रहे। वीर रामजी गोंड हों, वीर गुंडाधुर हों, भीमा नायक हों, उनका साहस आज भी हमें प्रेरित करता है। अल्लूरी सीताराम राजू ने आदिवासी भाई-बहनों में जो अलख जगाई, उसे देश आज भी याद करता है। North East में कियांग नोबांग और रानी गाइदिन्ल्यू जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से भी हमें काफी प्रेरणा मिलती है। आदिवासी समाज से ही देश को राजमोहिनी देवी और रानी कमलापति जैसी वीरांगनाएं मिलीं। देश इस समय आदिवासी समाज को प्रेरणा देने वाली रानी दुर्गावती जी की 500वीं जयंती मना रही हैं। मैं आशा करता हूँ कि देश के अधिक से अधिक युवा अपने क्षेत्र की आदिवासी विभूतियों के बारे में जानेंगे और उनसे प्रेरणा लेंगे। देश अपने आदिवासी समाज का कृतज्ञ है, जिन्होंने राष्ट्र के स्वाभिमान और उत्थान को हमेशा सर्वोपरि रखा है।

त्योहारों के इस मौसम में, इस समय देश में Sports का भी परचम लहरा रहा है। पिछले दिनों Asian Games के बाद Para Asian Games में भी भारतीय खिलाड़ियों ने जबरदस्त कामयाबी हासिल की है। इन खेलों में भारत ने 111 मेडल जीतकर एक नया इतिहास रच दिया है।

मैं आपका ध्यान Special Olympics World Summer Games की ओर भी ले जाना चाहता हूँ। इसका आयोजन बर्लिन में हुआ था। ये प्रतियोगिता हमारे Intellectual Disabilities वाले एथलीटों की अद्भुत क्षमता को सामने लाती है। इस प्रतियोगिता में भारतीय दल ने 75Gold Medals सहित 200 पदक जीते।Roller skating हो, Beach Volleyball हो, Football हो, या Tennis, भारतीय खिलाड़ियों ने Medals की झड़ी लगा

दी। इन पदक विजेताओं की Life Journey काफी Inspiring रही है। हरियाणा के रणवीर सैनी ने Golf में Gold Medal जीता है। बचपन से ही Autism से जूझ रहे रणवीर के लिए कोई भी चुनौती Golf को लेकर उनके जुनून को कम नहीं कर पाई। उनकी माँ तो यहाँ तक कहती हैं कि परिवार में आज सब Golfer बन गए हैं। पुडुचेरी के 16 साल के टी-विशाल ने चार Medal जीते। गोवा की सिया सरोदे ने Powerlifting में 2 Gold Medals सहित चार पदक अपने नाम किये। 9 साल की उम्र में अपनी माँ को खोने के बाद भी उन्होंने खुद को निराश नहीं होने दिया। छत्तीसगढ़ के दुर्ग के रहने वाले अनुराग प्रसाद ने Powerlifting में तीन Gold और एक Silver Medal जीता है। ऐसे ही प्रेरक गाथा झारखंड के इंदु प्रकाश की है, जिन्होंने Cycling में दो Medal जीते हैं। बहुत ही साधारण परिवार से आने के बावजूद, इंदु ने गरीबी को कभी अपनी सफलता के सामने दीवार नहीं बनने दिया। मुझे विश्वास है कि इन खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की सफलता Intellectual Disabilities का मुकाबला कर रहे अन्य बच्चों और परिवारों को भी प्रेरित करेगी। मेरी आप सब से भी प्रार्थना है आपके गाँव में, आपके गाँव के अगल-बगल में, ऐसे बच्चे, जिन्होंने इस खेलकूद में हिस्सा लिया है या विजयी हुए हैं, आप सपरिवार उनके साथ जाइए। उनको बधाई दीजिये। और कुछ पल उन बच्चों के साथ बिताइए। आपको एक नया ही अनुभव होगा। परमात्मा ने उनके अन्दर एक ऐसी शक्ति भरी है आपको भी उसके दर्शन का मौका मिलेगा। जरुर जाइएगा।

आप सभी ने गुजरात के तीर्थक्षेत्र अंबाजी मंदिर के बारे में तो अवश्य ही सुना होगा। यह एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ है, जहां देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु मां अंबे के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। यहां गब्बर पर्वत के रास्ते में आपको विभिन्न प्रकार की योग मुद्राओं और आसनों की प्रतिमाएं दिखाई देंगी। क्या आप जानते हैं कि इन प्रतिमाओं की खास क्या बात है? दरअसल ये Scrap से बने Sculpture हैं, एक प्रकार से कबाड़ से बने हुए और जो बेहद अद्भुत हैं। यानि ये प्रतिमाएं इस्तेमाल हो चुकी, कबाड़ में फेंक दी गयी पुरानी चीजों से बनाई गई हैं। अंबाजी शक्तिपीठ पर देवी मां के दर्शन के साथ-साथ ये प्रतिमाएं भी श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन गई हैं। इस प्रयास की सफलता को देखकर, मेरे मन में एक सुझाव भी आ रहा है। हमारे देश में बहुत सारे ऐसे लोग हैं, जो Waste से इस तरह की कलाकृतियां बना

जब भी स्वच्छ भारत और "Waste to Wealth" की बात आती है, तो हमें, देश के कोने-कोने से अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते हैं।

असम के Kamrup Metropolitan District में Akshar Forum इस नाम का एक School बच्चों में, Sustainable Development की भावना भरने का, संस्कार का, एक निरंतर काम कर रहा है।

सकते हैं। तो मेरा गुजरात सरकार से आग्रह है कि वो एक प्रतियोगिता शुरू करे और ऐसे लोगों को आमंत्रित करे। ये प्रयास, गब्बर पर्वत का आकर्षण बढ़ाने के साथ ही, पूरे देश में 'Waste to Wealth' अभियान के लिए लोगों को प्रेरित करेगा।

जब भी स्वच्छ भारत और 'Waste to Wealth' की बात आती है, तो हमें, देश के कोने-कोने से अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते हैं। असम के Kamrup Metropolitan District में Akshar Forum इस नाम का एक School बच्चों में, Sustainable Development की भावना भरने का, संस्कार का, एक निरंतर काम कर रहा है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थी हर हफ्ते Plastic Waste जमा करते हैं, जिसका उपयोग Eco- Friendly ईंटें और चाबी की Chain जैसे सामान बनाने में होता है।

यहां Students को Recycling और Plastic Waste से Products बनाना भी सिखाया जाता है। कम आयु में ही पर्यावरण के प्रति ये जागरूकता, इन बच्चों को देश का एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाने में बहुत मदद करेगी।

आज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहाँ हमें नारी शक्ति का सामर्थ्य देखने को नहीं मिल रहा हो। इस दौर में, जब हर तरफ उनकी उपलब्धियों को सराहा जा रहा है, तो हमें भक्ति की शक्ति को दिखाने वाली एक ऐसी महिला संत को भी याद रखना है, जिसका नाम इतिहास के सुनहरे पन्नो में दर्ज है। देश इस वर्ष महान संत मीराबाई की 525वीं जन्म-जयंती मना रहा है। वो देशभर के लोगों के लिए कई वजहों से एक प्रेरणा शक्ति रही हैं।

अगर किसी की संगीत में रूचि हो, तो वो संगीत के प्रति समर्पण का बड़ा उदाहरण ही है, अगर कोई कविताओं का प्रेमी हो, तो भक्ति रस में डूबे मीराबाई के भजन, उसे अलग ही आनंद देते हैं, अगर कोई दैवीय शक्ति में विश्वास रखता हो, तो मीराबाई का श्रीकृष्ण में लीन हो जाना उसके लिए एक बड़ी प्रेरणा बन सकता है। मीराबाई, संत रविदास को अपना गुरु मानती थी। वो कहती भी थी-

गुरु मिलिया रैदास,
दीन्ही ज्ञान की गुटकी।

देश की माताओं-बहनों और बेटियों के लिए मीराबाई आज भी प्रेरणापुंज हैं। उस कालखंड में भी उन्होंने अपने भीतर की आवाज को ही सुना और रुढ़िवादी धारणाओं के खिलाफ खड़ी हुई। एक संत के रूप में भी वे हम सबको प्रेरित करती हैं। वे भारतीय समाज और संस्कृति को तब सशक्त करने के लिए आगे आईं, जब देश कई प्रकार के हमले झेल रहा था। सरलता और सादगी में कितनी शक्ति होती है, ये हमें मीराबाई के जीवनकाल से पता चलता है। ▪

गांधी के उत्तराधिकारी नाम से नहीं कर्म से तय होंगे

प्रधानमंत्री एवं विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता श्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय जनता पार्टी की बापू के प्रति अगाध श्रद्धा सर्वविदित है।

मोदी जी दिखावा पसंद राजनेता कभी नहीं रहे। उन्होंने किसी महापुरुष की कीर्ति को अपने संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ के लिए भुनाने हेतु कभी अनैतिक प्रयास भी नहीं किए।

विष्णु दत्त शर्मा

अखिल विश्व में स्वयं के अहिंसावादी मूल्यों के लिए विख्यात महात्मा गांधी आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वह अपने जीवनकाल में थे। दो अक्टूबर को बापू की 154 वीं जयंती के अवसर पर भारत ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देश मानवता और मानवीय मूल्यों के लिए आजीवन संघर्ष करने वाले इस युग-पुरुष को याद करते हुए अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं। बापू का पूरा जीवन शोषित, पीड़ित एवं वंचितों के लिए समर्पित रहा। वो अहिंसा के ऐसे विश्वदूत बने, जिनका व्यक्तित्व भारत ही नहीं अपितु विश्व के लिए एक नई मिसाल बन गया। यही कारण है कि आज संपूर्ण विश्व में बापू के प्रति अगाध श्रद्धा एवं आस्था रखता है। उनका स्वच्छता एवं स्वदेशी के प्रति प्रेम अनुकरणीय है।

दुर्भाग्य से देश की आजादी के बाद सबसे लंबे समय तक सत्ता में रही कांग्रेस पार्टी ने बापू के नाम और उनके विचारों का राजनीतिक लाभ के लिए भरपूर उपयोग तो किया, लेकिन न तो उन्हें श्रद्धा और सम्मान दिया, न ही उनके विचारों को आत्मसात कर, उनके पदचिन्हों पर चलने और देश को चलाने का प्रयास किया। उनके लिए बापू की सीखें और दर्शन मौके-बेमौके, विभिन्न समारोहों में प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गए। उन्हें न ही स्वदेशी से कोई सरोकार था न ही बापू के सबसे बड़े सपने, देश में स्वच्छता से। उन्हें मतलब था तो केवल गाँधी जी के नाम पर थोक के भाव राजनीतिक वोट बैंक हथियाने से। इसी कारण देश के लाखों लोग साल दर साल प्रदूषण, स्वच्छता के अभाव में होने वाली बीमारियों और दूषित पानी के कारण काल के ग्रास में चले जाते थे या अनेक गंभीर बीमारियों का शिकार हो जाते थे।

बापू के विचारों, उनकी सीखों, उनके दर्शन को अपनाकर उन्हें अपने और राष्ट्रीय आचरण में उतारने का ईमानदार प्रयास 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने शुरू किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के लिए स्वच्छता से लेकर स्वदेशी तक और गरीबों के लिए कल्याणकारी रामराज्य से लेकर आत्मनिर्भर भारत तक कोई आदर्श वाक्य नहीं है, बल्कि व्यवहारिक प्रयोग हैं। सच्चे अर्थों में प्रधानमंत्री श्री मोदी महात्मा गांधी के विचारों और मूल्यों को, उनके सपनों को जमीन पर उतारने का काम कर रहे हैं। देश के वर्तमान प्रधानमंत्री एवं विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता श्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय जनता पार्टी की बापू के प्रति अगाध श्रद्धा सर्वविदित है। मोदी जी दिखावा पसंद राजनेता कभी नहीं रहे। उन्होंने किसी महापुरुष की कीर्ति को अपने संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ के लिए भुनाने हेतु कभी अनैतिक प्रयास भी नहीं किए। किन्तु पूरी निष्ठा और ईमानदारी पूर्वक देश के महापुरुषों के द्वारा देखे गए स्वप्नों को पूरा करने के लिए भारत माँ का यह सच्चा सपूत दिन-रात बिना थके-बिना रुके ''रामकाज किन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम'' के भाव के साथ लगे हुए हैं। उनके लिए राष्ट्रसेवा ही रामकाज है।

वैसे कुछ लोग इस बात से असहमत भले हों किन्तु फिर भी मुझे कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि श्रद्धेय बापू और देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी में अनेक विशिष्ट समानताएँ हैं। दोनों अद्भुत परिश्रमी और प्रचण्ड पुरुषार्थी हैं। दोनों स्वच्छता एवं स्वदेशी के दुर्लभ पैरोकार हैं। दोनों की लोकप्रियता भी सर्वविदित है। दोनों के मन मस्तिष्क में राष्ट्र प्रथम के साथ ही मानवता की सेवा और विश्व बंधुत्व का भाव भी समान रुप से दृष्टिगत होता है। गुजरात की पवित्र माटी में जन्मे इन दोनों सपूतों ने भारत माता का मस्तक अपने कृतित्व के माध्यम से सदैव ऊंचा रखा है।

''स्वच्छता, स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी है।'' महात्मा गांधी द्वारा कहे गए इस वाक्य को आत्मसात करते हुए 2 अक्टूबर 2014 को बापू की जयंती के अवसर पर श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार ने स्वच्छता को मिशन बनाकर एक ऐसे जनान्दोलन के रुप में परिवर्तित कर दिया जो सम्पूर्ण विश्व के लिए कौतूहल का विषय हो गया। हर कोई इस अभियान की सफलता देखकर हतप्रभ रह गया। बड़े-बड़े सेलीब्रिटी, राजनेता एवं भारत के सभी लोग हाथ में झाड़ू लेकर अपने-अपने गली मोहल्ले की सफाई में लग गए। सार्वजनिक जगहों में बिना रोक-टोक के गंदगी फैलाने वाले लोग स्वयं से कचरा उठाकर डस्टबिन में डालने लगे। साथ ही खुले आम शौच करने वाले आमजन भी स्वयं के साथ दूसरों को भी शौचालय के महत्व समझाने लगे। कुल मिलाकर सभी एक नई गति और नए कलेवर के साथ बदलते भारत की नवीनतम तस्वीर बनाने में जुट गए।

महात्मा गांधी ने कहा था-''यदि हम अपने घरों के पीछे सफाई नहीं रख सकते तो स्वराज की बात बेईमानी होगी। हर किसी को स्वयं अपना सफाईकर्मी होना चाहिए''। प्रधानमंत्री

सोशल मीडिया सशक्त माध्यम : विष्णुदत्त शर्मा

मोदी जी की प्रेरणा से सोशल मीडिया वॉलिंटियर्स नए भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जो कहते है उसे शत प्रतिशत पूरा करते है। जिसके कारण आज भारत ही नहीं दुनिया के अंदर हमारे नेतृत्व के प्रति एक विश्वास का भाव पैदा हुआ है। गरीबों का जीवन बदलने का अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रारंभ किया है। वहीं अनेक निर्णय देश हित में प्रधानमंत्री जी ने लिए है। इन सब बातों को आगे ले जाने का काम सोशल मीडिया वॉलिंटियर्स को करना है।

देश के प्रधानमंत्री रहे राजीव गांधी ने कहा था कि अगर हम 1 रूपए भेजते है तो 85 पैसे बिचौलिए खा जाते है, सिर्फ 15 पैसे ही गरीब तक पहुंचता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने डीबीटी के माध्यम से एक पारदर्शी व्यवस्था दी, जिसके तहत अगर 1 रूपए मोदी सरकार गरीब को भेजती है तो पूरा का पूरा 1 रूपया गरीब के खाते में पहुंचता है। मोदी जी ने बिचौलियों और दलालों को खत्म किया है। कांग्रेस के भ्रष्टाचार की नीतियां आज भी इनकी पार्टी में समाहित है। उन्हें समाज के सामने उजागर करने का सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है।▪

मोदी जी के आव्हान पर महात्मा गांधी द्वारा प्रेरित स्वच्छता अभियान के प्रति देश ने एक ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन देखा, जिसमें जन-जन ने अपना अभूतपूर्व सहयोग देकर स्वच्छ भारत की छवि में चार चाँद लगा दिए। 2014 में यूएन द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी खुले में शौच करती थी। लेकिन इस स्वच्छता अभियान के पांच वर्ष बाद ही सन् 2019 में बापू के 150 वीं जयंती तक 100 मिलियन से अधिक शौचालयों का निर्माण करके ग्रामीण भारत ने स्वयं को ''खुले में शौच'' से मुक्त करके स्वयं के ऊपर लगे कलंक से मुक्ति प्राप्त कर ली।

''जो परिवर्तन आप दूसरों में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें।'' बापू की इस बात को स्वयमेव लेते हुए देश की जनता, भारतीय जनता पार्टी के समस्त कार्यकर्ता और तमाम समाजसेवी संगठनों ने मिलकर अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। कोई भी कार्य कुशल नेतृत्व एवं मजबूत संगठन के बिना अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता। दूरदर्शी सोच और दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर ही मध्यप्रदेश स्वच्छता के मापदण्ड पर देश भर में शुरुआत से ही अव्वल रहा है। केन्द्रीय नेतृत्व और प्रदेश संगठन के साझा प्रयासों ने एक नया इतिहास दर्ज करवाते हुए मध्यप्रदेश को स्वच्छता में अग्रणी राज्य का तमगा दिलवाया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के आव्हान पर पूरे देश में चलाए जा रहे स्वच्छता अभियान के सुखद परिणाम अब दिखाई देने लगे हैं और यह अभियान देश में अब एक सामाजिक परिवर्तन का वाहक बन गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण भारत के खुले में शौच मुक्त होने के बाद से हैजा जैसी संक्रामक बीमारियों में उल्लेखनीय कमी आई है। महिलाओं को शर्मिंदगी नहीं झेलनी पड़ती है और ग्रामीण इलाकों में महिला अपराधों और छेड़छाड़ जैसी घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। इसी अभियान के अंतर्गत पहल करते हुए भारतीय रेलवे ने ट्रेन के कोचों में बॉयो डाइजेस्टर युक्त शौचालयों का प्रयोग शुरू किया, जिसके बाद से रेलवे ट्रैक, रेल्वे प्लेटफॉर्म और स्टेशन गंदगी से मुक्त हो गए हैं। सबसे बड़ा बदलाव लोगों की आदत में आया है और वह यह है कि आज सार्वजनिक स्थल पर कचरा फेंकने से पहले दस बार सोचता है और अगर उसे मजबूरी में इधर-उधर कचरा फेंकना भी पड़े, तो ऐसा करते समय वह कहीं न कहीं अपराध बोध से ग्रसित महसूस करता है। देश के लोगों में स्वच्छता के प्रति यही जिम्मेदारी का भाव पैदा कर देना प्रधानमंत्री मोदी जी के प्रयासों की सबसे बड़ी सार्थकता है।

इन तमाम विसंगतियों के प्रति सूक्ष्म एवं दूरदर्शी सोच रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान, हर घर जल योजना, उज्जवला योजना, आयुष्मान भारत योजना सहित अनेकों प्रभावकारी योजनाओं के माध्यम से एक निर्णायक परिदृश्य का निर्माण किया है। जहां हर कोई आत्मविश्वास के साथ कह सकता है कि मेरा देश बदल रहा है। और यह बदलाव एक ऐसे जननायक के माध्यम से आया है जो किसी भी स्थिति में देश को सर्वोपरि मानता है। वह राष्ट्रीय हितों के मुद्दों पर बिना किसी लाग-लपेट या संकोच के मजबूती से अडिग रहता है। वह शांति का हिमायती है लेकिन डरपोक नहीं, वह अन्तरराष्ट्रीय संबंधों का पक्षधर है किन्तु देशहित को प्रभावित किए बिना। वह सही को सही और गलत को गलत कहने का दम रखता है। तभी तो समूचा विश्व उसके सम्मोहन के मोहपाश में है। आज जब देश महात्मा गांधी जी की 154 वीं जन्म-जयंती मना रहा है। भारत प्रगति के नित नए आयाम गढ़ रहा है। आज 140 करोड़ देशवासियों की सम्मिलित शक्ति का भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था और महाशक्ति बन चुका है। दुनिया की आँख से आँख मिलाने का यह दमखम देश ने स्वदेशी की शक्ति से अर्जित किया है।

आज हमारी तकनीकी शक्ति और समृद्धि से चन्द्रयान के रूप में अंतरिक्ष क्षेत्र गुंजायमान हो रही है। ऐसे महत्वपूर्ण समय में हम सभी का यह प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए कि राष्ट्रसेवक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का हमारा संकल्प कहीं मंदा न पड़े। स्वच्छता के रूप में समृद्ध भारत के वैभव का दर्शन सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त हो इससे बेहतर और सच्ची श्रद्धांजलि गांधी जी को और क्या होगी? मेरी समझ से आज देश में यह अनिवार्य बहस भी होनी चाहिए कि महात्मा गांधी के वास्तविक राजनीतिक उत्तराधिकारी जबरन उनके नाम को अपनाने वाले होंगे या फिर उनके काम और विजन को आत्मसात करने वाले। ▪

(लेखक खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद व मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष हैं)

आज भारत के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

भारत सफलता की जिस ऊंचाई पर है, वो अभूतपूर्व है

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मानाम्।

अर्थात्, सज्जन व्यक्ति जैसा मन में सोचते हैं वैसा ही कहते भी हैं और करते भी हैं। यही एक कर्तव्य परायण व्यक्तित्व की पहचान होती है। कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति तात्कालिक लाभ के लिए नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए काम करता है। एक पुरानी कहावत भी है। अगर एक साल का सोच रहे हैं तो अनाज बोइए। अगर एक दशक का सोच रहे हैं तो फल वाले पेड़ लगाइए। और अगर एक शताब्दी का सोच रहे हैं तो शिक्षा से जुड़ी संस्थाएं बनाइए।

एजुकेशन हो, केरियर हो, जीवन हो या फिर पॉलिटिक्स, शॉर्ट कट भले कुछ तात्कालिक लाभ पहुंचा दे, लेकिन लॉन्ग टर्म सोच के साथ ही काम करना चाहिए। जो भी व्यक्ति, समाज में या सियासत में तात्कालिक स्वार्थ के लिए काम करता है, उससे समाज का, राष्ट्र का नुकसान ही होता है।

साल 2014 में जब देश ने मुझे प्रधान-सेवक का दायित्व दिया, तो मेरे सामने भी

Dream Big and Achieve Big. हमने संकल्प लिया है कि इन अगले 25 सालों में देश को विकसित बनाकर दिखाएंगे। और ये आपको करना है, भारत की young Generation को करना है। अगले 25 साल आपकी Life के लिए जितने जरूरी हैं, उतने ही भारत के लिए भी जरूरी हैं।

दो-Option थे। या तो सिर्फ तात्कालिक लाभ के लिए काम करें, या फिर लॉन्ग टर्म अप्रोच को अपनाएं। हमने तय किया कि हम 2 साल, 5 साल, 8 साल, 10 साल, 15 साल, 20 साल, ऐसे अलग-अलग Time band रखकर, इनके लिए काम करेंगे। आज हमारी सरकार को 10 साल हो रहे हैं। इन 10 वर्षों में देश ने लॉन्ग टर्म प्लानिंग के साथ जो फैसले लिए हैं, वो अभूतपूर्व हैं। हमने देश को कितने ही Pending फैसलों के बोझ से मुक्त किया है। 60 साल से डिमांड हो रही थी कि जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 को हटाया जाए। ये काम हमारी सरकार ने किया। 40 साल से डिमांड हो रही थी कि पूर्व फौजियों को वन रैंक वन पेंशन दी जाए। ये काम हमारी सरकार ने किया। 40 साल से डिमांड हो रही थी कि GST को लागू करना है। ये काम भी हमारी सरकार ने ही किया।

दशकों से मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाने की डिमांड कर रही थीं। तीन तलाक के खिलाफ कानून भी हमारी सरकार के दौरान ही बना। लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को रिजर्वेशन का कानून बनाया गया है। ये काम भी दशकों से Pending था। नारी-शक्ति वंदन अधिनियम भी हमारी ही सरकार ने बनाया है।

अगर हमारी सरकार ये फैसले नहीं लेती तो इसका बोझ किस पर ट्रांसफर होता?

आपकी जनरेशन पर होता?

तो मैंने आपकी जनरेशन का भी कुछ बोझ हल्का कर दिया है। और मेरी कोशिश यही है कि आज की Young Generation के लिए देश में एक बहुत ही Positive माहौल क्रिएट

हो। एक ऐसा माहौल जिसमें आपकी जनरेशन के पास Opportunities की कोई कमी ना हो। एक ऐसा माहौल जिसमें भारत का युवा बड़े सपने देखें और उसे प्राप्त भी करे।

Dream Big and Achieve Big. हमने संकल्प लिया है कि इन अगले 25 सालों में देश को विकसित बनाकर दिखाएंगे। और ये आपको करना है, भारत की young Generation को करना है।

अगले 25 साल आपकी Life के लिए जितने जरूरी हैं, उतने ही भारत के लिए भी जरूरी हैं। ये संकल्प होना चाहिए-

मैं बनाऊंगा विकसित भारत।

मैं Nation First की सोच के साथ हर काम करूंगा।

मैं Innovate करूंगा,

मैं Research करूंगा,

मैं प्रोफेशनल वर्ल्ड में रहूं या फिर किसी भी Place में, मैं भारत को विकसित बनाकर ही रहूंगा।

विष्णु-पुराण में लिखा है,

गायन्ति देवा: किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

अर्थात देवता भी यही गान करते हैं कि जिसने इस भारत भूमि में जन्म लिया है, वे मनुष्य, देवताओं से भी अधिक सौभाग्यशाली हैं। आज भारत सफलता की जिस ऊंचाई पर है, वो अभूतपूर्व है। पूरे विश्व में भारत की धाक जमी हुई है। 23 अगस्त को भारत चंद्रमा पर वहां पहुंचा, जहां अब तक कोई देश नहीं पहुंच पाया। जी-20 में भी आपने देखा कि कैसे भारत का परचम लहराया? आज भारत, दुनिया की fastest growing large economy है। आज भारत, global fintech adoption rate में नंबर वन है। आज भारत, Real Time Digital Transaction करने में दुनिया में नंबर वन है। आज भारत, smartphone data consumer के मामले में नंबर वन है।

आज भारत, internet users की संख्या के मामले में दुनिया में नंबर दो पर है। आज भारत, दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा mobile manufacturer है। आज भारत में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा startup ecosystem है। आज भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा energy consumer है। आज भारत, अंतरिक्ष में अपना स्पेस स्टेशन स्थापित करने की तैयारी कर रहा है। ग्वालियर में तो एयरफोर्स का बड़ा बेस है... आपने समंदर में INS विक्रांत की हुंकार देखी है...आज भारत के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। भारत का बढ़ता हुआ ये सामर्थ्य, हर सेक्टर में आपके लिए नई Possibilities बना रहा है।

साल 2014 से पहले हमारे यहां कुछ सौ स्टार्ट्अप्स हुआ करते थे। आज भारत में स्टार्ट्अप्स का आंकड़ा एक लाख के आसपास पहुंच रहा है। बीते कुछ सालों में भारत में 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न बने हैं। आप लोग भी जानते हैं कि एक यूनिकॉर्न मतलब....कम से कम 8 हजार करोड़ रुपए की कंपनी।

'The world is your oyster!!! और सरकार के तौर पर हमने भी आपके लिए नए-नए सेक्टर्स Open कर दिए हैं। पहले सैटेलाइट सिर्फ सरकार बनाती थी या विदेश से मंगाती थी। हमने स्पेस सेक्टर को आप जैसे युवाओं के लिए उसे भी Open कर दिया। पहले डिफेंस Equipment भी या तो सरकार बनाती थी या विदेश से मंगाती थी। हमने डिफेंस सेक्टर को भी आप जैसे युवाओं के लिए Open कर दिया। ऐसे कितने ही सेक्टर्स हैं जो अब भारत में आपके लिए बन रहे हैं।

आपको मेक इन इंडिया के संकल्प को आगे बढ़ाना है। आपको आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को आगे बढ़ाना है। मेरा एक और मंत्र याद रखिएगा। हमेशा Out of The Box सोचिए। माधवराव सिंधिया जी जब रेलमंत्री थे तो उन्होंने शताब्दी ट्रेनें शुरू करवाई थीं। इसके तीन दशक बाद तक भारत में फिर ऐसी आधुनिक ट्रेनें नहीं शुरू हो पाईं। अब देश में वंदे भारत का भी जलवा है और नमो भारत की रफ्तार भी आपने देख ली है।

यहां आने से पहले मैं सिंधिया स्कूल के अलग-अलग Houses के नाम देख रहा था। स्वराज के संकल्प से जुड़े नाम बड़ी प्रेरणा हैं। शिवाजी हाउस....महादजी हाउस, राणोजी हाउस, दत्ताजी हाउस, कनरखेड़ हाउस, निमाजी हाउस, माधव हाउस, एक तरह से सप्त-ऋषियों की ताकत है आपके पास। और मैं सोच रहा हूं कि आप सभी को नौ टास्क भी दूं क्योंकि स्कूल का कार्यक्रम हो और आप होमवर्क ना दें तो पूरा नहीं होता है।

पहला- आप लोग यहां जल-संरक्षण का इतना काम करते हैं। Water Security, 21वीं सदी की बहुत बड़ी चुनौती है। इसके लिए आप लोगों को जागरूक करने का अभियान चलाइए।

दूसरा- सिंधिया स्कूल में गांव गोद लेने की परंपरा रही है। आप लोग और भी गांव जाइए वहां डिजिटल लेन-देन के प्रति लोगों को Inform करिए।

तीसरा- स्वच्छता का मिशन। मध्य प्रदेश का इंदौर सफाई में नंबर वन हो अगर ये स्थिति प्राप्त कर सकता है तो ये मेरा ग्वालियर क्यों नहीं हो सकता? आप अपने शहर को स्वच्छता में नंबर वन बनाने का भी बीड़ा उठाइए।

चौथा- Vocal For Local... जितना हो सके आप लोकल को, स्थानीय प्रॉडक्ट्स को प्रमोट करिए, मेड इन इंडिया प्रॉडक्ट्स का ही इस्तेमाल करिए।

पांचवा- Travel In India Firsts जितना हो सके, पहले अपना देश को देखिए, अपने देश में घूमिए, फिर विदेशों का रुख करिए।

छठा- नेचुरल फार्मिंग के प्रति किसानों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक करिए। ये धरती मां को बचाने के लिए बहुत जरूरी अभियान है।

सातवां- मिलेट्स को-श्री-अन्न को अपने जीवन में शामिल करिए, इसका खूब प्रचार-प्रसार करिए। आप जानते हैं ना ये सुपर फूड होता है।

आठवां- फिटनेस योग हो, स्पोर्ट्स हो, उसे भी अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाइए। आज ही यहां मल्टी-पर्पज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास भी हुआ है। इसका भी आप खूब लाभ उठाइए।

और नवां- कम से कम एक गरीब परिवार की Hand Holding जरूर करिए। जब तक देश में एक भी गरीब ऐसा है जिसके पास गैस कनेक्शन नहीं है, बैंक अकाउंट नहीं है, पक्का घर नहीं है, आयुष्मान कार्ड नहीं है...हम चैन से नहीं बैठेंगे। भारत से गरीबी दूर करने के लिए ये बहुत जरूरी है। इसी रास्ते पर चलकर पांच सालों में ही साढ़े 13 करोड़ लोग, गरीबी से बाहर आए हैं। इसी रास्ते पर चलते हुए भारत गरीबी भी दूर करेगा और विकसित भी बनेगा।

आज का भारत जो भी कर रहा है, वो मेगा स्केल पर कर रहा है। इसलिए, आपको भी अपने फ्यूचर को लेकर छोटा नहीं सोचना है। आपके सपने और संकल्प दोनों बड़े होने चाहिए। और मैं आपको ये भी बता दूं, आपका सपना ही मेरा संकल्प है। आप अपने thoughts, अपने ideas, नमो APP पर भी मेरे साथ शेयर कर सकते हैं। और अब मैं व्हाट्सऐप पर भी हूं, वहां भी आपसे कनेक्ट हो सकता है। आप चाहें तो अपने सीक्रेट्स भी शेयर कर सकते हैं। और मैं आपसे वादा करता हूं मैं किसी को नहीं बताऊंगा।

जीवन ऐसे ही हंसी मजाक में चलते रहना चाहिए। आप खुश रहिए....स्वस्थ रहिए। मुझे आप सभी पर पूरा भरोसा है। ▪

बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की। 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके में "धरती बाबा" के नाम से पुकारा और पूजा जाता था। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी। 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है। बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुई थी। उनके द्वारा चलाया जाने वाला सहस्रादवादी आंदोलन ने बिहार और झारखंड में खूब प्रभाव डाला था। केवल 25 वर्ष के जीवन में उन्होंने इतने मुकाम हासिल कर लिए थे कि आज भी भारत की जनता उन्हें याद करती है और भारतीय संसद में एकमात्र आदिवासी नेता बिरसा मुंडा का चित्र टंगा हुआ है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को रांची जिले के उलिहतु गाँव में हुआ था। मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया। अब वो अपने विद्रोह में इतने उग्र हो गये थे कि आदिवासी जनता उनको भगवान मानने लगी थी और आज भी आदिवासी जनता बिरसा को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से पूजती है। उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगों को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो। उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जता है।

अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था। बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा ''हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमो का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।'' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। अब बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री
रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। अत्यंत सुन्दर होने के कारण पेशवा बाजीराव द्वितीय ने उन्हें एक और नाम दे रखा था- "छबीली"। मनुबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपन्त ताम्बे तथा माता का नाम भागीरथी बाई था। चार वर्ष की आयु में ही मनु को माता के स्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। उनके पिता मोरोपन्त को पेशवा बाजीराव द्वितीय ने कानपुर के पास विठूर में बुलवा लिया। यहाँ मनुबाई का पेशवा के पुत्र श्री नानासाहब के साथ घुड़सवारी करना, तलवार तथा धनुष, तीर चलाना सीखने का अवसर मिला। मनुबाई प्रतिभाशाली तो थी ही शीघ्र ही उन्होंने धर्नुविद्या एवं अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी निपुणता प्राप्त कर ली। तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। तब से वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं। सोलह वर्ष की आयु में वे माता बनीं। किन्तु नवजात पुत्र शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। पुत्र शोक में व्याकुल राजा गंगाधर राव भी नवम्बर 1853 में स्वर्गवासी हो गए। तब उन्होंने दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया।

राजा गंगाधर राव की मृत्यु का लाभ लेने के लिए तथा रानी को निर्बल मानकर 16 मार्च 1854 को तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी ने अपनी हड़प-नीति के अर्न्तगत झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने की घोषणा कर दी। लार्ड डलहौजी की हड़प-नीति का रानी ने पुरजोर विरोध किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य को स्पष्ट चेतावनी देते हुए घोषणा की- मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। अंग्रेजों की इस कुटिल नीति का परिणाम झाँसी के अलावा सतारा, नागपुर, उदयपुर, जैतपुर, बामोर, संबलपुर, अवध आदि रियासतों को भी भोगना पड़ा। इस कुटिल नीति के अंतर्गत अंग्रेजों ने राजाओं, नवाबों तथा यहां तक की दिल्ली बादशाह की पेंशन भी, या तो कम कर दी या बन्द ही कर दी और धीरे-धीरे उन रियासतों को येन केन प्रकारेण ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करना प्रारम्भ कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्याटोपे आदि के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि निर्मित हुई। इसी योजना के तहत झाँसी में भी 16 मार्च 1857 से लेकर 5 जून 1857 तक क्रांति की तैयारियां प्रारंभ हुईं। उन्होंने पुरूष सैनिकों के साथ-साथ वीर नारियों की भी एक सेना तैयार की तथा उनको युद्ध करने का पूरा प्रशिक्षण दिया।

अंग्रेजों के साथ युद्ध सुनिश्चित था अतः रानी ने झाँसी के राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए दीवान रघुनाथ सिंह को सेनापति नियुक्त किया। गोस मुहम्मद तोपों के दस्ते के प्रधान बनाए गए। भाऊ बख्शी को उनका सहयोगी बनाया गया। बुरहानुद्दीन और मोती बाई को जासूसी विभाग सौंपा। बारूद बनाने के लिए कुशल व्यक्ति बुलवाए गए। कड़क बिजली, भवानी शंकर जैसी नालदार तोपों को चुस्त-दुरस्त किया गया पर अंग्रेजों के साथ युद्ध करने से पूर्व उन्हें दो युद्ध और लड़ने पड़े। इनमें पहला युद्ध महाराज गंगाधर राव के संबंधी सदाशिव राव से हुआ। उसने ग्वालियर की सहायता से झाँसी पर आक्रमण कर वहां के निकटवर्ती दुर्ग पर अधिकार कर लिया था और अपने को राजा घोषित कर लिया था। रानी ने उसका सामना किया और उसे बन्दी बनाकर झाँसी के किले में रख दिया।

दूसरा युद्ध ओरछा राज्य के दीवान नत्थे खान के साथ हुआ। नत्थे खान ने बीस हजार की सेना लेकर झांसी के मऊरानीपुर और बरुआ सागर पर अधिकार कर लिया था। उसने झांसी के किले को चारों ओर से घेरकर तोपों से प्रहार किया। दोनों ओर से भीषण गोलाबारी हुई। अन्त में नत्थे खान प्राण लेकर भागा।

इसके बाद रानी का भीषणतम और अन्तिम युद्ध अंग्रेजों के साथ हुआ। अंग्रेजी सेना के ब्रिगेडियर स्टुमर्ट के सहयोग से, सर ह्यूरोज ने 21 मार्च 1858 को झाँसी को घेर लिया। यह युद्ध बारह दिन तक चला पर इल्हा जू बुन्देला तथा अली बहादुर जैसे देशद्रोहियों ने विश्वासघात किया और किले का ओरछा दरवाजा अंग्रेजों की सेना के लिए खोल दिया।

इस युद्ध में बानपुर के राजा मर्दनसिंह तथा बाँदा के नवाब ने रानी की सहायता की। 1 अप्रैल 1858 को कालपी से राव साहब ने तोपखाने के साथ बीस हजार की सेना सहायतार्थ भेजी पर उसका लाभ झाँसी को नहीं मिल सका। अब पराजय निश्चित थी क्योंकि रानी के महल के चारों ओर अंग्रेजों ने भीषण नरसंहार और अग्निकांड शुरू कर दिया था। तब रानी ने अपने सब सहयोगियों को बुलाकर उनसे भविष्य की रणनीति तय करने के लिए परामर्श किया। सबने मिलकर यह तय किया कि वे सब केसरिया झंडा लेकर सूर्योदय के पूर्व ही किले से निकलकर, युद्ध करते हुए मृत्यु पर्यन्त शत्रुओं से जूझेंगे। जीवित रहते हुए अंग्रेजों के हाथ बन्दी नहीं होंगे। महारानी के लिए यह तय किया गया कि वह अपने दल के साथ रात्रि में ही कालपी के लिए प्रस्थान करेंगी।

रात के चौथे पहर में रानी अपने दल के साथ नगर की ओर के भांडेरी फाटक से मारकाट करती हुए निकली और कालपी के लिए प्रस्थान कर गई। झलकारी बाई ने रानी का पैचदार साफा बांधा और अंग्रेजों के सामने समर्पण कर दिया ताकि अंग्रेज युद्ध बन्द कर दें और रानी सुरक्षित रहें ह्यूरोज चालाक था। उसने रानी का पीछा किया। कालपी से रानी ग्वालियर पहुंची। उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया पर 16 जून 1858 को अंग्रेजों ने वहां भी आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध हुआ पर अन्ततः झांसी की सेना को परास्त होना पड़ा। रानी का घोड़ा उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए भागा पर एक बरसाती नाले के सामने आ जाने के कारण रानी को रूकना पड़ा। घोड़ा मारा गया। रानी की पसलियों में गोली लगी। एक गोरे की तलवार का भरपूर वार उनके माथे और कन्धे को चीर गया। रानी ने आदेश दिया कि उनकी मृत देह अंग्रेजों के हाथ न पड़ने पाए और साधु गंगादास के हाथ से गंगाजल पीकर देह का त्याग किया। उनकी मृत देह को घास की चिता पर रखकर अग्नि संस्कार किया गया। उनके इस बलिदान पर ह्यूरोज ने कहा- 'समस्त विश्व में झाँसी की रानी सर्वाधिक वीर तथा कुशल योद्धा थीं। मखमली दस्तानों के भीतर उनकी उँगलियां फौलादी थीं। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री ने देश के लिए बलिदान दिया। ▪

लाला लाजपत राय, जिनका बलिदान, ब्रिटिश शासक के ताबूत की कील बना

लुधियाना जिले में जागरांव एक कस्बा है। लाला लाजपतराय के दादा वहां एक दुकानदार थे। पिता जी श्री राधाकृष्ण जी एक विद्यालय में अध्यापक थे। वह उर्दू के लेखक और स्वामी दयानंद जी के भक्त थे। लाला लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 को अपने ननिहाल पंजाब में ढुड्डिके गांव में हुआ था। लाला जी के पिता अध्यापक थे, आर्य समाज से जुड़े थे, अत्यन्त समाज सेवी थे। उन्होंने अपने बालक की शिक्षा एवं संस्कार की योजना भी इस प्रकार की जिससे बड़ा होकर वह भी समाज सेवा में लगे। पढ़ाई पूरी करने के पश्चात लाला लाजपतराय जी ने हिसार में वकालत प्रारंभ की। वह बुद्धि के तेज एवं बेधड़क वक्ता थे। शीघ्र ही वह एक सफल वकील के रूप में स्थापित हो गये। अच्छा धन कमाने लगे। परन्तु अपनी कमाई में से अच्छी राशि वह समाज सेवा में ही खर्च करते थे। हिसार में आर्य समाज की शाखा स्थापित की। हिसार में एक संस्कृत विद्यालय एवं भिवानी में एक अनाथालय की स्थापना की। वह म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य चुने गये तथा तीन वर्ष तक बिना वेतन के मंत्री रहे। लाला जी ने कांगड़ा (आजकल हिमाचल प्रदेश) में अछूतोद्धार का बहुत काम किया। पाठशालाएं खोलीं, आर्यसमाज एवं गुरूकुलों की स्थापना की जहां बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती थी। लाला जी चाहते थे कि हमारे बच्चे अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करें ताकि उनमें देश भक्ति का संस्कार बहुत दृढ़ हो सके। फलस्वरूप उन्होंने लाला हंसराज के सहयोग से लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की। बाद में जालन्धर, होशियारपुर में भी ऐसे कालेजों की स्थापना की। इन कालेजों ने अपने देश की स्वतंत्रता के आन्दोलन में अच्छी भूमिका निभाई।

धर्मान्तरण के विरूद्ध लाला जी का सिंहनाद-

बंगाल, मध्यप्रदेश तथा राजपूताने में भयंकर अकाल पड़ा। लाला जी ने इन क्षेत्रों के अकाल पीड़ितों की सहायता का कार्य अपने जिम्मे लिया। तथा इन इलाकों में बहुत अधिक अन्न एवं दूसरी सहायता की व्यवस्था की। इन क्षेत्रों में ईसाई पादरी भी सेवा के काम में लगे हुए थे परन्तु वे वहां पर सैकड़ों अनाथ बच्चों को ईसाई बना रहे थे। लाला जी ने इसका खूब डटकर विरोध किया। लाला लाजपत राय बहुत ही निर्भीक एवं क्रान्तिकारी विचारों के थे। उन्होंने उर्दू दैनिक वन्देमातरम में लिखा- ''मेरा मजहब हक परस्ती, मेरी मिल्लत कौमपरस्ती और मेरी इबादत खल्क परस्ती है, मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है मेरी सम्पत्ति मेरी कलम है, मेरा मन्दिर मेरा दिल है तथा मेरी उमंगें सदा जवान हैं'' वह बहुत ही निडर, साहसिक एवं सच्चे थे।

लाला जी ने कांगड़ा (आजकल हिमाचल प्रदेश) में अछूतोद्धार का बहुत काम किया। पाठशालाएं खोलीं, आर्यसमाज एवं गुरूकुलों की स्थापना की जहां बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती थी।

लाला जी चाहते थे कि हमारे बच्चे अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करें ताकि उनमें देश भक्ति का संस्कार बहुत दृढ़ हो सके।

लाला जी की देश भक्ति पूर्ण गतिविधियों के कारण वे अंग्रेज सरकार की आंख की किरकिरी बन गये। हिसार के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें धोखे से गिरफ्तार करके माण्डले जेल भेज दिया। वहां उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी। जिनमें से प्रमुख हैं- महान अशोक, श्री कृष्ण और उनकी शिक्षा, छत्रपति शिवाजी, इटली के देशभक्त मेजिनी एवं गैरीबाल्डी की जीवनियां। वह अंग्रेजी के अच्छे विद्वान थे परन्तु उन्होंने सभी पुस्तकें उर्दू में ही लिखीं। माण्डले जेल से छूटने के बाद उन्होंने वकालत छोड़ दी तथा पूरा समय देश सेवा के काम में लगाने लगे। 1914 में जब महायुद्ध शुरू हुआ उस समय लालाजी जापान गये हुए थे। भारत सरकार ने उन्हें भारत आने की आज्ञा नहीं दी। वे वहां से अमेरिका चले गये तथा वहां उन्होंने अमेरिका के अखबारों में लेख लिखे। देश की आजादी के लिए प्रचार किया। वहां उनकी पुस्तक "यंग इण्डिया" बहुत प्रसिद्ध हुई।

कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। थोड़े दिन बाद ही उन्हें गिरफ्तार कर पुनः जेल भेज दिया गया। जेल में उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। बाहर आकर वे पुनः स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गये। उन्होंने लाहौर में नेशनल कालेज और तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स की स्थापना की।

1928 में साइमन कमीशन का कांग्रेस ने बायकॉट किया। देशभर में इसके विरूद्ध प्रदर्शन हुए। जब यह कमीशन लाहौर पहुँचा तो लाला जी के नेतृत्व में इसका बहुत जबरदस्त विरोध हुआ। जब भीड़ बेकाबू हो गयी तो अंग्रेजों की पुलिस ने लाठियां चलानी शुरू कर दी। लाला जी सबसे आगे थे उन पर कई लाठियां पड़ी। उस समय उन्होंने गर्जना की- "मेरी छाती पर पड़ने वाली एक-एक लाठी भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत की एक-एक कील बनेगी"।

लाठियों की मार से उनकी छाती में ऐसी चोटें आई कि उसके फलस्वरूप 17 नवम्बर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई। भारत के इस वीर पुरूष की वीरगति पर सारे देश में शोक की लहर दौड़ गई परन्तु इसने क्रांतिकारियों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में और तीव्रता ला दी। धन्य हैं ऐसे महापुरूष जिन्होंने इस माँ भारती की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन होम कर दिया। लाल-बाल-पाल की क्रान्तिकारी -त्रयी में इन्हें सदा स्मरण किया जाता रहेगा। लाला लाजपत राय पंजाब के थे। बालगंगाधर तिलक महाराष्ट्र से तथा विपिन चन्द्र पाल बंगाल से थे। ये तीनों ही कांग्रेस में गर्मदल के प्रमुख नेता थे। पंजाब केसरी अर्थात पंजाब के शेर के विशेषण से इन्हें सदा स्मरण किया जाता रहेगा। ▪

सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया।

सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरितियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानो के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवनयापन के लिए बागबगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेदभाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीकाटिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जातिभेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथो पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताएँ जो संस्कार बच्चो पर डालती हैं, उसी में उन बच्चो के भविष्य के बीज होते है। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे। उस समय जातपात, ऊँच-नीच की दीवारे बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चो को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारम्भ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दवाब में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायें कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे है। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे है।

महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुम्हे क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुहारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए। महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनो से अपने सिद्धांतो व कार्यक्रमो के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआछूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नवबर सन 1890 को उनका देहावसान हो गया। ▪

कांग्रेस बनाम जनसंघ

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।

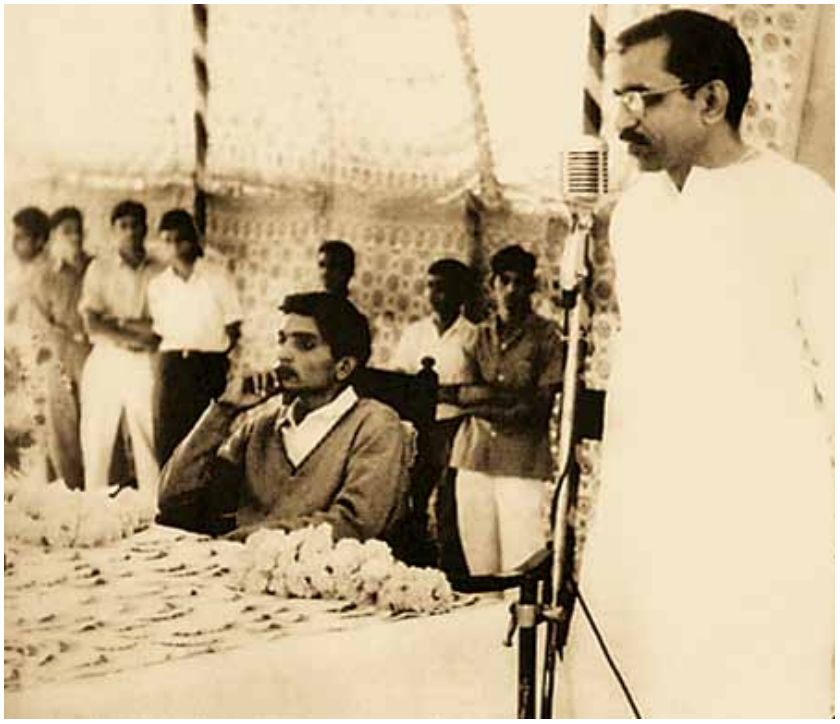

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गलगल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियों केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न वस्त्र अलय हो रहे हैं। अतः जनमन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्नभिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई मे कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार

जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलें की हैं। पहली, बिना किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थ सिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरण स्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंता युक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदलाबदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है।

हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निर्वासितों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा।

विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ▪

► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में केन्द्रीय चुनाव समिति की बैठक हुई।

► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ग्वालियर प्रवास के दौरान जनता का अभिवादन स्वीकार करते हुए।

► प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा व संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने महात्मा गाँधी जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

► प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा व संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने लाल बहादुर शास्त्री जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मध्य प्रदेश को 19000 करोड़ रूपये की विकास परियोजनाओं की सौगात दी।

► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जबलपुर यात्रा के दौरान जनता ने भारी उत्साह से स्वागत किया।

► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रघुवीर मंदिर चित्रकूट में प्रार्थना की।

► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जबलपुर में विकास कार्यों की आधारशिला रखी।

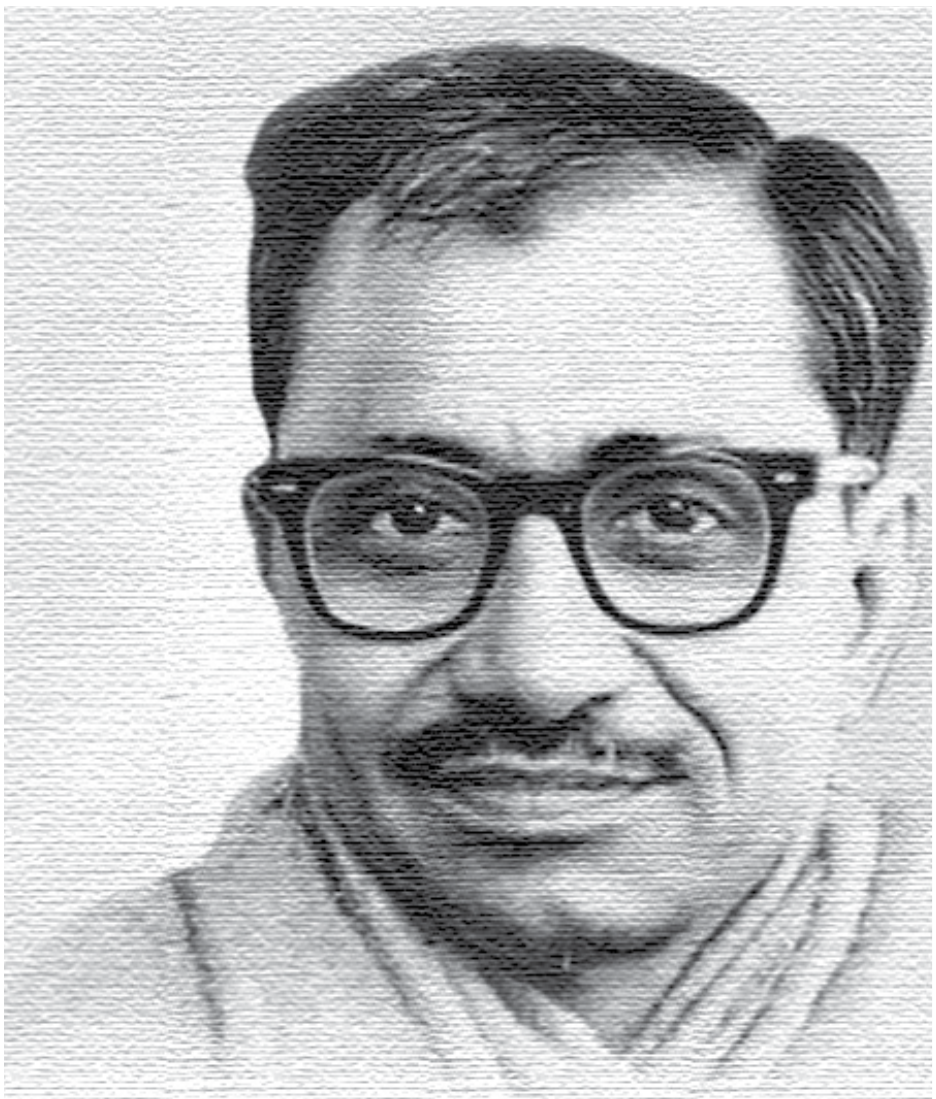

"आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति
का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर
पहुँचे हुए व्यक्ति नहीं, बल्कि सबसे नीचे
के स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा"

दीन दयाल उपाध्याय